राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रधान सम्पादक–पद्मश्री जिनविजय मुनि, पुरातत्त्वाचार्य

[सम्मान्य सञ्चालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर]

ग्रन्थाङ्क ६३

रावराजा बुधसिंह हाडा कृत

नेहतरंग

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

RAJASTHAN ORIENTAL RESEARCH INSTITUTE, JODHPUR

जोधपुर (राजस्थान)

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रधान सम्पादक—पद्मश्री जिनविजय मुनि, पुरातत्त्वाचार्य

[सम्मान्य सञ्चालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर]

ग्रन्थाङ्क ६३

रावराजा बुर्धासिंह हाडा कृत

नेहतरंग

प्रकाशक

राजस्थान राज्य संस्थापित

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

RAJASTHAN ORIENTAL RESEARCH INSTITUTE, JODHPUR

जोधपुर (राजस्थान)

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

राजस्थान राज्य द्वारा प्रकाशित

सामान्यतः अखिल भारतीय तथा विशेषतः राजस्थानदेशीय पुरातनकालीन
संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, राजस्थानी, हिन्दी आदि भाषानिबद्ध
विविध वाङ्मयप्रकाशिनी विशिष्ट ग्रन्थावलि

प्रधान सम्पादक

पद्मश्री जिनविजय मुनि, पुरातत्त्वाचार्य

[ऑनरेरि मेम्बर ऑफ जर्मन ओरिएन्टल सोसाइटी, जर्मनी]

सम्मान्य सदस्य

भाण्डारकर प्राच्यविद्या संशोधन मन्दिर, पूना; गुजरात साहित्य-सभा, अहमदाबाद;
विश्वेश्वरानन्द वैदिक शोध-संस्थान, होशियारपुर; निवृत्त सम्मान्य नियामक—
(आनरेरि डायरेक्टर), भारतीय विद्याभवन, बम्बई ।

ग्रन्थाङ्क ६३

रावराजा बुधसिंह हाड़ा कृत

नेहतरंग

प्रकाशक

राजस्थान राज्याज्ञानुसार

सञ्चालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

जोधपुर (राजस्थान)

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

रावराजा बुधसिंह हाडा कृत

नेहतरंग

श्रीरामप्रसाद दाधीच, एम. ए.
व्याख्याता (हिन्दी-विभाग)
जसवन्त कॉलेज, जोधपुर

प्रकाशनकर्त्ता
राजस्थान राज्याज्ञानुसार
सञ्चालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान
जोधपुर (राजस्थान)

विक्रमाब्द २०१८ | भारतराष्ट्रीय शकाब्द १८८३ | खिस्ताब्द १९६१
प्रथमावृत्ति १००० | | मूल्य ४.००

मुद्रक—हरिप्रसाद पारीक, साधना प्रेस, जोधपुर.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

RAJASTHAN PURATANA GRANTHAMALA

PUBLISHED BY THE GOVERNMENT OF RAJASTHAN

A series devoted to the Publication of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa, Old Rajasthani-Gujarati and Old Hindi works pertaining to India in general and Rajasthan in particular

★

GENERAL EDITOR

PADMASHREE JIN VIJAYA MUNI, PURATATTVACHARYA

Honorary Member of the German Oriental Society, Germany; Bhandarkar Oriental Research Institute, Poona; Vishveshvarananda Vaidic Research Institute, Hosiyarpur, Punjab; Gujrat Sahitya Sabha, Ahemdabad; Retired Honorary Director, Bharatiya Vidya Bhawan, Bombay; General Editor, Gujrat Puratattva Mandira Granthavali; Bharatiya Vidya Series; Singhi Jain Series etc. etc.

★ ★

NO. 63

NEHTARANG

Raoraja Budhsingh Hada of Bundi

★ ★ ★

Published

Undr the Orders of the Government of Rajasthan

By

The Dr ector, Rajasthan Prachyavidya Pratishthana

(Rajasthan Oriental Research Institute)

JODHPUR (RAJASTHAN)

V. S. 2018] *All Rights Reserved* [*1961 A.D.*

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

सञ्चालकीय वक्तव्य

प्राचीन कालमें राजस्थानके अनेक विद्याप्रेमी शासकों और अन्य समृद्ध व्यक्तियोंने विद्वानों तथा साहित्यकारोंको विशेष प्रश्रय एवं प्रोत्साहन प्रदान किया, जिसके परिणामस्वरूप राजस्थान साहित्य-क्षेत्रमें विशेष उन्नति प्राप्त कर सका है। ऐसे कुछ व्यक्तियोंने स्वयं भी साहित्यका निर्माण कर विद्वज्जगत्को अपनी साहित्यिक प्रतिभाका प्रत्यक्ष परिचय दिया है। ऐसे कवि-कोविदोंमें चौहानकुलोत्पन्न बूंदी-नरेश रावराजा बुधसिंहजी हाड़ाका नाम भी उल्लेखनीय है।

रावराजा बुधसिंहजी और इनकी काव्यकृति 'नेहतरंग' से विद्वज्जगत् अब तक प्रायः अपरिचित रहा है, क्योंकि हमारे साहित्यिक आलोचना-विषयक अनेक ग्रन्थ बहुधा बिना कड़ी जाँच-पड़ताल किये ही लिखे जाते हैं। ऐसे ग्रन्थोंमें प्रायः प्रचलित विषयोंकी पुनरावृत्ति मात्र होती है एवं अनेक महत्त्वपूर्ण साहित्यिक कृतियों और उनके कर्त्ताओंके नाम तक छूट जाते हैं।

'नेहतरंग' काव्याङ्ग-निरूपण विषयक एक विशेष कृति है। रचनाकालके केवल १ वर्ष पश्चात् संवत् १७८५में लिखित इसकी एक प्राचीन प्रति श्रीरामप्रसादजी दाधीच, एम. ए. व्याख्याता, हिन्दी-विभाग, जसवन्त कॉलेज, जोधपुरने हमें बताई तो हमने राजस्थानके राजकुलीन साहित्यकारका विशिष्ट रीति-ग्रन्थ होनेके नाते इसे 'राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला' में प्रकाशित करना सहर्ष स्वीकार कर लिया और प्राप्य प्रतियोंके आधार पर इस कृतिका सम्पादन-कार्य भी श्रीदाधीचजीको उनकी रुचि और योग्यता देखते हुए सौंप दिया। परिणामस्वरूप यह अद्यावधि अप्रकाशित कृति विद्वज्जनोंके हाथोंमें पहुँच रही है। विद्वान् सम्पादकने पाठान्तर और छन्दानुक्रमणिका देनेके साथ ही अपनी अध्ययनपूर्ण प्रस्तावनामें कृति-सम्बन्धी अनेक ज्ञातव्य प्रस्तुत किये हैं, जिनसे ग्रन्थकी उपयोगिता और भी बढ़ गई है।

'नेहतरंग' के प्रकाशन-व्ययका अर्द्धांश भारत सरकारके वैज्ञानिक और सांस्कृतिक मन्त्रालयने 'आधुनिक भारतीय भाषा-विकास-योजना' के अन्तर्गत प्रदान करना स्वीकार किया है, तदर्थ हम भारत सरकारके प्रति आभार प्रदर्शित करते हैं।

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान,
जोधपुर.
गाँधी जयन्ती (ता. २ अक्टूबर)
१९६१ ई.

मुनि जिनविजय
सम्मान्य सञ्चालक

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

जोधपुर

(Rajasthan Oriental Research Institute)

JODHPUR.

उद्देश्य

१. राजस्थान में और अन्यत्र भारतीय संस्कृति के आधारभूत संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, राजस्थानी, हिन्दी व अन्य भाषाओं में लिखित प्राचीन ग्रंथों की खोज करना तथा उन्हें प्रकाश में लाना।

२. प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थों का संग्रह कर उनके संरक्षण की व्यवस्था करना और उपयोगी ग्रन्थों को सम्बन्धित विद्वानों से सम्पादित करा कर उनके प्रकाशन की व्यवस्था करना।

३. साधारणतः भारतीय एवं मुख्यतः संस्कृत व प्राचीन राजस्थानी के अध्ययन, अन्वेषण, संशोधन हेतु अत्यावश्यक उत्तम प्रकार का सन्दर्भ पुस्तक भंडार (मुद्रित ग्रन्थालय) स्थापित करना और उसमें देश-विदेश में मुद्रित विविध विषयक अलभ्य-दुर्लभ्य सभी ग्रन्थों का यथासंभव संग्रह करना।

४. संगृहीत सामग्री से शोधकर्त्ता अध्येता विद्वानों को उनके अध्ययन और अनुसंधान में सहायता पहुँचाना।

५. राजस्थान के लोक-जीवन पर प्रकाश डालने वाले विविध विषयक लोक-गीत, सांप्रदायिक भजन, पदादिक भक्ति साहित्य एवं सामाजिक संस्कार, धार्मिक व्यवहार तथा लौकिक आचार-विचार आदि से सम्बन्धित सभी प्रकार की सामग्री की शोध, संग्रह, संरक्षण, एवं प्रकाशन करने की व्यवस्था करना।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

विषय-सूची

क्रम सं०	विषय		पृ० सं०
१.	संचालकीय वक्तव्य		
२.	सम्पादकीय भूमिका		
३.	प्रथमो तरंग		
	१. स्तुति	...	१
	२. श्री राधिकाकौं संजोग-शृंगार और वियोग-शृंगार	...	२–३
	३. नायक वर्णन	...	३–४
	४. पद्मना[न्या]दिक नायका बर्नन	...	५–६
४.	दुतियौ तरंग		
	१. दरसन	...	६–९
५.	त्रितियौ तरंग		
	१. नायका-भेद बर्नन	....	९–१८
६.	चतुर्थो तरंग		
	१. अष्ट-नायका बर्नन	...	१९–२२
७.	पंचमो तरंग		
	१. मिलन-स्थान बर्नन	...	२३–२६
८.	षष्टमो तरंग		
	१. सषीजन बर्नन	...	२६–३५
	२. सषी-कर्म कथनं	..	३५
	३. सछ्या लक्षन	...	३५–३९
	४. चेष्टा लक्षन	...	४०
	५. स्वयंदूत लक्षन	....	४०–४१
९.	सप्तमो तरंग		
	१. मान लक्षन	...	४१–४३
	२. दान लक्षन	...	४४
	३. उपाय भेद लक्षन	...	४४–४५
	४. उपेक्षा लक्षन	...	४५–४६
	५. प्रसंग—विध्वंस लक्षन	...	४६
१०.	अष्टमो तरंग		
	१. पूर्वानुराग बर्ननं	...	४७
	२. दस अवस्था नांव कथन	...	४७
	३. चिंता लक्षन	...	४८–४९
	४. गुन कथन लक्षन	...	४९–५०

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

५. श्री स्मृति लक्षन ... ५०
६. उद्वेग लक्षन ... ५०–५१
७. प्रलाप लक्षन ... ५१
९. व्याधि लक्षन ... ५२–५३
८. उन्माद लक्षन ... ५१–५२
१०. जड़ता लक्षन ... ५३
११. करुणा विरह लक्षण ... ५४
१२. प्रवास लक्षन ... ५४–५५
१३. भय-भ्रम लक्षन ... ५५
१४. निद्रा लक्षन ... ५५–५६
१५. पत्री बर्ननं ... ५६–५७
११. नवमो तरंग ... ५८–६८
१. भाव बर्ननं
२. हाव नांम ... ६०–६८
१२. दसमो तरंग
१. रस बर्ननं ... ६९–७५
१३. एकादशो तरंग ...
१. च्यारि वृत्ति कवित्त की बर्ननं ... ७५–७६
२. अनरस कबित्त बर्ननं ... ७७
३. प्रतिनीक लक्षन ... ७७
४. नीरस लक्षन ... ७७
५. बिरस रस लक्षन ... ७७
६. दुसंधांन लक्षन ... ७८
७. पातर दुष्ट लक्षन
१४. द्वादसो तरंग
१. छह रितु बर्ननं ... ७८–८०
१५. त्रियदसो तरंग
१. पिंगल मत बर्ननं ... ८१–८३
१६. चतुरदशो तरंग
१. अलंकार बर्ननं ... ८४–१००
१७. परिशिष्ट—१ छन्दानुक्रमणिका ... १०१–१२०
२ सहायक ग्रन्थ सूची ... १२१

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

ग्रन्थकार

बूंदीनरेश रावराजा बुधसिंहजी हाडा

[जन्म सं० १७५२ वि०; मृत्यु सं० १७९६ वि०]

(चित्र का ब्लाक श्री मुखवीरसिंहजी गहलोत, जोधपुर के सौजन्य से प्राप्त)

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

सम्पादकीय

राजस्थान की सांस्कृतिक और साहित्यिक धरोहर भी उतनी ही समृद्ध और गरिमामयी है जितनी इसकी वीर-परम्परा। दूसरे शब्दों में इस भाव को यों भी व्यक्त किया जा सकता है कि भारत की ऐतिहासिक और सांस्कृतिक परम्पराओं को इसका समान योगदान रहा है। यहाँ तलवार और लेखनी की साधना समानान्तर चली है। हिन्दी साहित्य के आदिकाल और मध्यकाल को जो गरिमा और सम्पन्नता इस रसभूमि के सुकृती और यशस्वी कविर्मनीषियों ने प्रदान की है, इतिहास साक्षी है कि अन्य कोई प्रदेश ऐसा नहीं कर सका। किन्तु यहाँ यह कहने में मुझे तनिक भी संकोच नहीं कि जिस प्रकार शस्य-श्यामला प्रकृति की अनुकम्पा से यह प्रान्त वंचित रहा है वहां हिन्दीभाषी विद्वानों तथा साहित्य के तथाकथित इतिहासकारों द्वारा की गई उपेक्षाओं का बोझ भी इसे कम नहीं उठाना पड़ा है। इन तथ्यों को मैं आगे लूँगा। यहाँ इतना ही संकेत करूँगा कि क्या राजस्थानी भाषा के पृथक् अस्तित्व की दृष्टि से और क्या यहाँ के साहित्यकारों के अस्तित्व की स्वीकृति की दृष्टि से—इस प्रदेश को जो न्याय और सम्मान मिलना चाहिये था वह नहीं मिला। भाषा, साहित्य, इतिहास, गवेषणा के ग्रंथ और अन्य खोज-रिपोर्टों (Search Reports) में उल्लिखित सामग्री में अनेक प्रकार की भ्रान्तियाँ यहां की डिंगल अथवा राजस्थानी भाषा और साहित्यकारों को लेकर विद्यमान हैं, किन्तु अब ज्यों-ज्यों निष्पक्ष अध्ययन और अनुसन्धान हो रहा है त्यों-त्यों सत्य उद्घाटित होने लगा है।

इस प्रदेश में साहित्य-सृजन का माध्यम दो भाषायें रही हैं—डिंगल और पिंगल। और दोनों ही में वीर, शृंगार, भक्ति (सगुण और निर्गुण), प्रेम, नीति और रीति की जो वेगमयी रस-धारायें बही हैं वे हमारी अक्षय निधि हैं। कुछ समय तक हिन्दी के विद्वानों की यह धारणा थी कि राजस्थान में मूलतः राजस्थानी अथवा डिंगल में ही साहित्य-सृजन हुआ है, किन्तु अधुनातन साहित्यिक गवेषणाओं ने यह प्रकट कर दिया कि इस प्रदेश में पिंगल में भी सृजन कम नहीं हुआ। डा० मोतीलाल मेनारिया कृत पुस्तकें, डा० सरनामसिंह शर्मा

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

में लिखी रीति-काव्य की कृतियों में रसकोश, कविवल्लभ, रसमंजरी और रस-तरंगिनी प्रसिद्ध हैं। जान के बाद रीति-काव्य लिखने की परम्परा बड़ी तीव्र अवस्था में मिलती है। राजस्थानी साहित्य के उत्तर मध्यकाल में जो वि० सं०-१७००–१९०० तक माना जाता है अक्षुण्ण रूप से रीति-ग्रंथ लिखे जाते रहे। विद्वानों के मतानुसार पिंगल में रीति-ग्रंथ लिखने वाले चालीस से अधिक कवि-आचार्य हुये हैं और उनके ६० से अधिक रीति-ग्रंथ आज प्राप्त हैं। महाराजा जसवन्तसिंह, कुलपति मिश्र, सोमनाथ, दलपतिराय-वंशीधर, कविराजा मुरारीदान, मंडन भट्ट, पद्माकर आदि ऐसे कवि-आचार्य इस प्रदेश में हुए हैं जिनकी कृतियों ने न केवल पिंगल को ही गौरवान्वित किया है अपितु सम्पूर्ण हिन्दी वाङ्मय इनसे समृद्ध है।[1]

प्रस्तुत पुस्तक के रचयिता बूंदी के हाडा रावराजा बुधसिंह इन्हीं कवि-आचार्यों में अपना प्रमुख स्थान रखते हैं। यद्यपि संख्या की दृष्टि से इन्होंने कोई विपुल काव्य-निर्माण नहीं किया। प्रस्तुत कृति 'नेहतरंग' के अतिरिक्त इनके द्वारा रचित किसी अन्य कृति का प्रमाण नहीं मिलता। हां, स्फुट छन्द इन्होंने अवश्य लिखे।[2] किन्तु पिंगल के रीति-काव्य में इनके नाम को अमर करने के लिये यह एक ही कृति पर्याप्त है, ऐसी मेरी मान्यता है।

नेहतरंग—

मैंने 'नेहतरंग' के सम्बन्ध में पहली बार डा० मोतीलाल मेनारिया की पुस्तकों (राजस्थान का पिंगल साहित्य और राजस्थानी भाषा और साहित्य) से सूचना प्राप्त की। अब तक यह अप्रकाशित कृति रही है अतः बाजार में इसकी उपलब्धि का तो प्रश्न ही नहीं था। फिर संयोग ऐसा हुआ कि मेरे एक कविता-प्रेमी विद्यार्थी श्री सीताराम सोनी (प्रथम वर्ष, बी० ए०) को इसकी एक प्रति कहीं से प्राप्त हुई। वे इसे मेरे पास ले आये। इसके अवलोकन पर मुझे लगा कि इसका प्रकाशन होना चाहिये और तब मैंने इसे राजस्थान प्राच्य-विद्या प्रतिष्ठान के उपसंचालक विद्वद्वर श्रीयुत् गोपालनारायणजी बहुरा को दिखाया। पुस्तक का वर्ण्यविषय, प्रतिपादन शैली, कर्ता की राजस्थानीयता और प्रति की रचनाकाल से निकटता को देख कर उन्होंने भी इसे उपादेय पाया और मुझे उन्होंने इसके सम्पादन का भार सौंप दिया।

---

[1] राजस्थान का पिंगल साहित्य।—डा० मेनारिया।

[2] राजस्थान के हिन्दी साहित्यकार।—हिन्दी साहित्य परिषद्, जयपुर।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

इसी सम्पादन के दौरान में मुझे इस पुस्तक की अन्य ४-५ प्रतियों को देखने का अवसर भी मिला। डा० मोतीलाल मेनारिया के मतानुसार राजस्थान के विभिन्न स्थानों पर इसकी ५० से अधिक प्रतियाँ मौजूद हैं।[1] प्रयास करने पर भी मैं ४-५ प्रतियों से अधिक का पता नहीं लगा सका। अपने इस सम्पादन में मैंने अपनी प्रति [क] के अतिरिक्त दो अन्य प्रतियों का उपयोग किया है। उनका संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है—

प्रति [ख]—यह प्रति मुझे आदरणीय श्री अगरचन्द नाहटा से प्राप्त हुई। इसका लिपिकाल ज्येष्ठ कृष्णा १, वि० सं० १९०१ है। इस प्रति के अनुसार 'नेहतरंग' का रचना काल वि० सं० १७८४ है—

सतरह सै चौरासिया, नवमी तिथि शनिवार।
शुकल पक्ष भादों प्रगट, रच्यौ ग्रंथ सुखसार॥

इसमें कुल ५३६ छन्द हैं और सम्पूर्ण विषय सामग्री १४ तरंगों में विभक्त की गई है।

प्रति [ग]—यह प्रति मुझे राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर की जयपुर शाखा में सुरक्षित स्वर्गीय पुरोहित हरिनारायणजी बी० ए० के विद्याभूषण ग्रन्थ-संग्रह से प्राप्त हुई। इसमें भी छन्द संख्या ५३६ ही है और इसका लिपिकाल वि० सं० १८०२ है।

डा० मोतीलाल मेनारिया ने अपनी पुस्तक 'राजस्थान का पिंगल साहित्य' में नेहतरंग का संक्षिप्त परिचय दिया है। इस प्रति में उन्होंने छन्द संख्या ४४६ ही बताई है और उसका लिपिकाल वि० सं० १७९७ माना है। मेरे मित्र प्रो० नरेन्द्र भानावत (राजकीय डिग्री कॉलेज, बूंदी) से मुझे एक और भी प्रति की सूचना मिली। यह प्रति बूंदी निवासी श्री कांतिचन्द्र भारद्वाज के निजी संग्रहालय में है। इस प्रति का लिपिकाल श्रावण कृष्णा त्रयोदशी गुरुवार वि० सं० १८११ है।

उपरोक्त सभी प्रतियों में लिपिकाल की दृष्टि से मेरी अपनी प्रति सबसे प्राचीन है। इसका लिपिकाल मिति आषाढ़ कृष्णा ७ वि० सं० १७८५ है। पुस्तक की रचना के करीब १० मास पश्चात् ही यह प्रति तैयार करली गई, ऐसा मेरी प्रति के अन्त में दी गई पुष्पिका से प्रमाणित होता है। अस्तु, यह प्रति अधिक आधिकारिक भी मानी जानी चाहिये। इसकी लिपि और वर्तनी भी

---

[1] इस विषय में मुझे लिखा गया उनका व्यक्तिगत पत्र।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

अन्य प्रतियों से अधिक सुन्दर, स्पष्ट और शुद्ध है। अधिक काल की हो जाने के कारण जीर्णता इसमें अवश्य आ गई और १-२ पृष्ठ भी इसमें नहीं मिले। कई स्थलों पर कीटों ने भी इसे क्षत-विक्षत कर रखा है। अतः [ख] और [ग] प्रतियों से छन्दों की पूर्ण संख्या देने और पाठान्तर प्रस्तुत करने में मैंने सहायता ली है।

'नेहतरंग' एक रीतिकाव्य है। इसका वर्ण्य-विषय रस, नायक-नायिका, हाव-भाव, छन्द और अलंकार है। शास्त्रीय भाषा में इसे 'अनेकांग निरूपक' कृति कहेंगे। पहले एक छन्द में किसी एक काव्यांग के लक्षण दिये गये हैं और फिर नीचे किसी दूसरे छन्द में उसका उदाहरण दिया गया है। कृति के सम्पूर्ण वर्ण्य-विषय को कवि-आचार्य रावराजा बुधसिंह ने १४ तरंगों में विभक्त किया है। वह इस प्रकार है—

प्रथम तरंग	अनुकूलादि नायक पद्मन्यादि नायिका-निरूपण।
दूसरी ,,	चतुर विधि दरसन निरूपण।
तीसरी ,,	नायका मुग्धा-मध्या-प्रोढ़ा-धीरादि भेद निरूपण।
चौथी ,,	अष्ट नायिका निरूपण।
पांचवीं ,,	मिलन-स्थान निरूपण।
छठी ,,	सखीजन कर्मचेष्टा स्वयंदूती निरूपण।
सातवीं ,,	मान-मोचन विधि निरूपण।
आठवीं ,,	प्रवास विरह निरूपण।
नवीं ,,	भाव हाव निरूपण।
दसवीं ,,	रस निरूपण।
ग्यारहवीं ,,	चतुरविधि कवित्त वृत्ति पंचविधि अनरस कवित्त निरूपण।
बारहवीं ,,	छह ऋतु निरूपण।
तेरहवीं ,,	पिंगल मत छन्द निरूपण।
चौदहवीं ,,	अलंकार निरूपण।

जैसा कि मैंने ऊपर व्यक्त किया है रावराजा बुधसिंह पिंगल के कवि-आचार्यों में अपना विशिष्ट स्थान रखते हैं। अनुवर्ती परिच्छेदों में अपनी मति के अनुसार मैं इनकी काव्यकला का अनुशीलन प्रस्तुत करने की चेष्टा करूँगा।

आचार्य बुधसिंह

बूंदी का राज-परिवार शताब्दियों से साहित्यानुरागी रहा है। बूंदी के नरेशों ने दो प्रकार से साहित्य की सेवा की है—एक, अपनी सृजन-प्रतिभा से

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

साहित्य का कोश अभिवृद्ध करके और दूसरे कवियों को राज्याश्रय देकर।[१] रावराजा बुधसिंह के अतिरिक्त राव विष्णुसिंह हाड़ा (वि० सं० १८३०) और राव हनुमन्तसिंह हाड़ा (वि० सं० १८८२) ने डिंगल और पिंगल दोनों में उच्चकोटि का साहित्य सृजन किया। कहते हैं राव विष्णुसिंह ने वीर, भक्ति और शृंगार भावना के दस हजार से भी अधिक छन्द बनाये।[२] इस राज-परिवार में डिंगल, पिंगल और व्रजभाषा के अनेक लब्ध-प्रतिष्ठ कवियों को आश्रय भी प्राप्त हुआ। डूंगरसी, पद्माकर, मतिराम, चंडीदान, भोजमिश्र, बदनजी, निश्चलदास, सूरजमल मिश्रण, मुरारीदान और गुलाबजी राव जैसे कवि और आचार्य बूंदी के राज्याश्रय में रहे हैं। संस्कृत और व्रज-भाषा के अत्यन्त ख्यातिप्राप्त कवि श्री कृष्ण भट्ट और भोज मिश्र स्वयं रावराजा बुधसिंह के कई वर्षों तक आश्रय में रहे।[३] बूंदी के राज्य परिवार की साहित्य-परम्परा जब यह रही है तो उसमें रावराजा बुधसिंह का होना कौनसे आश्चर्य की बात है ?

बुधसिंह का सांगोपांग साहित्यिक जीवन-वृत्त आज भी प्राप्त नहीं है। हिन्दी साहित्य के प्राचीन इतिहास-ग्रंथों[४] तथा हस्तलिखित ग्रंथों की खोज-रिपोर्टों[५] में इनके बारे में जो भी सामग्री प्राप्त है वह इतनी अपर्याप्त और भ्रान्तिपूर्ण है कि इनके साहित्यिक व्यक्तित्व के सम्बन्ध में निश्चित धारणा बनाना कठिन है। कहीं पर इन्हें बुध, कहीं पर बुधराव और कहीं पर बुधजन लिखा गया है। श्री श्यामसुन्दरदास बी० ए० द्वारा सम्पादित तथा काशी

---

१ (क) राजस्थान का पिंगल साहित्य, राजस्थानी भाषा और साहित्य।—डा० मेनारिया।
(ख) राजस्थानी साहित्य, प्रगति और परम्परा।—डा० अरुण।
(ग) राजस्थान के हिन्दी साहित्यकार। हिन्दी साहित्य परिषद्, जयपुर।

२ राजस्थान का पिंगल साहित्य।—डा० मेनारिया, पृ० सं० १६०।

३ ईश्वर-विलास (भूमिका)।—पं० मथुरानाथ भट्ट।
रा० प्रा० वि० प्रतिष्ठान, जोधपुर द्वारा प्रकाशित। पृ० सं० ४१-४२।

४ (१) मिश्रबन्धु विनोद। भाग ४, पृ० सं० ५३-५४।
(२) हिन्दी साहित्य का प्रथम इतिहास।—डा० ग्रियर्सन, पृ० सं० ११६।
(३) शिवसिंह सरोज।—ठा० शिवसिंह।

५ (१) राजस्थान में हिन्दी के हस्तलिखित ग्रंथों की खोज।—श्री अगरचन्द नाहटा।
(२) हस्तलिखित हिन्दी पुस्तकों का संक्षिप्त विवरण, प्रथम भाग।
सम्पादक—श्यामसुन्दरदास, पृ० १०२।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा प्रकाशित खोज रिपोर्ट[1] में तो इनकी नेहतरंग पुस्तकं को किसी चन्द्रदास कवि द्वारा रचित बताया गया है। यहाँ तक कि रावराजा बुधसिंह द्वारा रचित 'नेहतरंग' के १-२ छन्द भी[2] चन्द्रदास की नेहतरंग के नाम पर दिये गये हैं। यह भ्रान्ति संभवतः पद्य की तीसरी पंक्ति में 'चन्द्रहास' को 'चन्द्रदास' पढ़ लेने से हुई है। इससे ठीक विपरीत 'राजस्थान के हिन्दी साहित्यकार' (हिन्दी साहित्य सम्मेलन के जयपुर अधिवेशन के अवसर पर प्रकाशित) पुस्तक में बुधसिंह की 'नेहतरंग' को 'नेहनिधि' लिखा गया है।

जब परिस्थितियाँ यह रही हैं तो किस प्रकार कवि-आचार्य का समग्र साहित्यिक जीवन-वृत्त प्रस्तुत किया जाय ? हिन्दी साहित्य के आधुनिक और सर्वथा मान्यता-प्राप्त इतिहास ग्रंथों में इनका नामोल्लेख भी नहीं हुआ। दुर्भाग्य की पराकाष्ठा तब होती है जब रीतिकाल और रीतिकाव्य के अधिकारी पण्डित डा० नगेन्द्र द्वारा रीतिकाल और रीतिकाव्य पर लिखी पुस्तकें तथा उनके द्वारा सम्पादित काशी नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा सद्यः प्रकाशित इतिहास ग्रंथ 'हिन्दी साहित्य का बृहत् इतिहास' (षष्ठ भाग) भी बुधसिंहजी की उपेक्षा करते हैं।[3] बहिःसाक्ष्य की यह अवस्था है और अन्तःसाक्ष्य के रूप में कवि ने अपने बारे में कहीं एक भी पंक्ति नहीं लिखी।

---

[1] The Second Terrinial Report on the Search for Hindi Manuscripts (1906, 1907, 1908) Note No. 38, Page No. 70, 71, 72.

[2] निम्नांकित छन्द चन्द्रदास कृत नेहतरंग में भी बताये गये हैं जबकि यह श्री बुधसिंहजी की नेहतरंग में विद्यमान हैं—

(१) मदन-मोदकर- बदन सदन वेताल-जाल-व्रत।
भक्त-भीत-भंजन अनेक जिन असुर-बंस-हृत।
चन्द्रहास कर चंड चंडमुंडादि-रुहिरमय।
अनलझालजुत भाल लाललोचन बिसाल जय।
जय जय अचित गुन-गान-अगम, आत्मसुख चैतन्यमय।
जय दुरतिहरण दुर्गा जननि, राजति नवरस रूपमय॥

(२) काजर के षरसान चढ़ी जु बढ़ी अंखियां भृकुटी चढ़ि बाढ़ी।
गात गुराई के रूप भईं सु करी चढ़ि लूटि नितंबनि चाढ़ी।
आइ अचानक दीठि वरी, सु वही मग कंज कलिन्दि के ठाढ़ी।
चंपकसी किधौ चन्द्रिकासी, मनों चन्द्रते चीर चीराकसी काढ़ी॥

पृ० सं० ७०, ७१, ७२।

[3] रीतिकाव्य की भूमिका।—डा० नगेन्द्र।
देव और उनकी कविता।—डा० नगेन्द्र।
हिन्दी साहित्य का वृहत् इतिहास (षष्ठ भाग)।—डा० नगेन्द्र, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

अस्तु जो कुछ सामग्री रावराजा बुधसिंह के सम्बन्ध में प्राप्त है वह उनके इतिहास-पुरुष और योद्धा जीवन के सम्बन्ध की है तथा राजस्थान के इतिहास पर लिखी पुस्तकों में उपलब्ध होती है। हमें भी परिणामस्वरूप इनके जीवन-वृत्त के लिये इतिहास-ग्रंथों[1] का ही आश्रय लेना पड़ा है।

रावराजा बुधसिंह का जन्म वि.सं. १७५२ में बूंदी में ही हुआ। इनके जन्म और मृत्यु संवत् को लेकर इतिहासकारों में कोई विवाद नहीं है। यह राव अनिरुद्धसिंह के जेष्ठ पुत्र थे। नीचे दिए गए बूंदी राज्य के वंशवृक्ष से यह स्पष्ट है—

बून्दी राज्य का वंश वृक्ष

(१) राव देवसिंह
(२) समरसिंह
(३) नरपाल
(४) हम्मीर
(५) बरसिंह (वीरसिंह)
(६) बैरीसाल
(७) भाणदेव (भांडा)

(८) राव नारायणदास	राव नरबद
(९) राव सूरजमल	(११) राव अर्जुन
(१०) सुरतान	(१२) रावराजा अर्जुन
राव दूदा	(१३) भोज

१ (१) राजपूताने का इतिहास (गौ० ही० ओझा)
(२) वीर विनोद (कविराजा श्यामलदास)
(३) दि एनल्स ऐण्ड एन्टीक्विटीज ऑव राजस्थान (टॉड)
(४) पूर्व आधुनिक राजस्थान (डा० रघुवीरसिंह)
(५) बूंदी राज्य का इतिहास (जगदीशसिंह गहलोत)
(६) वांकीदास री ख्यात (नरोत्तम स्वामी)

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

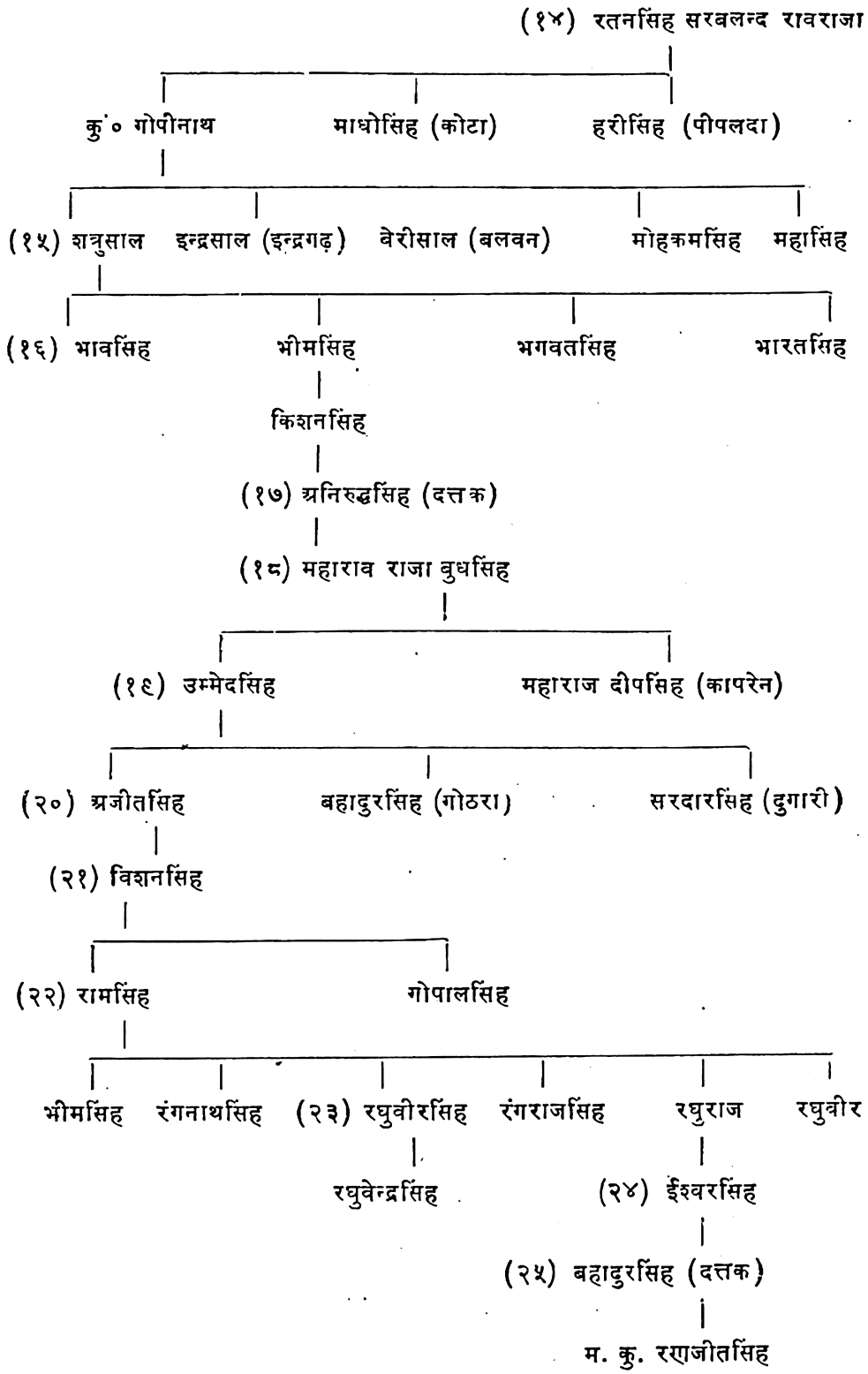

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

जोधसिंह, अमरसिंह और विजयसिंह रावराजा बुधसिंह के छोटे भाई थे। अपने पिता की मृत्यु के पश्चात् केवल १० वर्ष की आयु में ही यह बूंदी के राजसिंहासन पर आसीन हुये। उस समय दिल्ली के तख्त पर औरंगजेब आसीन था। राजस्थान की समस्त रियासतों ने मुगल-शासन का प्रभुत्व स्वीकार कर लिया था। बूंदी रियासत भी कोई अपवाद नहीं थी। बूंदी के हाड़ा-नरेशों पर तो औरंगजेब की विशेष कृपा थी। बहुत कम आयु में ही यह औरंग-जेब की इच्छानुसार शाहजादे बहादुरशाह आलम के साथ काबुल में रहने लग गये थे। यह बहुत ही स्वाभिमानी थे और हाड़ावंश का पवित्र रक्त इनकी शिराओं में प्रवाहित था। कहते हैं, एक बार काबुल में किसी मुसलमान सरदार ने इन्हें अनुचित वचन कह दिये थे। इन्होंने उसी स्थल पर कटारी से उसका अन्त कर दिया।

औरंगजेब उन दिनों अस्वस्थ था और दक्षिण में औरंगाबाद में विश्राम कर रहा था। उसका अन्तकाल निकट देख कर अधिकारियों ने उससे निवेदन किया कि वह अपना कोई उत्तराधिकारी मनोनीत कर दे। औरंगजेब ने उत्तर दिया—"यह खुदा ताला के हाथ में है। उसकी इच्छा है कि बहादुरशाह आलम तख्त पर बैठे[1]।" किन्तु औरंगजेब की मृत्यु के पश्चात् उसके लड़कों में तख्त के लिए झगड़ा हुआ और आजम, जो औरंगजेब का सब से छोटा लड़का था, अपनी षड़यंत्रकारी प्रवृत्ति और नीचता में सफल हो कर तख्त पर बैठ गया। उसने बूंदी सूचना भेजी कि यदि बूंदी की रक्षा चाहते हो तो अपनी सेना लेकर दिल्ली चले आओ। उस समय राव बुधसिंह तो काबुल में थे, परिणामतः आजम ने कोटा के राव रामसिंह को बूंदी का राज्य सौंप दिया। उसे महाराव की पदवी से भी विभूषित किया।

बुधसिंहजी के जीवन में उस समय एक और दुखद घटना घटित हुई। उनके छोटे भाई जोधसिंह जो इतिहास में एक शूरवीर, साहसी और पराक्रमी के रूप में उल्लिखित हैं, का एक दुर्घटना में अचानक देहान्त हो गया। वे गणगौर के त्यौहार पर अपनी पत्नी सहित जैतसागर (बूँदी का एक सरोवर) में नौकानयन कर रहे थे। किसी उन्मत्त हाथी ने इनकी नौका उलट दी और वे अपनी पत्नी-

---

१ दि एनल्स एण्ड एन्टीक्विटीज ऑव राजस्थान।

—टॉड। पृ० सं० ३६०, ६१, ६२, ६३, ६४।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

सहित डूब कर स्वर्गवासी हो गये।[1] अपने भाई के इस अनायास दुखद अन्त ने बुधसिंहजी को बड़ा गहरा आघात पहुँचाया। आलम ने इन्हें बूंदी जाकर अपने मृत भाई के अन्तिम संस्कार करने के लिए कहा, किन्तु तब आजम बहादुरशाह आलम को युद्ध के लिए ललकार चुका था। परिस्थिति बड़ी नाजुक थी। बुधसिंहजी में बहादुरशाह आलम के प्रति अटूट विश्वास था। सच्चा राजपूत यों भी कभी विश्वासघात नहीं करता। बुधसिंहजी ने अपनी इस क्षति की मर्मान्तिक पीड़ा को भुला कर एक योद्धा के स्वर में उत्तर दिया "मेरा कर्तव्य इस समय बूंदी के लिये मेरा आह्वान नहीं कर रहा, अपितु धौलपुर की रण-स्थली में अपने स्वामी की सेवा करने का आह्वान कर रहा है—उस धौलपुर की भूमि में जो अनेक युद्धों के लिये इतिहास में प्रसिद्ध है और अपने कर्तव्य के प्रदर्शन में जहाँ अनेक वीरों ने अपने प्राणों की आहुतियाँ देकर उस भूमि को अपनी स्मृतियों का एक तीर्थस्थल बना दिया है[2]।"

यहाँ यह स्मरण रखना है कि तब बुधसिंहजी की आयु केवल १२ वर्ष की थी। आलम इस वीरतापूर्ण उत्तर को सुन कर बहुत प्रसन्न हुआ। बुधसिंहजी ने इस अवसर पर यह भी कहा, "इसी रणभूमि में मेरे पूर्वज शत्रुसाल ने वीरगति प्राप्त की है। मैं उनकी कीर्ति को अक्षय करना चाहता हूँ। मुझे विश्वास है कि भगवान् की कृपा से विजयश्री हमारे हाथ लगेगी।[3]"

अन्ततः धौलपुर के निकट 'जाजोव' की युद्धभूमि पर आजम और आलम की सेनाएँ तख्त के उत्तराधिकार का निर्णय करने के लिये एकत्र हुईं। आलम के पक्ष में जयपुर, जोधपुर और कोटा की सेनाएँ थीं और आजम की सहायता के लिये कोटा, दतिया और दक्खन से सेनाएँ आईं। आजम का पुत्र बेदरबख्त भी अपने पिता के साथ था।

जेम्स टॉड ने अपने इतिहास ग्रंथ के Annals of Haravati (Bundi) अध्याय में लिखा है कि यह युद्ध बड़ा रोमांचकारी था। इस युद्ध में राजपूताने के राजाओं का पारस्परिक वैमनस्य और उनके चारित्रिक पतन का प्रदर्शन भी

---

१ बूंदी राज्य का इतिहास (श्री जगदीशसिंह गहलोत)।—पृ० सं० ७८।
दि एनल्स एण्ड एन्टीक्विटीज ऑव राजस्थान। टॉड। पृ० सं० ३९२, ९३।
[इसी घटना के फलस्वरूप राजस्थान की यह कहावत प्रचलित हुई—
"हाडो ले डूब्यो गणगौर"।]

२ दि एनल्स एण्ड एन्टीक्विटीज ऑव राजस्थान। टॉड।

३ ,, ,,।—पृ० सं० ३९३।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

हुआ। क्षुद्र प्रलोभन में पड़ कर राजा लोग किस प्रकार न्याय और मानवीय मूल्यों को भूल जाते थे—यह युद्ध इसका साक्षी है।

कोटा के राजा रामसिंह औरंगजेब की स्मृति तथा आलम के साथ विश्वासघात कर इस युद्ध में आजम की ओर से लड़ रहे थे। इन्होंने बुधसिंहजी के पास एक सूचना इस आशय की भेजी कि तुम आलम का साथ छोड़ कर आजम के पक्ष में आ जाओ अन्यथा तुम्हें बहुत हानि उठानी पड़ेगी। वीर बुधसिंहजी ने अपने उच्च चरित्र के अनुकूल बहुत उपयुक्त उत्तर भिजवाया, "मैं कायर नहीं हूँ। जिस युद्ध-भूमि पर मेरे पूर्वजों ने वीरगति प्राप्त कर हाड़ा वंश की कीर्ति को अक्षय रखा है, उस स्थान पर मैं अपने मित्र का साथ छोड़ अपनी कुल-कीर्ति को कलंकित करना नहीं चाहता एक वीर का यह धर्म नहीं है।"[1]

युद्ध हुआ—बहुत ही विकट। बुधसिंहजी ने इस युद्ध में जिस वीरता का प्रदर्शन किया उसका उल्लेख प्रसिद्ध कवि दूलह ने एक छन्द में इस प्रकार किया है—

जुद्ध जाजऊ के बुद्ध ये सक्रुध उध,
आजम के महावीर काटि डारे नजासे से।
हेक कवि 'दूलह' समुद्र बढ़े श्रोनित के,
जुग्गिन परत फिरैं जंबुक अजासे से॥
एक लीन्हे सीस खाय, वेष ईस एकन को,
एकन को उपमा निहारी मनु उदासे से।
अध फरे फैलि फैलि कर में विराजे मानों,
माथे सुभट्टनके तरासे तरवूजा से॥

एक दूसरे कवि रूपसहाय ने जो सम्भवतः बूंदी के ही थे, इस युद्ध में दिखाई गई बुधसिंहजी की वीरता का वर्णन इस प्रकार किया है—

जाड़ीसी में पकरि हजारी मारों हांक हांक,
देखोजी तमासो वीर बूंदी के दीवान को।
बारैंही वरस के बजाय लोह छोह कियो,
हाड़ा चहुवान पृथ्वीराय के उनमान को॥
कहै 'रूपसहाय' जाकों आलम सलाम करे,
देखत तमासो रथ रुक गयो भान को।

---

१ दि एनल्स एण्ड ऐंटीक्विटीज ऑव राजस्थान। टॉड। पृ० सं० ३६१, ६२, ६३, ६४।
बूंदी राज्य का इतिहास। श्री जगदीशसिंह गहलोत।—पृ० सं० ७८।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

याही विधि अनर अमानो राव बुधसिंह,
खंजर सो फारि डारो पिंजर पठान को ।।
× ×
रहत अछक्क पै मिटै न धक पीवन की,
निपट जुनागी डर काहू के डरै नहीं ।
भोजन बनाये नित चोखे खान खानन के,
श्रोनित पचावे तऊ उदर भरै नहीं ।।
उगलित आसो सोऊ शुकल समर बीच,
राजे राव बुधकर विमुख परै नहीं ।
तेग या तिहारी मतवारी की अचक जौलौं,
... ... गजराजन को गजक करै नहीं ।।

उपरोक्त छंद बुधसिंहजी के वीर चरित्र पर पूर्ण प्रकाश डालते हैं । निदान आजम की सेनायें रणखेत रहीं । कोटा के राव रामसिंह और दतिया के राजा दलपत भी इस युद्ध में वीरगति को प्राप्त कर गये । आजम का पुत्र भी बुधसिंहजी की तीक्ष्ण तलवार के घाट उतर गया । आलम का विजयलक्ष्मी ने वरण किया और वह दिल्ली के तख्त पर आसीन हुआ । यह सफलता अकेले बुधसिंहजी के भुज-बल का प्रमाण थी—सभी इतिहास ग्रंथ इसके साक्षी हैं ।

बुधसिंहजी की इस वीरता और वफादारी पर आलम का प्रसन्न होना स्वाभाविक था । उसने इन्हें महाराव राजा की पदवी से विभूषित कर ५४ परगने भेंट किये । कोटा भी उनमें से एक था । बुधसिंहजी ने बूंदी के सरदारों को यह आदेश दिया कि वे कोटा पर अपना अधिकार करलें । आज्ञानुसार मोकमसिंह, जोगीराम आदि ने कोटा पर आक्रमण किया किन्तु वे सफल नहीं हुये । कोटा के राव भीमसिंहजी ने कोटा बचा लिया और बूंदी और कोटा की शत्रुता और भी प्रगाढ़ हो गई ।

बुधसिंहजी के जीवन में और भी अनेक दुखद घटनायें घटीं । बहादुरशाह आलम की सन् १७१२ में मृत्यु हो गई । यह घटना भी इनके लिये महान् कष्टदायी थी । अपने परम मित्र आलम का अभाव इन्हें जीवन भर खलता रहा । आलम की मृत्यु के पश्चात् फरुखसायर तख्त पर बैठा, किन्तु बुधसिंहजी राजगद्दी समारोह में सम्मिलित नहीं हुए । इस पर बादशाह बहुत नाराज हुए और उन्होंने कोटा के महाराव को बूंदी का राज्य दे दिया । यह घटना भी बड़ी पीड़क थी । बुधसिंहजी को अपना राज्य पुनः प्राप्त करने का शीघ्र ही अवसर मिला । फरुखसायर और उसके प्रधान मंत्री सैय्यद बन्धुओं में अनबन हो गई । सैय्यद बन्धु महाराव भीमसिंह से मिल कर बादशाह की हत्या का षड़यंत्र रच

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

रहे थे। बुधसिंहजी ने तब बादशाह का साथ दिया और उन्हें बादशाह ने प्रसन्न कर बूंदी का राज्य दे दिया।

फरुखसायर और सैय्यद बन्धुओं में जो अनबन प्रारम्भ हुई थी, उसका अन्त आखिर फरुखसायर की मौत के साथ हुआ। अब बूंदी नरेश बुधसिंह और आमेर नरेश सवाई जयसिंह का दिल्ली के शाही दरबार में प्रभाव नहीं रहा। सैय्यद बन्धु भी इन्हें प्रभावहीन करना चाहते थे। सैय्यद बन्धुओं ने महाराव भीमसिंह को बूंदी का पुनः अधिकार दिलवा दिया। जब तक भीमसिंह जीवित रहे तब तक बूंदी पर कोटा का ही अधिकार रहा। राव बुधसिंहजी अपने ससुराल आमेर में सब ओर से निराश होकर रहने लगे।

भीमसिंहजी की मृत्यु के पश्चात् अपने साले सवाई जयसिंह की सहायता से उन्होंने पुनः बूंदी पर अधिकार कर लिया। तभी एक और दुखद घटना घटी[1], जिसने साले और बहनोई के स्नेह-सूत्रों में स्थायी व्यवधान पैदा कर दिया।

बुधसिंहजी ने कुल चार विवाह किये थे (उदयपुर, जयपुर, बेगूँ (मेवाड़) और भिणाय (अजमेर)। इनका प्रथम विवाह महाराजा सवाई जयसिंह की बहिन अमरकुँवरी के साथ हुआ था। यद्यपि अमरकुँवरी की मँगनी पहले बहादुरशाह से हुई थी किन्तु बादशाह ने प्रसन्न होकर अपने मित्र बुधसिंहजी से इसका विवाह करा दिया। इस कछवाही रानी के कोई सन्तान नहीं थी। बेगूं की चूंडावत रानी से इनके दो राजकुमार थे अतः कछवाही रानी बड़ी अप्रसन्न रहती थी और ईर्ष्या की अग्नि में जलती रहती थी।

कुछ इतिहास ग्रंथों में ऐसा भी उल्लेख मिलता है कि नित्यनाथ नामक किसी कनफटे जोगी के उपदेश तथा पुरोहित गजमुख की प्रेरणा से बुधसिंहजी वाममार्गी बन गये थे। कछवाही रानी क्योंकि वैष्णव धर्मानुयायिनी थी, अतः उसे यह सब बुरा लगा। उसने एक षड़यंत्र रचा। संभव है यह षड़यंत्र न होकर सत्य भी हो। उसके गर्भ से एक पुत्र उत्पन्न हुआ और उसने यह कहा— यह बुधसिंहजी का अंश है। इस पर बुधसिंहजी ने उसका बड़ा अपमान किया।

सवाई जयसिंह अपना और अपनी बहिन का अपमान कैसे सहन करते? बूंदी पर अधिकार के लिये पुनः युद्ध हुआ। जयसिंह की सेनाओं को सफलता मिली। बूंदी फिर बुधसिंहजी के हाथ से चली गई।

---

१ (१) बूंदी राज्य का इतिहास, श्री गहलोत। पृ० सं० ८०।
(२) दि एनल्स एण्ड ऐंटीक्विटीज ऑव राजस्थान, टॉड। पृ० सं० ३९३।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

बुधसिंहजी के हृदय पर इन घटनाओं का बड़ा गहरा असर हुआ। एक प्रकार की उपेक्षा और वैराग्य-प्रवृत्ति का उनमें उदय होने लगा—अनन्त निराशा उनमें क्रियाशील हो उठी। किन्तु राजपूत का शौर्य्य और साहस उनमें समाप्त नहीं हुआ। परिस्थितियों से वे यों परास्त नहीं हुये और उन्होंने अन्यायी के समक्ष, चाहे वह उनका रिश्तेदार भी था, कभी मस्तक नहीं झुकाया।

वे अब अपने ससुराल बेगूं में रहने लगे थे। सवाई जयसिंह ने करवड़ के सरदार सालमसिंह के पुत्र दलेलसिंह को वि० सं० १७८६ में बूंदी की राज्यगद्दी सौंप दी। अपने सम्बन्धों को प्रगाढ़ करने के लिये अपनी पुत्री का विवाह भी उनके साथ कर दिया।

बुधसिंहजी अन्त तक बूंदी पर अपना अधिकार बनाये रखने के लिये सक्रिय रहे। उनकी चूंडावत रानी ने भी उनकी सहायता की।

इतिहास में ऐसा प्रमाण मिलता है कि राजस्थान में मराठों का सर्व प्रथम प्रवेश बूंदी की प्रेरणा से ही हुआ। इसके लिये कौन उत्तारदायी है? क्या बुधसिंहजी? क्या उनकी चूडावत रानी? उत्तर स्पष्ट है—राजस्थान की तत्कालीन कुटिल राजनीति। दलेलसिंह के भाई प्रतापसिंह, जो अपने भाई से क्रुद्ध था, के निवेदन और प्रेरणा पर, मल्हार राव होल्कर तथा राघोजी सिन्धिया की सेनाओं ने बूंदी पर आक्रमण किया और बूंदी पुनः जयपुर के हाथ से चली गई। किन्तु मराठों के जाने के पश्चात् पुनः सवाई जयसिंह की सेनाओं ने बूंदी पर आक्रमण कर दलेलसिंह को राजसिंहासन पर बैठा दिया।

उपरोक्त सारा घटना-क्रम यह सिद्ध करता है कि बुधसिंहजी का जीवन कभी शान्ति और विश्राम का नहीं रहा। जीवन के अन्तिम १० वर्ष वे अपने ससुराल बेगूं में ही रहे। इनके साले रावत देवीसिंहजी ने इनकी बहुत ही सहायता की। उनके प्रति अपनी कृतज्ञता स्वयं बुधसिंहजी ने राजस्थानी भाषा में रचे अपने दोहे में इस प्रकार व्यक्त की है—

धर पलटी पलटयौ धरम, पलटयौ गोत निशंक।
देवा हरिचंद राखियो, अधिपतियाँ सिर अंग॥

अपने मानसिक आघातों को विस्मृत करने के लिये जीवन के अन्तिम काल में वे मदिरा और अफीम का अत्यधिक सेवन करने लगे। कहते हैं कि इन मादक द्रव्यों के अति प्रयोग से वे अन्त में पागल हो गये और वैशाख कृष्णा ३ वि० सं० १७९६ को उनका अवसान हो गया। श्री० गौ० ही० ओझा के मतानुसार (उदयपुर राज्य का इतिहास) बेगूं से ६ मील दूर बाघपुरा में इनका देहान्त हुआ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

रावराजा बुधसिंहजी के जीवन और चरित्र को लेकर विभिन्न इतिहासकारों में विभिन्न प्रतिक्रियायें हुई हैं। डा० रघुवीरसिंह ने अपने ग्रंथ 'पूर्व आधुनिक राजस्थान' में इन्हें 'मदिरा और अफीम के नशे में चूर रहने वाला एक दुर्व्यसनी और आलसी शासक' कहा है। विद्वान् लेखक के पास इस कथन के क्या प्रमाण रहे हैं, कह नहीं सकते। संभव है जयपुर राज्य के अभिलेख-संग्रहालय से उन्हें ऐसी सामग्री मिली हो, किन्तु टॉड, ओझा, कविराजा श्यामलदास, सूर्यमल्ल मिश्रण, मुंशी देवीप्रसाद और गहलोत आदि ने कहीं पर भी ऐसा उल्लेख नहीं किया।

सूर्यमल्ल मिश्रण ने अपने ऐतिहासिक महाकाव्य वंशभास्कर में[1] बुधसिंहजी की प्रशस्ति में इस प्रकार लिखा है—

"इम लियउ वुद्ध पट्टाभिषेक,
थपि राज्यअंग बसि हुकम एक।
सित रोमगुच्छ ढरि दुदिस सीस,
कनकातपत्र भूपित महीस ।। २०
आवाप तंत्र चिंतन उपेत,
सुभ बल विदग्ध-धी सख-समेत।
पभटु संधि यान विग्रह बिलास,
द्वैधाऽऽसन आश्रय गुन प्रकास।
प्रभु मंत्र-शक्ति उत्साह पूर,
सम चतरुपाय सामर्थ्य सूर।
सविचार व्यसन सप्तक निषेधि,
बानैत बान बिन लेत वेधि।
विधि च्यार हेति कोविद-विनोद,
चतुरंग चक्र साधन समोद।
जुत धर्म्म नीति अवसर जमाय,
लोकानुराग नयरीति लाय।
इत्यादि रागगुन जोर जग्गि,
वुधसिंह वढ़िय जनु अनिल अग्गि।
हुव विदित क्रित्ति दिस दिसन हाक
अकि वाकि अराति रुकि वद न वाक।

---

[1] वंशभास्कर (वुद्धसिंह चरित्र प्रकरण)—पृष्ठ २८९९–२९०० सूर्यमल्ल मिश्रण।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

उपरोक्त वर्णन केवल कवि-उक्ति ही नहीं है। यह एक इतिहासकार की वाणी भी है। वंशभास्कर ऐतिहासिक सन्दर्भ-ग्रंथ भी माना जाता है। बुधसिंहजी एक उच्च-चरित्रवान शासक, वीर योद्धा और साहित्यानुरागी व कारयित्रि प्रतिभा के व्यक्ति थे, इसका प्रमाण उनके यहाँ आश्रय-प्राप्त संस्कृत और ब्रजभाषा के प्रकाण्ड विद्वान् तथा कवि श्री कृष्णभट्ट[1] की कृतियों में विद्यमान अंशों से मिलता है। संस्कृत भाषा में रचित अपनी पद्यमुक्तावली[2] में श्री भट्टजी ने बुधसिंहजी का प्रशस्ति-गान इस प्रकार किया है—

"देव श्रीबुद्धसिंह त्वदसिजलधरोल्लासिसत्कीर्तिनीरे,
तुङ्गप्राच्यादितीरे भवसरसि भवत्साधुवादोर्मिसंघे।
नक्षत्राण्येव हंसाः परिलसितनभोनीलिमा शैवलाघः,
पूर्णेन्दुः पद्ममस्मिन्, मधुरमधु सुधा, देववृन्दा मिलिन्दाः॥

[हे देव श्री बुद्धसिंह ! तुम्हारे असिरूपी जलधर से उल्लसित कीर्तिरूपी नीर में—जो प्राच्यभूमि के तट पर प्रवाहित है और जो भव-सरोवर को आपूरित कर रहा है और जिसमें साधुवाद की उर्मियाँ तरंगित हैं, नक्षत्र ही मराल प्रतीत होते हैं, सुन्दर नभ की नीलिमा ही शैवाल-जाल है, पूर्णचन्द्र ही कमल है और उसका मधुर मधु ही अमृत हैं। इसका पान देववृन्द भ्रमर के समान कर रहे हैं।]

उपरोक्त रूपक में भले ही अतिशयोक्ति हो किन्तु श्री भट्ट ने बुधसिंहजी के चरित्र-सत्य को झुठलाया नहीं है। श्री भट्ट 'लाल कवि' के नाम से पिंगल में भी कविता लिखा करते थे। उन्होंने एक कवित्त में भी बुधसिंहजी का कीर्ति-गान किया है—

राव अनिरुद्धसिंहजू के राव बुद्धसिंह,
रावरे सबल दल चलत तमक सों।

---

१ श्री कृष्णभट्ट—ये तैलंग ब्राह्मण थे। वि० सं० १७२५ में इनका जन्म हुआ। यह संस्कृत और ब्रजभाषा दोनों के प्रकाण्ड विद्वान थे और काव्य-रचना करते थे। यह श्री बुधसिंह के यहां काफी वर्षों तक आश्रित रहे। इनकी इच्छा से इन्होंने ब्रजभाषा में रीतिकाव्य के दो ग्रंथों (शृंगार-रसमाधुरी और विदग्ध-रसमाधुरी) की रचना की। इन्होंने संस्कृत में भी अनेक काव्य ग्रंथ लिखे—ईश्वरविलास और पद्यमुक्तावली उनमें प्रमुख हैं। जयपुर के महाराज सवाई जयसिंहजी इन्हें अपने यहाँ बुधसिंहजी से मांग कर ले गये। निम्नांकित दोहा इसका प्रमाण है—

बूंदीपति बुधसिंह सौं, लाये मुख सौं जाँचि।
रहे आइ आंबेर में, प्रीति रीति बहु भाँति॥

२ पद्यमुक्तावली—श्री कृष्णभट्ट
[राजस्थान प्राच्य प्रतिष्ठान, जोधपुर से प्रकाशित] पृ०सं० ८।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

'लाल कवि' तितके भुवाल पयमाल होत,
खूंदे हयमाल खुरतालकी झमक सों।
भारे होत वारिधि अंध्यारे धूरधार उजि-
यारे दामिनी के असि कारेकी दमकसों।
गारे परें नदिन पगारे परें वारिधिन,
गारे परें अरिन नगारे की धमकसों।

(अलंकार कलानिधि)

बुधसिंहजी ने नेहतरंग के अतिरिक्त और कोई काव्य-ग्रंथ लिखा हो ऐसा प्रमाण अभी प्राप्त नहीं हुआ है। हाँ, उनके द्वारा समय-समय पर रचित स्फुट छन्द अवश्य मिले हैं। 'राजस्थान के हिन्दी साहित्यकार' पुस्तक में बुधसिंहजी द्वारा रचित वीररस का एक छन्द उनके परिचय के प्रसंग में दिया गया है। वह इस प्रकार है—

दैत-दिलीपति मीर महाजल, सैद हिलोरनतें अति बाढ़ी।
हिन्दुन की हद दाबि दसों दिसि, तेज तुरक्क तरंगम चाढ़ी।
मारु-महीप प्रभू-अवतार है, धीरज धार गही खग गाढ़ी।
यों कहि बुद्ध अजीत बहार है, बूडी धरा कमधज्ज ने काढ़ी॥[1]

कवि का संघर्षमय जीवन ही इस बात का प्रमाण है कि उन्हें साहित्य-सृजन के लिये अवकाश बहुत कम मिला। अपने जीवन के अन्तिम १०-१२ वर्षों को छोड़ कर वे अपने बाल्य-काल से ही दुर्भाग्य और परिस्थितियों से जूझते रहे। उनके कवच, ढाल और तलवार ने कभी एक क्षण को विश्राम का अनुभव नहीं किया। तब भला उन्हें लेखनी चलाने का अवसर कब मिलता? नेहतरंग की रचना इसी अन्तिम काल में हुई है, ऐसा पुस्तक में वर्णित एक दोहे से प्रकट है—

सतरहसै चौरासिया, नवमी तिथि ससिवार।
सुक्ल पक्षि भादौं प्रकट, रच्यौ ग्रंथ सुखसार॥

(नेहतरंग, छं. सं. ५३६)

यह भी संभव है कि इसके कुछ अंशों की रचना पहले करली गई हो और इसे पूर्णता उपरोक्त तिथि को मिली हो।

काव्य-विवेचना

ऊपर लिखा जा चुका है कि नेहतरंग रीतिकाल में रचित एक रीतिबद्ध लक्षण-ग्रंथ है और इसमें वे समस्त सामान्य प्रवृत्तियाँ और विशेषतायें विद्यमान

---

[1] राजस्थान के हिन्दी साहित्यकार—हिन्दी साहित्य परिषद्, जयपुर।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

हैं जो रीतिकालीन अन्य कवियों की कृतियों में रही हैं। भाषा, विषय और प्रतिपादन शैली– किसी भी दृष्टि से इस कृति को कोई विशिष्ट रचना नहीं कहा जा सकता और यह सत्य केवल इस कृति के लिये ही नहीं अपितु इस काल में विरचित अधिकांश हिन्दी रीति-ग्रंथों के बारे में कहा जाता है। इस काल के प्रमुख प्रतिपाद्य रस, नायिकाभेद, नखशिख, अलंकार और छन्द रहे हैं। नेहतरंग में भी यही सब कुछ है। राधा और कृष्ण के आलम्बन से [न तु राधा कृष्ण सुमिरण को बहानो है] श्री बुधसिंह ने भी शृंगार का ही प्रतिपादन किया है और वे सर्वत्र अपने काल की कवि-परम्पराओं का पालन करते हुये प्रतीत होते हैं। हां, एक अन्तर-रेखा अवश्य इनके और अन्य कवियों के बीच में है और वह है अभिव्यंजना की मार्मिकता जो इन्होंने काव्यांग के उदाहरण में स्व-रचित छन्दों में प्रकट की है। मैं नीचे सोदाहरण अपने मत की पुष्टि करने की चेष्टा करूँगा।

कविता के पक्ष—

नेहतरंग के आधार पर श्री बुधसिंह के काव्य के दो पक्ष स्पष्ट हैं— १ शृंगारिक पक्ष और २ आचार्य पक्ष। इनके द्वारा रचे गये वीररस और नीति के स्फुट काव्य का हम यहां उल्लेख नहीं करेंगे। शृंगार रस के विवेचन में इन्होंने इस रस के समस्त उपकरणों का वर्णन किया है—संयोग, वियोग, नायक-नायिका-भेद, हावभाव, ऋतु-वर्णन आदि और इन सब में मानवीय भावों की मार्मिक अभिव्यक्ति के साथ रसों का उत्कृष्ट परिपाक हुआ है। इस काल के कवियों का शृंगारिकता के प्रति दृष्टिकोण भोगपरक था अस्तु वे पवित्र प्रेम के उदात्त तत्वों की ओर नहीं जा सके। वे अपने काव्य में केवल ऐसे उपकरण जुटाते थे जो नारी-सौन्दर्य के शारीरिक पक्ष को सर्वाधिक आकर्षक बना सकें। श्री बुधसिंह भी इस सामान्य प्रवृत्ति के अपवाद तो नहीं हैं किन्तु फिर भी इनका शृंगार-वर्णन मात्र शारीरिक वर्णन नहीं है। देव का, जो अनुमानतः श्री बुधसिंह के समकालीन थे, एक संवेगात्मक रूप-चित्रण नीचे देखिए—

जगमगे जोबन जराऊ तरिबन कान,
ओठन अनूठो रस हाँसी उमड़े परत।
कंचुकी में कसे आवें उकसे उरोज विंदु,
बदन लिलार बड़े बार घुमड़े परत।
गोरे मुख स्वेत सारी कंचन किनारीदार,
'देव' मणि भूमका झमकि झुमड़े परत।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

बड़े बड़े नैन कजरारे बड़े मोती नथ,
बड़ी बरुनीन होड़ाहोड़ी अड़े परत ॥[1]

उपरोक्त रूप-चित्र कितना इन्द्रियोत्तेजक और रूपासक्तिपूर्ण है, सहृदय इसका अनुमान सहज ही लगा सकते हैं। देव में संयम और नियंत्रण का अभाव था अतः संभव है यह पूर्ण रूप से उनकी वैयक्तिक प्रतिक्रिया हो। इसमें सौन्दर्य-चेतना का अभाव है और इसीलिये भावनात्मकता इसमें नहीं आ पाई। यह आरोप अकेले देव पर नहीं है, रीतिकाल के अन्य अनेक कवियों में इस प्रवृत्ति के दर्शन होंगे। श्री बुधसिंह में अपेक्षाकृत सौन्दर्य चेतना और भावनात्मकता है। निम्नांकित छन्द इसका उदाहरण है—

अंगनसौं इत रंगनसौं, उझलै अंग चांदिनीसी छवि छांई।
नैननितें प्रति-बैननितें, सक सैननितें सरसें सरसांई॥
ऐसी भई दिन च्यारिकतें, बृजचंदहूकी मतिकी दुरसांई।
देषत दूनी कलासी चढ़ै सु बढै दिन द्वैजके चंदकी नांई॥
(नेहतरंग, छं. सं. ४४)

उपरोक्त चित्रण एक नवल-वधू के रूप का है किन्तु वर्णन की जितनी सात्विकता, उपमानों का जितना संयत प्रयोग और अभिव्यक्ति की जितनी तीव्रता इसमें है वह देव के उक्त वर्णन में नहीं है। इस वर्णन को पढ़ कर नायिका के प्रति एक सात्विक सौन्दर्य-बोध जागृत होता है जब कि देव के वर्णन से एक प्रकार की ऐन्द्रिय आसक्ति उत्पन्न होती है।

श्री बुधसिंह के काव्य का आचार्य-पक्ष भी सशक्त है। इन्होंने 'सर्वांग विवेचन' किया है। इनकी प्रतिपादन-शैली पद्यात्मक है और संस्कृत के आचार्य वाग्भट्ट की शैली के आधार पर है। काव्यांग के शास्त्रीय विवेचन के लिये इन्होंने दोहे का प्रयोग किया है और उदाहरण के लिये कवित्त, सवैया और छप्पय का। हिन्दी कवियों में तब इसी शैली का अधिक प्रचार था। केशव, तोष, मतिराम, भूषण, देव, भिखारीदास, पद्माकर, बेनीप्रवीन आदि ने भी इसी शैली का अनुसरण किया है।

अलंकार-निरूपण में श्री बुधसिंह की शैली जयदेव के चन्द्रालोक पर आधारित रही है। अलंकार के शास्त्रीय विवेचन और उदाहरण को इन्होंने एक ही छन्द में समाविष्ट किया है। यथा एक ही मुक्तादाम छन्द में उत्प्रेक्षा

---

[1] देव और उनकी कविता—डा० नगेन्द्र।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

अलंकार का विवेचन और उदाहरण देखिये—

इहै उतप्रेछ जु संसय सांच,
गनौं इक देत इकै फल बांच।
न ती सम चाल धरै गज धूरि,
मनौं तुव ओठ सुधा ससि पूरि।
नेहतरंग, छ. सं. ४६०

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने अपने इतिहास के रीतिकालीन प्रकरण में कहा है, "आचार्यत्व के पद के अनुरूप कार्य करने में रीतिकाल के कवियों में पूर्णरूप से कोई भी समर्थ नहीं हुआ।" ऐसी धारणा अन्य विद्वानों की भी है और इसका कारण स्पष्ट है। हिन्दी के आचार्य कवियों को संस्कृत और प्राकृत-अपभ्रंश की रीति-परम्परा परिपक्व रूप में प्राप्त हुई थी। संस्कृत के आचार्यों ने इस क्षेत्र में इतना कार्य कर दिया था कि इनके लिए कुछ शेष नहीं रहा और इसीलिए कतिपय अपवादों को छोड़ कर किसी भी हिन्दी कवि-आचार्य ने रीतिशास्त्रीय मौलिक उद्भावना नहीं की। इस काल के अधिकांश कवि राज्याश्रित थे और चमत्कार की सृष्टि कर तथा अपने आश्रयदाता की स्तुति-प्रशस्ति कर अर्थोपार्जन करना उनका कवि-धर्म हो गया था।

श्री बुधसिंह की स्थिति भिन्न रही है। वे स्वयं नरेश थे और किसी दबाव, आश्रय और प्रशंसा-प्राप्ति की इच्छा से इनके काव्य का निर्माण नहीं हुआ। इन्होंने अपने यहाँ श्री कृष्णभट्ट और भोजमिश्र जैसे रीति-कवियों को संरक्षण दिया। अस्तु यह स्पष्ट है कि इनकी रचना-प्रवृत्ति स्वतन्त्र रही है। राजा जसवन्तसिंह की भांति इनकी दृष्टि भी शुद्ध साहित्यिक रही है और इनका नेहतरंग ग्रंथ एक विशुद्ध काव्य-शास्त्रीय ग्रंथ है जिसमें इनकी रसवादिता और अलंकारवादिता दोनों का उन्मुक्त प्रदर्शन हुआ है।

श्री बुधसिंह का नायक-नायिका-वर्णन पूर्ण रूप से परम्पराभुक्त है। इनके काव्य में नायक-नायिका सम्बन्धी प्रचलित मान्यताओं का अन्य हिन्दी कवियों की भांति अनुसरण हुआ किन्तु कतिपय विभिन्नता को लेकर। नायिका-भेद की परम्परा बहुत पुरानी है और प्रमुखतया इसका सम्बन्ध भरतमुनि के नाट्य-शास्त्र से है। इस शास्त्र के अन्तर्गत नारी के अवस्था, प्रकृति और कामदशा के अनुसार कई भेद-प्रभेद किये गये हैं और वे ही नायिकाओं के नाम से अभिहित हुई हैं। उन्होंने अपने इस शास्त्र में पुरुषों के भी उनकी प्रकृति के अनुसार, प्रभेद किये हैं और वे नायक के नाम से सम्बोधित हुये हैं।

नायक-नायिका-भेद का विवेचन करने वाला एक और ग्रंथ भी है और वह है वात्स्यायन का कामसूत्र। आचार्य रुद्रट ने इन दोनों ग्रंथों के विवेचन का

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

समन्वित रूप अपने ग्रंथ 'शृंगार-तिलक' में प्रस्तुत किया है और संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश के परवर्ती कवियों में इसीका अधिक प्रचार हुआ।

श्री बुधसिंह का नायक-नायिका-भेद भी रुद्रट की पद्धति का है। इसमें भरतमुनि की नायिकाओं का भी समावेश है तथा वात्स्यायन की नायिकाओं [पद्मिनी, हस्तिनी, चित्रिनी, शंखिनी] का भी। केशव, मतिराम, देव आदि कवि-आचार्यों का प्रभाव तो इनके नायिका-भेद पर परिलक्षित होता ही है किन्तु इनके यहाँ आश्रित कवि श्री कृष्णभट्ट के नायक-नायिका-विवेचन का प्रभाव अधिक स्पष्ट और प्रगाढ़ है। श्री भट्ट ने इनके आदेश से ही वि० सं० १७६९ में 'शृंगार-रस-माधुरी'[1] नामक रस-ग्रंथ का निर्माण किया था। इसमें सभी रसों के साथ नायक-नायिका-भेद का विशद विवेचन है। नेहतरंग में उन्हीं नायक-नायिकाओं का वर्णन है जो 'शृंगार-रस-माधुरी' में है। दर्शन, हावभाव, मान-मोचन, रस आदि अन्य काव्यांगों के भी वे ही भेद बताये गये हैं जो श्री भट्ट ने अपनी इस कृति में लिखे हैं। यह कृति क्योंकि अभी अमुद्रित है और अप्राप्य भी है अतः दोनों का ठीक तुलनात्मक अध्ययन कर के निश्चित निष्कर्ष तो नहीं दिये जा सकते किन्तु इतना स्पष्ट है कि श्री कृष्णभट्ट और श्री बुधसिंहजी का निकट सान्निध्य रहा है, अतः प्रभाव स्वाभाविक है। यह भी सम्भव है कि श्री भट्ट ने बुधसिंहजी को काव्यशास्त्रीय मार्ग-दर्शन दिया हो।

श्री बुधसिंह की अनुभूति एकान्त शृंगारिक रही है अतः काव्यांगों के शास्त्रीय लक्षणों के विवेचन के पश्चात् उदाहरणस्वरूप अपने भावों की जो अभिव्यंजना इन्होंने की है वे आलम्बन व आश्रय (राधा और कृष्ण) की चेष्टाओं (अनुभावों) के बहुत मधुर चित्र प्रस्तुत करती है—एक उत्कंठिता का रूपचित्र देखिये—

चंद्रिकासी अबला चपलासी, लषै कमलासी सो सोभा लगीसी।
सारी हरि गहरैं रंगसौं, उझलीसी गुराई परैं उमगीसी।।

---

[1] शृंगार-रस-माधुरी का वर्ण्यविषय प्रमुख रूप से 'रस' है। यह सोलह 'स्वादों' में विभक्त है। बुधसिंह की 'नेहतरंग' और इनकी 'शृंगार-रस-माधुरी' के वर्ण्यविषय में पर्याप्त साम्य प्रतीत होता है। नायक-नायिका भेद, रस, हावभाव, दर्शन, सखीवर्णन, मानमोचन आदि के, नेहतरंग में वे ही भेद-प्रभेद हैं जो शृंगार-रस-माधुरी में श्री कृष्णभट्ट द्वारा निरूपित हैं।

[आधार—हिन्दी साहित्य का बृहत् इतिहास, षष्ठ भाग, खण्ड ३, अध्याय ४, पृ० सं० ३९३-३९५]

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

लाषौं मनौंरथकीसी मिली, रही आंवनि लालकैं आषौं षरीसी।
चौंकी चकीसी, जकीसी बकीसी, टगी अटकीसी गढ़ी है ठगीसी॥
(नेहतरंग, छं. सं. ६१)

रूपबोध के साथ कवि का नायिका की मनोदशाओं का अध्ययन कितना सूक्ष्म है—यह उपरोक्त छन्द से प्रकट है। इसमें गतिशीलता का समावेश भी है। अब एक वर्ण्य-चित्र भी देखिये—

आजु छबि देत बलि राधे बृजचंद साथ,
अंग अंग उमगत जोबनकी जौरैतैं।
केसरिकै रंग नित रंग सोहै केतकीके,
कमल गुलाब कहा चंपक निहोरैतैं।
अैसें लषि रीझिकैं लसत रीझि कुंज-भौंन,
उप्पम न आवै कछु मेरे चित्त चोरैतैं।
चांदिनी सुदेस मुष-चंदकौं निहारि करि,
चाकरसे ह्वै चले चकोर चहूँ ओरैतैं।
(नेहतरंग, छं. सं. ७७)

केसर, केतकी और गुलाब के जड़ वर्णों के सहारे कवि ने राधा के रूप का प्राणवन्त चित्रण किया है। नवयौवन के वर्ण का सादृश्य केसर के वर्ण में है—कमल, गुलाब और चंपा पुष्पों के वर्णों की सादृश्यता भी नवयौवना के विभिन्न अंगों में प्रकट की जाती है। कवि ने इन रंगों में प्राण-प्रतिष्ठा कर राधा के लावण्य को अत्यन्त ही प्रभावोत्पादक ढंग से मूर्तिमान किया है। श्री बुधसिंह और अन्य कवियों में कला और आचार्यत्व की दृष्टि से यही सूक्ष्म अन्तर है कि इनके प्रयोगों और वर्णनों में अधिक रूढ़ता नहीं है, अस्पष्टता नहीं है। इनके सभी चित्र भावोद्रेकपूर्ण हैं।

काव्य रूप (छन्द-योजना)—

नेहतरंग की छन्द-योजना पर जब दृष्टिपात करते हैं तो हमें सर्वत्र समकालीन परम्परा के ही दर्शन होते हैं। यह कृति एक 'सर्वांग-निरूपक लक्षण-काव्य' है और जिस प्रकार रीतिकाल में रीति-ग्रंथ लिखने वाले सभी कवि-आचार्यों ने मुक्तक का [दोहा, सवैया, कवित्तका] सहारा लिया था, श्री बुधसिंह ने भी इसी काव्य-रूप को अपनाया।

दोहा, सवैया, कवित्त, छप्पय आदि छन्द-शास्त्र की दृष्टि से 'मुक्तक' हैं। इनमें 'अन्यनिरपेक्षता' होती है। यह लघु रसात्मक खंडदृश्यों के चित्रण में

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

अधिक सक्षम होते हैं। इनमें चमत्कार की सृष्टि भी आसानी से हो जाती है।[1] रीतिकाल में राजसभा में प्रशंसा पाने, राजाओं की रसिकता को तुष्ट करने और थोड़े में रसोद्रेक और चमत्कार की सृष्टि के लिये 'मुक्तक' सर्वथा उपयुक्त थे।

नेहतरंग क्योंकि एक सर्वांग-निरूपक काव्य है, इसलिये इसमें दोहा, सवैया, कवित्त के अतिरिक्त छन्द और अलंकार प्रकरण में कवि ने अन्य छन्दों का प्रयोग भी अनिवार्य रूप से किया है जैसे कवित्त और सवैया के विभिन्न प्रकारों का। छप्पय, कड़षा और मुत्तीयदाम छन्द का प्रयोग भी इस कृति में हुआ है। काव्यांग का शास्त्रीय विवेचन तो परम्परा के अनुसार इन्होंने भी दोहे में ही (अलंकार-निरूपण के अतिरिक्त) किया है और फिर उदाहरण अपनी रुचि और सुविधा के अनुसार कवित्त, सवैया अथवा छप्पय में दिया है।

श्री वुधसिंह ने छन्द-निरूपण के प्रथम दोहे में ही कहा है कि "नागपिंगल" छन्द-शास्त्र के छन्दों में से कुछ का वर्णन मैं यहाँ कर रहा हूँ—

बहुत छन्द कृत नाग के[2], पिंगल मत विसतारि।
विदत छन्द कछु कहत हौं, सो नीकै उर धारि॥

इस दोहे से स्पष्ट है कि इन्होंने नाग कृत छन्द-शास्त्र का अध्ययन कर उसी के मतानुसार कतिपय छन्दों के लक्षण दिये हैं। किन्तु यह अकेले इनको ही विशेषता नहीं है। इस काल में लिखने वाले सभी कवियों ने 'नागपिंगल' का ही सहारा लिया है। 'पिंगल' ही छन्द-शास्त्र के आदि-आचार्य हैं। जो स्थान व्याकरण-शास्त्र में पाणिनि को प्राप्त है वही छन्द-शास्त्र में पिंगल को। परवर्ती जितने भी छन्द-शास्त्र के आचार्य हुये हैं, उनका मूलाधार यही ग्रंथ है। हिन्दी रीति-कवियों ने यह परम्परा सीधे संस्कृत से न अपना कर प्राकृत-अपभ्रंश से अपनाई है। स्वयं वुधसिंहजी का—दोहे के लक्षण बताने वाला छन्द

---

[1] हिन्दी साहित्य का इतिहास—आचार्य रामचन्द्र शुक्ल (रीतिकाल)

[2] नाग—साहित्य में इनका पूरा नाम नागराज मिलता है। इनका पौराणिक अथवा ऐतिहासिक अस्तित्व क्या रहा है—कुछ विदित नहीं हो पाया है। कहते हैं ये छन्दशास्त्र के आदि रचयिता हैं किन्तु यह अभी किसी साहित्यिक अनुसंधान से सिद्ध नहीं हो पाया है। यों पिंगल मुनि छन्दशास्त्र के आदि रचयिता माने गये हैं। नाग (शेष) का एक पर्याय 'पिंगल' भी है अतः संभव है नागराज व पिंगलमुनि एक ही हों। एक किंवदंती के अनुसार शेषनाग ने ही छन्दशास्त्र की रचना की बताते हैं।

(डिंगल कोष—राजस्थानी शोध संस्थान, चौपासनी, जोधपुर)

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

ऐसा प्रतीत होता है कि **प्राकृत पैंगलम्**[1] में दिये गये लक्षणों का पिंगल अनुवाद मात्र है—

तेरह मत्ता पढ़म पअ, पुणु एआरह देइ ।
पुणु तेरह एआरहहि, दोहा लक्खड़ एह ॥
(प्रा० पैं०)

श्री बुधसिंह ने इसी दोहे को इस प्रकार रूपान्तरित किया है—

तेरैं मत्ता प्रथम ही, पुनि अग्यारह जोइ ।
तेरैं ग्यारह बहुरि करि, दोहा लक्षन होइ ॥
(नेहतरंग छं. सं. ४२६)

कविता और छन्द का संबंध अनिवार्य ही है । प्रसिद्ध दार्शनिक मिल ने एक जगह कहा है, "जब से मनुष्य मनुष्य है तभी से उसके सभी गंभीर और सम्बद्ध भावों की अपने आपको लययुक्त भाषा में व्यक्त करने की प्रवृत्ति रही है । भाव जितने ही गंभीर हुये हैं लय उतनी ही विशिष्ट और निश्चित हो गई है ।" उपरोक्त कथन में एक मनोवैज्ञानिक सत्य का उद्‌घाटन हुआ है । कविता और छन्द का वास्तव में एक नैसर्गिक सम्बन्ध है और शायद इसीलिये प्रत्येक कवि ने छन्दोबद्ध कविता की है । आधुनिक युग की नई कविता का कवि भी इसका अपवाद नहीं है—उसमें भी एक गति और लय-योजना होती है । रीति-काल के कवियों ने जिन छन्दों का आलम्बन लिया उनमें लयात्मकता और संगीत अधिक है किन्तु जो कवि वर्णों और शब्दों के चयन में सतर्क नहीं रहे उनमें माधुर्य और संगीतात्मकता का अभाव रहा है । उपरोक्त छन्दों में [कवित्त, सवैया में] ध्वन्यात्मकता का प्राधान्य रहा है और जिन शिल्पियों ने ऐसा नहीं किया उनके छन्द रूखे काव्य—शरीर मात्र बन कर रह गये हैं ।

श्री बुधसिंह में ऐसी रूक्षता परिलक्षित नहीं होती । उनके शब्दों में ध्वन्यात्मकता है—वे संगीत की कोमल और श्रुतिसुखद तरंगें उठाने में सफल हैं । शब्दालंकारों और अनुप्रासों का प्रयोग उनके छन्दों में नाद-सौन्दर्य की सृष्टि करता है । एक उदाहरण देखिये—

गाजकैं सज्जल कज्जलसे, घन छूटि मदज्जलसे झर जागी ।
मोरके सोर करैं चहुं ओर, सो चंचला ज्यौं चलि षाग उनागी ॥
(नेहतरंग, छं. सं. ४००)

---

[1] **प्राकृत पैंगलम्**—यह प्राकृत और अपभ्रंश भाषाओं के छन्दशास्त्र का ग्रन्थ है । कहते हैं इसकी रचना कई विद्वानों के योग से हुई । यह १४ वीं० श० ई० में रचा गया था । इस पुस्तक का प्रभाव हिन्दी-छन्दशास्त्र पर पर्याप्त रूप में दृष्टिगोचर होता है ।
(साहित्य कोश)

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

ऋतु-वर्णन—

रीतिकाल में ऋतु-वर्णन की दो परम्परायें रही हैं—एक निरपेक्ष-ऋतुवर्णन और दूसरी सापेक्ष-ऋतुवर्णन। निरपेक्ष-ऋतुवर्णन में नायक नायिका का आलंबन ग्रहण नहीं किया जाता। इसमें सहज भावोद्दीपन होता है, सुन्दर अभिव्यंजना के सहारे ऋतु का एक संश्लिष्ट चित्र प्रस्तुत किया जाता है। संस्कृत के कुछ कवियों के काव्यों में ऐसे चित्र उपलब्ध होते हैं। हिन्दी के कवियों में सेनापति ऐसे हैं जिन्होंने ऋतुओं के निरपेक्ष संश्लिष्ट चित्र अंकित किये हैं। पद्माकर में भी कहीं-कहीं पर इसके दर्शन होते हैं। उदाहरण के लिए उनका वसन्त-वर्णन देखिए—

कूलन में, केलि में, कछारन में, कुंजन में,
क्यारिन में कलिन कलीन किलकंत है।
कहै पद्माकर पराग हू में, पौन हू में,
पानन में, पिकन, पलासन पगंत है।
द्वार में, दिसान में, दुनी में, देस-देसन में,
देखो दीप द्वीपन में दीपत दिगंत है।
बीथिन में, ब्रज में, नवेलिन में, बेलिन में,
बनन में, बागन में, बगरचौ बसंत है।।

उपरोक्त वर्णन में बसंत के समस्त अन्तर और बाह्य का चित्र सहृदयों के नेत्रों में अंकित हो जाता है। उसके रूप, रस, गंध सभी प्रत्यक्ष हो जाते हैं।

सापेक्ष ऋतुवर्णन में ऐसा नहीं होता। ऋतुओं के स्वतन्त्र व्यक्तित्व को नायक-नायिकाओं की संयोगावस्था व वियोगावस्था से सम्बद्ध कर दिया जाता है। पावस ऋतु का नायिका के विरह की पृष्ठभूमि में सापेक्ष वर्णन इस प्रकार होता है—

श्रीपति सुकवि कहै घेरि घोर घहराहिं,
तकत अतन तन ताप में तए तए।
लाल बिनु कैसे लाज चादर रहैगी आज,
कादर करत मोहि बादर नए नए।

श्री बुधसिंह ने नेहतरंग में ऋतुवर्णन की दोनों परम्पराओं को अपनाया है। प्रसंग-सापेक्षता और निरपेक्षता दोनों के दर्शन इनके ऋतुवर्णन में होते हैं—

फूली लता नव पल्लवकी, सो जटा धुलि केसरि ज्यौं छबि छायौ।
गुंजन भौंरनकी चहुधां, कुसमाद पलासनकैं नष लायौ।।
सीतल-मंद-सुगंध समीर, तिही भय त्रासन आगम धायौ।
यौं बृजपैं बृजराज विनां, रितुराज मनौं मृगराज ह्वै आयौ।।

(नेहतरंग, छं. सं. ४१६)

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

यह बसंत-ऋतु का सापेक्ष चित्रण है। कृष्ण की अनुपस्थिति में विरही ब्रज के लिए बसंत मृगराज के समान कष्टदायी है। यह सांगरूपक भी है।

अब बुधसिंहजी के निरपेक्ष-ऋतुवर्णन का चित्र देखिये—

छूटि झरैं धुरवा गति ज्यौं, गंगधार हजारनकी सरषा है।
बादर नांहि बिभूति लसैं, नांद कोकिल कीजतिकी करषा हैं।
चंचला सोहै जटा पुलिकैं, भाल-चंदसो चन्द्रिकाकी निरषा है।
उप्पमताई सौं यौं परसैं, दरसैं महादेव किधौं वरषा है॥
(नेहतरंग, छं. सं. ४२०)

वर्षा ऋतु की जटाधारी महादेव से तुलना कर कवि ने सांगरूपक प्रस्तुत किया है किन्तु इसमें वियोग अथवा संयोग की नितान्त निरपेक्षता निहित है।

भाषा—

मैं ऊपर कह आया हूँ कि बुधसिंहजी ने अपनी काव्य-रचना का माध्यम पिंगल को बनाया था। किन्तु नेहतरंग की पिंगल और राजस्थान में इसी काल में रचित अन्य काव्यों की पिंगल में बहुत बड़ा अन्तर है। राजस्थानी मिश्रित ब्रजभाषा को पिंगल नाम दिया गया है। यदि नेहतरंग की भाषा का सूक्ष्म अध्ययन करें तो इसके रूप और प्रकृति में हमें राजस्थान की तत्कालीन साहित्यिक भाषा डिंगल अथवा राजस्थानी की छाप अधिक मिलती है। इसके संज्ञा-शब्दों के अतिरिक्त बहुत से विशेषण, कारक, सर्वनाम और क्रियारूप भी डिंगल के ही हैं। निम्नांकित शब्द जो नेहतरंग में प्रयुक्त हुये हैं, स्पष्ट रूप से राजस्थानी के हैं—

बलाय, तेरू, पखेरू, साषै, अगाऊलैं, बेर, उमाहि, वारपार, सगलौ, सगरी, उग्यौ, रढ़ी अपूठैं, पसरी, सरत, सरीषी, नौज आदि।

इन शब्दों (संज्ञा, विशेषण, क्रिया) का नेहतरंग में प्रचुर प्रयोग हुआ है और ब्रजभाषा संस्कृत के तत्सम तथा अन्य भाषाओं के शब्दों का प्रयोग भी राजस्थानी की प्रकृति में ढाल कर ही कवि ने किया है। अतः मेरा अपना मत यह है कि यदि हम 'नेहतरंग' की भाषा को शुद्ध राजस्थानी नहीं तो कम से कम शुद्ध पिंगल भी नहीं कह सकते। इसे पिंगल की एक शैली विशेष कहा जाना चाहिए जिसमें राजस्थानी का रूप मुखर हुआ है। भाषा-विवाद के पारंगत योद्धा 'इस' और 'उस' भाषा को 'यह' और 'वह' भाषा सिद्ध करने की आग्रहपूर्ण चतुरता दिखाया करते हैं। राजस्थानी के अनेक रासो-ग्रंथों की भाषा को लेकर यह विवाद आज भी है। मीरां के काव्य की भाषा पर भी सभी विद्वान आज एकमत नहीं हैं। मेरा अभिप्राय नेहतरंग की भाषा को लेकर यह

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

विवाद प्रारम्भ करने का नहीं है। जो मेरा अल्प ज्ञान बताता है उसी के आधार पर मैंने यह मत प्रकट किया है।

नेहतरंग की भाषा में संस्कृत के तत्सम, प्राकृत और अपभ्रंश तथा उर्दू-फारसी के शब्दों का भी प्रयोग हुआ है। यह भी रीतिकाल के कवियों की सामान्य भाषा-प्रवृत्ति रही है। देव, पद्माकर, मतिराम, भिखारीदास, रसखान आदि में यह प्रवृत्ति स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। बुधसिंहजी इसके अपवाद कैसे रहते ?

बुधसिंहजी ने प्रचलित मुहावरों का प्रयोग भी बहुलता से किया है। मुहावरों के उपयुक्त प्रयोग से अभिव्यंजना में तीव्रता आ जाती है। किन्तु जहां मुहावरों का अति प्रयोग कवि का साध्य हो जाता है वहां भावव्यंजना के स्थान पर चमत्कार की अधिकता हो जाती है। बुधसिंहजी ने ऐसा नहीं किया—मुहावरों का प्रयोग इन्होंने बहुत संयत होकर केवल भावाभिव्यंजना में सौन्दर्य और तीव्रता लाने के लिए किया है। नीचे का उदाहरण मेरे कथन की पुष्टि करेगा—

फूलि है धौं घर आपन के, लगि सोच संकोच बढ़े बन ये हैं।
क्यौं बृजमैं बसिबौ सजनी, बृजचंद तौ चौथिकौ चंद भये हैं॥

(नेहतरंग, छं. सं. ३०)

यहाँ 'चौथिकौ चंद' में कोई चमत्कार का भाव नहीं है। नायिका की वियोगजन्य विवशता में एक प्रकार की तीव्रता पैदा की गई है।

इसी प्रकार 'बैर परे हैं, जाल सफरी ज्यौं, आंबिन लागि, हाथ बिकी है, पखेरू लौं फिरत हैं, काच की चूरि लौं, पीछैं परैं कछु हाथ न आवैं' आदि मुहावरों का बहुत स्वाभाविक रूप में प्रयोग हुआ है—प्रयत्नजन्य नहीं।

नेहतरंग की भाषा में अलंकरण (Ornamentation) का प्राचुर्य है। कोई भी ऐसा छन्द आपको नहीं मिलेगा जिसमें किसी न किसी अलंकार की छटा नहीं दिखाई गई हो। शब्दालंकार और अनुप्रास का स्वाभाविक प्रयोग भाषा और भावों को अलंकृत करता है। नेहतरंग में वृत्यनुप्रास, छेकानुप्रास और अन्त्यानुप्रास का बहुलता से प्रयोग हुआ है।

भाषा-सौष्ठव का दूसरा अंग है—अर्थ-ध्वनन। शास्त्रीय दृष्टि से यह भी एक प्रकार से अनुप्रास के अन्तर्गत ही है। अर्थ-ध्वनन से तात्पर्य है—व्यंजनों की मैत्री और अनुकरणमूलक शब्द। जब ऐसे वर्णों का प्रयोग एक साथ होता है तो उनमें एक प्रकार की ध्वनि उठती है और वह एक विशेष अर्थ को अभिव्यक्त करती है। जैसे—'तनक तनक तामें झनक चुरीन की', 'तनक तनक' में स्वत:

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

ही चूड़ियों की झंकार अभिव्यक्त हो जाती है। यह ध्वनिप्रधान शब्द है। नेह-तरंग में कवि ने ऐसे ध्वनि-प्रधान वर्णों और शब्दों का प्रयोग कर अर्थ-ध्वनन का सौन्दर्य पैदा किया है—

……हा बलि हौं इन बात निहारी

नेहतरंग की भाषा में कान्ति-गुण (Polish) का भी अभाव नहीं है। शब्द-गत औज्ज्वल्य और मसृणता के दर्शन सर्वत्र होते हैं। न तो कहीं कोई भर्ती का शब्द है और न कोई निरर्थक। सम्पूर्ण शब्द-योजना में एक प्रकार की कसावट है और इससे भाव-व्यंजना में स्वतः ही सौन्दर्य आ गया है।

परवर्ती कवियों का प्रभाव—

श्री बुधसिंहजी सर्वथा मौलिक कवि-आचार्य हैं ऐसा नहीं कहा जा सकता। रीतिकाल के अन्य कवि-आचार्यों की भांति इन्होंने भी अपनी समकालीन प्रवृत्तियों और परम्पराओं से प्रभावित होकर काव्य-रचना की है। संस्कृत और प्राकृत-अपभ्रंश की जो रीति-रचना हिन्दी में आई और जिसका अनुकरण कतिपय अपवादों के साथ जिस प्रकार केशव, बिहारी, देव, मतिराम आदि ने किया उसी प्रकार श्री बुधसिंहजी ने भी किया, यह सत्य है। उपमाओं के रूढ़ प्रयोग, रीतिकाल का काव्य-रूप, प्रतिपाद्य और जीवन-दर्शन इनमें भी ज्यों के त्यों मिलते हैं। भेद है तो इतना ही कि इनकी लेखनी रूप-वर्णन में उच्छृंखल नहीं रही। इनमें शृंगारिक भोगपरता का अपेक्षाकृत अभाव है, सवेगात्मक रूप-वर्णन को ओर इनकी आसक्ति कम है। राधा और कृष्ण को अपने नायक और नायिका मान कर इन्होंने सात्विकता का निर्वाह किया। इसका कारण यही रहा कि ये नरेश थे, चमत्कार सृष्टि और शरीर-सौन्दर्य का अनुदात्त वर्णन कर इन्हें न तो किसी से स्वर्णमुद्रा पुरस्कार में लेनी थी और न प्रशंसा प्राप्त करनी थी। काव्यानुरागियों के लिये इन्होंने स्वान्तःसुखाय ही सब कुछ लिखा।

इनके वर्ण्य-विषय और अभिव्यंजना पर समीक्षात्मक दृष्टिपात करने पर यह प्रकट है कि देव, बिहारी, मतिराम, रसखान, श्री कृष्णभट्ट आदि का इन पर स्पष्ट प्रभाव है। भावसाम्य के साथ कहीं कहीं पर तो शब्द-समूह और पंक्तियाँ भी मिल गई हैं। बिहारी के बसन्त-वर्णन पर रचित दोहे और बुधसिंहजी के दोहे की तुलना कीजिये—

छकि रसाल सौरभ सने, मधुर माधवी गंध।
ठौर ठौर झूमत झपत, भौंर झौंर मधु अंध॥

(बिहारी)

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

करत गुंज मिलि पुंज अति, लपटें लेत सुगंध।
ठौर ठौर झौंरत झपत, भौंर-झौंर मद अंध॥
(नेहतरंग, छं. सं. ४१५)

यह प्रभाव-दोष अकेले श्री बुधसिंहजी में ही नहीं है। यदि हम अन्य समकालीन लेखकों और कवियों का तुलनात्मक अध्ययन करें तो इसका प्रभाव सर्वत्र परिलक्षित होगा। बिहारी की सतसई पर अमरुशतक की स्पष्ट छाया है। देव, मतिराम, सेनापति आदि भी इस दोष से नहीं बचे हैं। फिर इसे दोष भी क्यों कहा जाय ? यह तो युग-प्रवृत्तियों की स्वाभाविक प्रतिक्रिया मात्र है। अतः हमें श्री बुधसिंहजी पर पड़े इस प्रभाव को इसी स्वस्थ दृष्टि से लेना है।

पिंगल रीति-काव्य में स्थान--

नेहतरंग और श्री बुधसिंह की संक्षेप में सर्वांग काव्य-समीक्षा करने के पश्चात् अब हमें यह देखना है कि पिंगल-साहित्य में नेहतरंग का क्या स्थान है और राजस्थान के पिंगल रीतिकाव्य में श्री बुधसिंहजी का क्या योग है। रीतिकाल में, राजस्थान में पिंगल में जो रीति-ग्रंथ लिखे गये उनमें से अधिकांश एकांग-निरूपण शैली के हैं अर्थात् या तो वे रसपरक हैं या छन्दशास्त्र या अलंकारों पर। कुछ कृतियाँ ऐसी भी हैं जो सर्वांग-निरूपण शैली को आधार मान कर लिखी गई हैं। महाराजा जसवन्तसिंहजी रचित 'भाषाभूषण' ऐसी ही एक प्रतिष्ठित कृति है। नेहतरंग का स्थान भी पिंगल रीतिग्रंथों में वही होना चाहिये जो 'भाषा भूषण' का है। डॉ० मोतीलाल मेनारिया ने नेहतरंग के विषय में लिखा है, "नेहतरंग हिन्दी-साहित्य की एक अनमोल निधि है—साहित्य की दृष्टि से यह एक निष्कलंक रचना है। भाषा, भाव, काव्य-सौष्ठव सभी का इसमें सुन्दर संयोग हुआ है"।[1] इसी प्रकार डॉ० सरनामसिंह शर्मा 'अरुण' ने कहा है कि श्री बुधसिंह पिंगल साहित्य के उच्च कोटि के कवि-आचार्य थे। उनकी नेहतरंग का पिंगल के रीति-ग्रंथों में विशिष्ट स्थान है।[2] अस्तु हम यह निष्कर्ष निकालते हैं कि चाहे श्री बुधसिंहजी ने परिमाण की दृष्टि से बहुत थोड़ा लिखा हो किन्तु उनकी यह एक रचना ही रीति-साहित्य के क्षेत्र में उन्हें विशिष्ट स्थान दिलाने के लिये पर्याप्त है।

उपसंहार

राजस्थान के साहित्य और साहित्यकारों की उपेक्षा को लेकर इस निबन्ध

---

[1] राजस्थान का पिंगल साहित्य—डा० मेनारिया, पृष्ठ सं० १२३।

[2] राजस्थानी साहित्य की प्रगति और परम्परा—डा० अरुण।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

के प्रारम्भ में मैंने दुःख प्रकट किया है। मैं इसकी पुनरावृत्ति करते हुये लिखना चाहूँगा कि राजस्थान की मनोभूमि बहुत ही उर्वर रही है—इसकी साहित्यिक सम्पदा अमूल्य है। यहाँ के संग्रहालयों में, राजघरानों में, प्राचीन ऐतिहासिक केन्द्रों में तथा गाँवों की झोंपड़ियों में हस्तलिखित ग्रन्थों के रूप में अनन्त ज्ञान-राशि छिपी हुई है। उनका सर्वेक्षण, गवेषणा और मूल्यांकन अब द्रुत गति से होने लगे हैं। "राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान" इस क्षेत्र में अत्यन्त श्लाघनीय कार्य कर रहा है। शार्दूल राजस्थानी रिसर्च इंस्टिट्यूट, बीकानेर; राजस्थानी शोध संस्थान, जोधपुर और राजस्थान विद्यापीठ, उदयपुर की सेवायें भी कम प्रशंसनीय नहीं हैं। किन्तु इस क्षेत्र में जितना कार्य हो जाना चाहिये था वह नहीं हो पाया। हिन्दी क्षेत्र के विद्वानों की उत्तरदायिता भी इस विषय में कम नहीं है। आज सबसे बड़ी आवश्यकता है—हमारे दृष्टिकोण की उदारता। भाषायी और प्रादेशिक भावनाओं से ऊपर उठ कर विद्वानों को उदार और निरपेक्ष दृष्टिकोण अपनाना चाहिये, देश के साहित्यिक और भावनात्मक एकीकरण के लिये आज हमारी यह राष्ट्रीय आवश्यकता है। विद्वान इसे मेरा एक नम्र निवेदन मात्र समझें।

इस पुस्तक के सम्पादन और इसकी भूमिका लिखने में मैंने बहुत से विद्वानों की कृतियों का उपयोग किया है। मैं उनके लेखकों और प्रकाशकों के प्रति अपना आभार प्रकट करता हूँ।

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान के सम्मान्य संचालक श्रद्धेय मुनिवर पद्मश्री जिनविजयजी का मैं कृतज्ञ हूं कि जिन्होंने इस पुस्तक का प्रकाशन प्रतिष्ठान से करना स्वीकार किया। इस पुस्तक के सम्पादन में, सामग्री के प्रूफ संशोधन में महत्त्वपूर्ण मार्ग-निर्देशन देकर प्रतिष्ठान के उप संचालक श्री गोपालनारायणजी बहुरा ने जो रुचिपूर्वक योग दिया है तदर्थ मैं चिरऋणी रहूँगा। प्रतिष्ठान के प्रवर शोध सहायक श्री पुरुषोत्तमजी मेनारिया को भी मैं धन्यवाद देता हूँ कि पुस्तक के प्रकाशन में इनका आद्योपान्त सहयोग रहा है।

१० जुलाई, १९६१,
हिन्दी विभाग,
जसवन्त कॉलेज,
जोधपुर।

रामप्रसाद दाधीच

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

बूंदीनरेश हाडा रावराजा बुधसिंहजी कृत

नेहतरंग

अथ श्रीनेहतरंग

।।दं०।। ओम् नमः ।।श्रीगणेशाय नमः।। श्री सरस्वत्यै नमः ।। श्रीगुरुभ्यो नमः ।।

दोहा – शुंडादंड[1] उदंड अति, चंदकला षुलि साथ।
विघनहरन[2] मंगलकरन, जं[3] गजमुष गननाथ[4] ।। १

छप्पय – मदन - मोदकर - बदन[5] सदन बेताल[6] - जाल - व्रत।
भक्त - भीत - भंजन अनेक जिन असुर - बंस - हृत[7]।
चन्द्रहास कर चंड चंडमुंडादि - रुहिरमय।
अनलझालजुत[8] भाल लाललोचन बिसाल[9] जय।
जय जय अचिंत[10] गुन-गन-अगम, आत्मसुख[11] चैतन्यमय।
जय दुरतिहरण[12] दुर्गा जननि, राजति[13] नवरसरूपमय।। २

कवित्त – एक वोर[14] मंगा गंगा सोहै[15] एक वोर आधैं[16],
छूटि रहे केस आधैं छूटी जटा भेसकौं[17]।
आधैं दुपटा[18] है[19] लंक सोहत बघंबर सौं,
सोहैं ससि भाल नव बेस केल बेसकौं।।
आषिन तरंग भंग भ्रिकुटी अनंग बर,
दैंन कौं उमंग राजैं[20] भसम उजेसकौं।
भूषन फनेस सुर सेवत सुरेस बेस,
मेरी वोर की हमेस आदेस भूतेसकौं[21] ।। ३

---

१. १ ख. सुंडादंड। २ ख. विघनहरन। ग. विंघनहरन। ३ ख. जय। ४ ख. गणनाथ।
२. ५ ख. वदन। ६ ख. वेताल। ७ ख. हत। ८ ख. अनलजालव्रत। ग. अनलजालव्रत
९ ख. विशाल। १० ख. जय। ग. अनंत। ११ ख. ग. आतम।
१२ ख. ग. हरन। १३ ख. राजत।
३. १४ ख. ओर। १५ ग. सोहे। १६ ख. आधे। १७ ख. भेसको। १८ ख. दुपटा।
१९ ख. हे। २० ख. राजें। २१ ख. भूतेशकौं।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

दोहा – रूप-सुधा-रस सरससौं, बरन[1] हंस मिलि संग।
नीरज नवरस रंग करि, नेहतरंग तरंग ।। ४

रस बिभाव[2] अनुभाव अरु, सब संचारी भाव।
भाषा बरनि बताइहौं, ज्यों दरपन दरसाव ।। ५

जामैं[3] स्थायी-भाव रति, सो बरन्यों शृंगार।
यक संजोग बियोग यक, ताके[4] द्वय[5] परकार[6] ।। ६

अथ श्रीराधिकाकौं संजोग-शृंगार यथा

कवित्त – प्रीतिके उपायनसौं भांति भांति भायनसौं,
सहज सुभायनके भायनकौं लै रहे[7]।
निपट[8] प्रगट उघटत न घटत नट,
सु लटैं सुघट उछटनि छबि छै रहे ।।
बृंदाबनचंदके दरस पर बारबार,
जीतिबेके जंत्रनसे[9] जतन जितै[10] रहे।
खंजन पटंतर न लागत निरंतर,
सो नैंनां पट - अंतर धनंतरसे ह्वै रहे ।। ७

अथ श्रीराधिकाकौं बियोग-शृंगार

[**यथा** – ऊधौ क्यों[11] न कहो जाइ[12] स्यांम सुखदाइकसों,
वृजमें[13] विरंचि एक विधि नइ वांधी हैं।
हेरि काम गोपिनके दृग-मृग पहिचांनि,
सांवन बंदूक कंध पावसकै कांधी हैं ।।
गाजतें करें[14] अवाज जाम लगी[15] लगाये वीज,
ससति संभारिके अचूक ताकि नांधी है।

---

४. १ ख. बदन।
५. २ ख. विभाव।
६. ३ ख. जामें। ४ ग. वाके। ५ ख. दोय। ६ ख. प्रकार।
७. ७ ख. रहैं। ८ ख. निघट। ९ ख. जंत्र। १० ख. जते।
८. ११ ख. ग. क्यौं। १२ ख. जाई। ग. जाय। १३ ख. बृजमें। ग. ब्रजमें।
१४ ग. करें। १५ जामे लगी। ग. जामगी।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

परी अधर परी अनपरी ए न होंहि बूंद,
गोरी एक मारी एक छोडी एक साधी[1] है ॥ ८

अथ नायकवर्णन

दोहा – सुन्दर सकल कलानिपुन, अति प्रवीन सुख साज।
प्रीतवंत गुनवंत अति, सो नायक ब्रजराज ॥ ९
च्यारि भेद ताके सुनह, अनकूल हियकों[2] देखि।
दक्षिन दुतिये त्रतिय सठ, धृष्ठ सु चोथा[3] लेखि ॥ १०

अथ अनुकूल लछिन

हित करिके[4] नितप्रति रहै, निज नारीकै सूल।
अनित चित चंचल नहीं, ताहि कहत अनुकूल ॥ ११

कवित्त – चन्द्रकों[5] चकोर ज्यौं दिवाकरकों[6] चक्रवाक,
जैसे मघवांनकों कलापी वरजोरी हैं।
जोगी जोग-ध्यानकों जुराफा ज्यों[7] जुरानकों,
महोदधिके थानकों मराल मति मोरी है।
ए री बलि चंदमुखी तेरे मुखचंद पर,
वृंदांवनचंदकी लगनि यों[8] निहोरी है।
चाय[9] वरजोरी यन चातकन[10] लोचननि,
चातकतें[11] चोरी कैंधो चातकन चोरी[12] है ॥ १२]*

अथ दक्षिन लक्षन

दोहा – पहलौ[13] सौहित[14] सहज उर, अति विचित्र समप्रीति।
मन चालै तन बसि रहै, इह दक्षनकी रीति ॥ १३

---

८. १ ग. सांधी।

१०. २ ग. हियकु। ३ ग. चोथौ।

११. ४ ख. ग. करिकै।

१२. ५ ग. चंदकौं। ६ ग. कौं। ७ ख. ग. ज्यौ।
८ ग. यौं। ९ ग. चापि। १० ग. घनवातक।
११ ग. तैं। १२ ग. चौरी।

*टि०– बड़े कोष्ठकमें दिये गये छन्द मेरे पास उपलब्ध प्रतिमें नहीं थे। ये छन्द श्रद्धेय अगरचंदजी नाहटा, बीकानेरसे प्राप्त प्रतिमेंसे लिये गये हैं। (सं०)

१३. १३ ख. ग. पहिलो। १४. ख. ग. सोहित।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

सवैया – आज लसैं ब्रजनारी सबै, जमना तटपैं जुरि आई अलेषैं ।
ता समैं आप कढे नंदनंदन, सोहैं चढ़े उपमांन बिसेषैं ।।
रीझि रही अपनैं अपनैं मन, देषि सबै प्रगटें य्यों असेषैं ।
कोरि चकोरनकी चित चाह, रही जैसें चौदहैं[1] चंदके देषैं ।। १४

अथ सठलक्षन

दोहा – मीठी बांनी[2] मुषि लयें, हियें कपट पहचांनि[3] ।
दूषनसौं दूरि न रहै, सो सठनायक जांनि ।। १५

कवित्त – अैसी यहं[4] रीतिसौं लुभांनै[5] बलि बारंबार ,
कहीहू न[6] जात सुनी बात न जे चलियां ।
रावरै तौ रीझि इनं बातनकी परी आय ,
चंद चाहि चंदमुषी मिलियां न गलियां ।
भीजी अनुराग उन अंगनकैं राग अंग ,
अंग प्रति राग जाकैं रंगरीझ छलियां ।
चन्द्रिकान चलियां चकोरूंकी[7] अवलियां[8] वे[9] ,
चौकीदार[10] भई हैं चंबेलिनकी[11] कलियां ।। १६

अथ धृष्टलक्षन

दोहा – गारि-मारकी त्रास सब, नहीं अंग लवलेस ।
पेस मिलैं[12] सब जाइगां, लषौ धृष्टि इहि भेस ।। १७

यथा – आजु कहौं[13] फिरि काल्हि कहौं, परसौंकौं, कहौं बिन बातन जीहैं ।
केते षिजैं बरजैं लरजैं, तरजैं न तऊ अरजैं समही हैं[14] ।
लाज न लेस कुलाज कलेस न, अैसी हमेस न रीति नई हैं ।
प्रीति सरीति[15] कितेकनसौं[16], पै लियें फिरैं चाहि चकोरनकी हैं ।। १८

---

१४. १ ख. चोदहें ।

१५. २ ख. वानी । ग. बानी । ३ ख. ग. पहिचानि ।

१६. ४ ख. यहै । ग. यह । ५ ख. लुभाने । ६ ख. रहीहून । ७ ख. चकोरोकी । ८ ख अबलीयां । ९ ख चे । १० ख. चोकीदार । ११ ख. चबेलीनिकी ।

१७. १२ ख. मिले । १३ ख. कहो । १४ ख. तन ऊपर जैसे मही है । १५ ख. सी रीति । १६ ख. कितेकनिसौं ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

अथ पद्मनादिक नायकाबर्नन

दोहा – यकु तौ[1] पद्मनि कहत हैं, दुतिय[2] चित्रनी होइ ।
त्रितिय[3] हस्तनी चतुर्थी, संषनि जांनहुं सोइ ।। १९

अथ पद्मनीलक्षन

दोहा – कनकबरन कौंधनि[4] हसनि, चितवनि चितकी वोर[5] ।
पद्मनि सलज सरूप त्रिय, सौरभ 'परत झकोर' ।। २०

यथा – आजु मैं देषी है[6] गोपसुता मुष, देषैतैं चन्द्रमा फीकौ ह्वै[7] जोतो ।
गोरे गुलाबकी आबहूतैं, गहराई गुराईकैं संग समोतो ।।
सिंधुसुता सम ताकैं समांन, सो वा बलिकौ रंग ओर अन्होतो ।
होती जो कुंदनकै अंग वास जौ, जौ कछु[8] केतकी कांटौ न होतो ।।२१

अथ चित्रनीलक्षन

दोहा – बात[9] गात मति जासमैं, अति विचित्र गति होय ।
तासौं कहियत चित्रनी, परम पुरानैं लोय ।। २२

यथा – आजु मुषचंद[10] पर रोचन-रचित भाल ,
अैंही ब्रजचंदके बिकांवनि सिताबकी ।
छाजति छबीली छबि बरनी न जात मोपै[11] ,
हरनी हितूजनके हियके हिताबकी ।
रतिकी न रंभाकी न सची उरबसीकी न ,
वारि-वारि डारियत उपमा किताबकी ।
गालिब गुलाबकी न पंकजके आबकी न ,
रही आफताबकी न ताव महताबकी ।। २३

अथ हस्तनीलक्षन

दोहा – चित चंचल गति मंद सब, भारे अंग बषांनि ।
ताहि हस्तनी कहत हैं, चतुर चित्त पहचांनि ।। २४

---

१९. १ ख. इकतौं । ग. यकुतो । २ ख दुतीय । ३ ख. तत्रतिय ।
२०. ४ ख. कोंधरि । ५ ख. चितकी चोर ।
२१. ६ ग. हैं । ७ ग. है । ८ ग. कहुं ।
२२. ९ ख. वात ।
२३. १० ख. मुषचंद्र । ११ ख. मोपें ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

यथा – सरदके चन्द्रमासौ राजत बदन - चंद,
छूटे केसपास भारे लंक बिसतारे[1] हैं।
कंचनके कुंभ जैसे[2] उंनत[3] उरोज अति,
भारे भारे अंग गहि भायकै उतारे हैं।
चितवनि हसनि चलनि चातुरीसौं चारु,
अैसी उपमांनि[4] निरधार न बिचारे हैं[5]।
मांन मद[6] परवे गुमांन गति परवे सो,
तेरी गति गरवे गयंद लषि हारे हैं॥ २५

अथ संषिनीलक्षन

दोहा – कोप-कपट-परवीन-तन, तीछन लोम अपार।
अति करूप सो संषिनी, कबिजन कहत विचार॥ २६

यथा – भूरे त्यों[7] केस कुबासकी[8] भूरिसौं[9], लोम भरे तन सूळ सरे हैं।
भूलि हसै न रसै रससौं[10], लषि लागत हैं[11] दुष कासौं भरे हैं॥
जा तनके लगे पौंन[12]कौं पाइ, सिराइकैं जे छितिपै बितरे हैं।
चाहि भुलाइ[13] झुकैं दुषहाल, बिहाल ह्वै कैं घनैं भौर परे[14]हैं॥ २७

इति श्रीनेहतरंगे रावराजा श्रीबुद्धसिंह सुरचते अनुकूलादि नाइक-पद्मनादिक नाइका निरूपणं नांम प्रथमो तरंग।

★

अथ दरसन

दोहा – अब दरसन सुनि च्यार बिधि[15], इक साक्षात सुरूप[16]।
दुतिय श्रवन त्रितिय[17] सुपन, चौथौ[18] चित्र अनूप॥ २८

अथ साष्यातदरसनलक्षन

पिव प्यारी प्यारी पिया, देषैं[19] अपनैं नैंन[20]।
सो दरसन साष्यात कहि, तन मन सब सुख दैंन[21]॥ २९

---

२५. १ ख. विसतारे। २ ख. अैसे। ३ ख उन्नत। ४ ख. उपमांन। ५ ख. विचारे हैं। ६ ख. मदन।

२७. ७ ख. ग. भ्हरेत्यों। ८ ख. कुवासकी। ९ ख. भूरिसो। १० ग. रससौं। ११ ख. है। १२ ग. पौन। १३ ख. भुलाई। ग. लुभाई हुकैं। १४ ग. परैं।

२८. १५ ख. विधि। १६ ख. ग. सरूप। १७ ख. त्रतिय। १८ ख. चोथो।

२९ १९ ख. ग. देखे। २० ख. नेन। २१ ख. देन।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

अथ श्रीराधाजूकौ साक्षातदरसन

आजु लषे ह्वै ते ग्या मगकौं, वह ता छिन तैं[1] छकि नैंना रहे हैं ।
पार परौसी[2] सबै[3] घरके कहिबे, सुनबे सबहीकौं[4] कहे[5] हैं ।।
फूलि है धौं घर आंपनके[6] लगि[7], सोच संकोच बढ़े बन ये हैं ।
क्यौं[8] बृजमैं बसिबौ[9] सजनी, बृजचंद तौ चौथिकौ[10] चंद भये हैं ।। ३०

अथ श्रीकृस्नकौ साक्षातदरसन

यथा – आजु लषी वह तीर कालिंद्रीकैं[11], चंद्रिका रंगसौं अंगभरी सी ।
छूटी लटैं[12] उघटैं[13] मुषपै[14], न घटैं[15] न मनौजकैं[16] मंत्रफुरी सी।।
वोढनी लाल हर्यो लहंगा, सु करी मांनौं चंद्रमा चीरि धरी सी ।
रूपकी लूटि पें जूटि परी, सु परी असमांनसौं[17] छूटि परी सी ।।३१

अथ श्रवनदरसन लक्षन

दोहा – सुनत अंग प्रति अंगकी, दरसै[18] गति[19] मति आइ ।
श्रवनदरस ताकौं[20] कहैं, कबिता[21] कबि ता गाइ[22] ।। ३२

अथ श्रीराधिकाकौ श्रवनदरसन

यथा – जा दिनतैं[23] बलि रावरी बात, कही मैं[24] कितेकनिसौं[25] रस सौंहैं[26] ।
एक अटारी रहै पग[27] रीझि, घटै न मिटै न लटै बरज्यौं[28] हैं ।।
चात्रगसी[29] सफरीकें सलूक, भई नफरी अफरी अर त्यौं[30] हैं ।
देषिबे राउरकौं[31] तरसें, दरसें कितह्वै परसें कित ह्वै हैं ।। ३३

---

३०. १ ख. तें । २ ख. ग. परोसी । ३ ख. सबे । ४ ख. को । ५ ख. कहै । ६ ख. आपनके, ग. आपनिके । ७ ख. गित । ८ ख. क्यों । ९ ग. वसिवो । १० ख. चोथि को ।

३१. ११ ख. कालिंद्रीके । १२ ख. लटें । १३ ख. उघटें । १४ ख. मुख पे । १५ ख. घटे । १६ ख. मनोजकें । १७ ख. असमांनसों ।

३२. १८ ख. दरसे । १९ ख. गति । २० ख. ताकों । २१ ख. कविता । २२ ख. गाय ।

३३. २३ ख. दिनसें । २४ ख. में । २५ ख. निसों । २६ ख. सोहैं । २७ ख. पगि । २८ ख. बरज्यों । २९ ख. चात्रकसी । ३० ख. त्यों । ३१ ख. ग. रावरे ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

अथ श्रीकृस्नकौ श्रवनदरसन

यथा– पांनकौ षांन बिधांनकौ[1] मंजन, भूले सुगंध लगायबौ भोगी ।
ध्यांनकौ साच गुमांनकौ धारन, ज्यांनकौ ग्यांन करचो जिम जोगी।
प्रेमपगेसे जगेसे षगेसे, रंगे उमगेसे लगेसे बिवोगी[2] ।
ऐसे भए बलि बात सुनैं सुन, जांनिए देषैं कहा गति होगी ।। ३४

अथ सुप्नदरसन लक्षन

दोहा– परम भांवतौ[3] मित्र तह, सुपनैं दरसै आय ।
सुपनदरस तासौं[4] कहैं, सुभग रसनि सरसाय ।। ३५

अथ श्रीराधिकाकौं सुप्नदरसन

यथा– कोरि कलानिधि आधिक आज, लषैं भरी[5] नीदमैं त्यौं[6] अभिलाषैं[7] ।
चक्रत[8] चौंप[9] चकोरनकी[10] कियें, औरकी[11] उपम[12] चूरिसी नांषै ।।
सो छबि यौं सरसी सरसी, दरसैं अनभौ[13] इन मो पल पांषैं ।
लागी हुतो सुघरी सुधरी, उघरी कित बैरनि बैरनि[14] आषैं ।।३६

अथ श्रीकृस्नको सुप्नदरसन

यथा– चंद अमंदसी चंद्रिकासी लषी, सोवत ही जोही वाहो अहीरो ।
लागसी लालचसी गुन आधसी, ऊपमता नही जात कही री ।।
रंगभरीसो हरीसी परीसो, षरी सुथरी अलकैं बिथुरी री ।
एन[15] सगी री सो रैंनि[16] जगी लगो पापनी ए पलकैं[17] न रही री ।।३७

अथ चित्रदरसन लक्षन

दोहा– चित्र देषि निज मित्रकौ, मनसुष पावै मित्र ।
लहिये[18] हित जामैं अधिक, कहिये[19] दरसन चित्र ।। ३८

---

३४. १ ख. को । २ ग. विवोगी ।
३५. ३ ख. भावतो, ग. भावतौ । ४ ख. सो ।
३६. ५ ख भर । ६ ख. त्यों । ७ ख. अभिलाषें । ८ ख. चक्रित । ९ ख. चोप । १० ख. चकोरनिकी । ११ ख. ओरकी । १२ ख. उप्पम । १३ ख. अनभो । १४ वैरनि ।
३७. १५ ख. देन । १६ ख. रेन । १७ ख. पलकें ।
३८. १८ ख. लहियै । १९ ख. कहियै ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

अथ श्रीराधिकाकौं चितदरसन

यथा– बृंदाबनचंदकी[1] सबीसौं[2] मन मोहित कैं[3] ,
केते अभिलाषके हुलास ह्वै लसै रही ।
नैंननिसौं[4] नैंननि लगाइ[5] टक[6] लाइ चढि ,
चाइ चौंप चौगुनी[7] उपाइ[8] उमगै रही ।
रीझि रस भीजिकैं दरस मतिवारी[9] ह्वै कें ,
मैंनकी[10] तरंगनि तुरत तन तै रही ।
पत्र गहि अत्र फुरे मंत्र जंत्र तंत्र सम ,
चित्र देषैं[11] मित्रकौ बिचित्र[12] आपु ह्वै रही ।। ३९

अथ श्रीकृष्णकौ चित्रदरसन

यथा– देह चपलासी सिंधुवारी अबलासी[13] सौहै[14] ,
हांसी चंद्रिकासौं नांही चंद्रिका लजायनौं ।
अलकनि ब्याल मोतीमाल लंक[15] हाल लषै[16] ,
जा तन बिसाल[17] अति सोभाकौ सराहनौं[18] ।
केती अंग-अंग रंग रंगनकै[19] संग केती ,
आवैं न तरंग लाग्यौ आउत[20] उराहनौं ।
रूप उन हेरा नहि आवै उनहेरा यातैं ,
मैंघौं[21] भयौ बृजमैं[22] चतेराकौ बिसाहनौं[23] ।। ४०

इति श्री नेहतरंगे राउराजा श्रीबुद्धसिंघ सुरचते चतुरबिधि दरसन निरूपण नांम दुतियौ तरंग

★

अथ नायकाभेद बर्नन

दोहा– मुगधा मध्या जानियैं, तीजी प्रोढा नारि ।
च्यारि-च्यारि[24] बिधि[25] एककी, कबिता मत निरधारि ।। ४१

---

३९. १ ख. व्रंदावनचंदकी । २ ख. सखीसौं । ३ ख. मन मोहितके । ४ नैंननिसौं । ५ ख. लगाय । ६ ख. छटक । ७ ख. चोगुनी । ८ ख. उपायई । ग. उपायइ । ९ ख. मतवारी । १० ख. मेंनकी । ११ ख. देखें । १२ ख. ग. विचित्र ।

४०. १३ ख. अवलासी । १४ ख. सोहें । १५ लक । १६ ख. लखे । १७ ख. विशाल । ग. विसाल । १८ ख. सराहनों–ग. सराहनौ । १९ ख. रंगनकौ । २० ख. आवत । २१ ख. मेघों । २२ ख. ब्रजमें । ग. ब्रजमैं । २३ ख. विसाहनों ।

४१. २४ ख. च्यार-च्याए । २५ ख. विधि ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

अथ मुगधाभेद

दोहा– नवल वधू[1] नवजोबनां,[2] नबलअनंगा[3] जांनि ।
लज्जा-प्राय-रता-तिया, च्यारि भांति पहचांनि ॥ ४२

अथ नवलबधू मुगधालक्षन

दोहा– जाकौं कहि[4] नवलबधु[5], बढ़ै अंग दिन-जोति ।
चढि-चढि त्यौं[6] ससि-बर-कलां, ज्यौं-ज्यौं बढती होति ॥ ४३

यथा–अंगनसौं इत रंगनसौं, उझलै अंग चांदिनीसी छबि छांई ।
नैननितें प्रति - बैंननितें[7], सक सैंननितें सरसें सरसांई ।
अैसी भई दिन च्यारिकतें[8], बृजचंदहूकी मतिकी दुरसांई ।
देषत दूनी कलासी चढ़ै सु, बढै दिन द्वैजके चंदकी नांई ॥ ४४

अथ नवजोबनां मुगधालक्षन

दोहा– जो नवजोबन बरनिये, मुगधाकौं यह रंग ।
सिसुताई निकसै प्रगट, जोबन प्रगटै अंग ॥ ४५

यथा– अब ही तै होत चली उकसौंही[9] छतियां ये ,
बतियां हसौंही[10] षूब सूरती सषत पैं ।
कटि पर लूटि परी उन्नत नितंबनकी[11] ,
जूट परी छबि कोर - कोरक नषत पैं ।
तेरे अंग जाहर जवाहरकी जोति पर ,
गालिब गुलाब कौंन चंपाके बषत पैं ।
फरकत नैननसौं लषती कहूंसौं लषि ,
सषती परैगी[12] रबि[13] चंदके तषत पैं ॥ ४६

अथ नवलअनंगा मुगधालक्षन

दोहा– नवल-अनंगा होति तिय, मुगधा अति सरसात ।
षेलनि बोलनि चलनि मृदु, कांमकथांनि[14] डरात ॥ ४७

---

४२. १ ख. वधू । २ ख. नवजोवनां । ३ ख नवला-अनंगा ।
४३. ४ ख. कहियत । ५ ख. ग. नवलवधू । ६ ख. त्यों । ग. त्यौ ।
४४. ७ ख. वेननितें । ८ ख. च्यारकतें ।
४६. ९ ख. उकसौंहीं । ग. उकसौही । १० ख. हेसोही । ११ ख. नितंबकी ।
१२ ख. परगी । १३. ख. ग. रवि ।
४७. १४ ख. कामकलानि ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

यथा–लागी भलैं[1] बृजचंदके नैंननि, या छबि ता लगि नैंननि भीनी ।
यौं[2] प्रगटी अंग औरै[3] कछू, लषि नाजकता निज लंक लै लीनी ।।
पास परोस कहा कियौं तैं[4] बलि, अैसै प्रकास अकासलौं[5] लीनी ।
तैं[6] उन नैंन-पतंगनिकौं[7] दिन च्यारितैं[8] देहरी-दीपक कीनी ।। ४८

अथ लज्जा-प्राय-रता मुगधालक्षन

दोहा– लज्जा-प्राय-रता तिया, कहिए इहि विधि आंनि ।
सुरत करै लज्जा लये, या लक्षिन[9] सौं जांनि ।। ४९

यथा–आवै नहीं नवला नव लालकी, सेज सषीजन केतौ जकीसी ।
नींठि बसीठकी दीठिसौं पीठि दै[10], सोई सकीसी जकीसी थकीसी ।।
नीबीकौं[11] लाल गह्यौ करमैं, नष हीरनकी जहां जोति ढकीसी ।
मांनौ[12] छप्यौ रबि[13] कंजकली, चहुं वोर[14] तरैंया रही उझकीसी ।। ५०

अथ मुगधाकौ सुरत

यथा–आनी अलीन छली छलसौं, मिलि सोहत चंचलासी उघरीसी ।
पीय समैं[15] परिरंभनकै, परजंकपैं[16] लंककी लूरि परीसी[17] ।।
यौं छबिसौं परसैं दरसैं, सरसैं इन उपमताई[18] हरीसी ।
ज्यौं[19] जबरी-जबरी जकरी, बसरी मनौं जालपरी[20] सफरीसी ।। ५१

अथ मुगधाकौ सुरतांत

यथा–अैसैं लसैं रदनंछित[21] तैं, उठैं प्रात समैं छबि चंदकी मोहैं ।
भौंहैं[22] कलंक सुधा अधरामृत, नैंन कुरंगनकी[23] गति जोहैं ।।

---

४८. १ ख. भले । २ ख. दों । ३ ख. औरें । ४ ख. कियोंतो । ५ ख. अकासलों ६ ख. ते । ७ ख. नैंन पतंगन । ८ ख. च्यारतें ।

४९. ९ ख. लक्षन ।

५०. १० ख. दें । ११ ख नीवीको । १२ ख मांनों । १३ ख. रवि । १४ ख. चवुं ओर । ग. चहुं वौर ।

५१. १५ ख. समें । १६ ख. परजंकपें । १७ ख. परिसी । १८ ख. ग. उप्पमताई । १९ ख. ज्यों । २० ख. लाजपरी ।

५२. २१ ख. रदनछित । २२ ख. भोहें । २३ ख. कुरंगनकी ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

सिंधु कढ्यौ सो[1] कढ्यौं इह रैंनसौं[2], जात अकासहि अैसैं रुक्यौ[3] है ।
बांधी ये[4] ज्यौं अलिमाल मनौं, अटक्यौ जुलफौंकी जंजीरनसौं है ॥ ५२

इति मुगधा ।

अथ मध्याभेदकथनं

दोहा– मध्या आरुढ़ - जोबनां, प्रगलभवचना नारि ।
प्रादरभूतमनोभवा[5], सुरतबिचित्रा[6] च्यारि ॥ ५३

अध मध्या-आरूढ़-जोबनांलक्षन

दोहा– मध्या आरूढ़ - जोबनां, अैसैं बरनि बिसेष ।
सरद-सुधाधर मुष-दरस, अंग अंग छबि न असेष ॥ ५४

यथा– थाल नभ आइकैं[7] अक्षित नक्षित्र मेल्हि[8] ,
सोहै सुधा नेहसौं सनेह छबिधारी[9] हैं ।
सोलै-कला-बाती[10] सांझबंदन सुहाती सिषा[11] ,
चंद्रिका ज्यौं काजर कलंक उनहारी है ।
उदै ओर अस्ताचल सोही[12] दुहूंओर[13] करि ,
सषी साथ जोरी सो चकोरी परचारी है ।
राधे सुनि रावरे बदन पर बारबार[14] ,
भारतीनै चंदमय आरती उतारी है ॥ ५५

अथ मध्या-प्रगलभ-बचनां लक्षनं

दोहा– प्रगलभ - बचनां[15] जांनिये, जाकी अैसी रीति ।
बचनन मांझ उरांहनौं[16], देइ दिषावै प्रीति ॥ ५६

यथा– सालत रसाल मालतीकी माल लालन ,
कटीली बनलतांनकै लालच लटे रहौ ।
केतक[17] समैकौं सुष केतक-कलीसौं भूलि ,
सोनजुही मांझ सांझ - सवारे सटे रहौं ।

---

५२. १ ख. कढ्योसो । २ ख. रैंनिसौं । ३ ख. ग. रुको । ४ ख. बांधियै ।
५३. ५ ख. ग. प्रादुरभूत–मनोभवा । ६ ख. सुरत-विचित्रा ।
५५. ७ ख. आनन । ग. आइकै । ८ ख. मेलो । ९ ख. छविधारी । १० ख. सोलै-कलावाली । ११ ख. सिधा । १२ ख. सोई । १३ ख. दरी हूं ।
१४ ख. वारवार ;
५६. १५ ख. प्रगलभ वचनां । १६ ख. उराहनों । १७ ख. केतेक ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

ऐसी बलि काकै मंति कुंदकलिकाकैं काज ,
नेह करि कमलकलीसौं उचटे रहौ ।
लेहु अलिनायक[1] असीस निज सीस यह ,
निपट कपटकी लपट लपटे रहौ ।। ५७

अथ मध्या–प्रादुर्भूत–मनोभवालक्षन

दोहा– अंग-अंग छबि छाइकैं, रहै जु जोबन आइ[2] ।
प्रादुर्भूत - मनोभवा, ताहि कहैं कबिराइ[3] ।। ५८

यथा–काजरकैं षरसांन चढ़ी वै[4], बढी अंषिया भ्रकुटी चढि बाढी ।
गात गुराईकै रंगभरी सो, छटी कटि लूटि नितंबनि चाढ़ी ,
आय अचांनक दीठि परी, सु वही[5] मग कुंज कालिंद्री कैं ठाढी ।
चंचलासी कैधौं चंद्रिकासी, कि चिराकसी चंद्रसो चीरिकैं काढी ।। ५९

अथ मध्या-सुरत-बिचित्रालक्षन

दोहा– चतुर चाहि गति रति-समैं, बिबधि भाय रति-रीति[6] ।
रति-बिचित्र तासौं कहैं, कीनैं पतिवस[7] प्रीति ।। ६०

यथा–आजु लसै रतिरंग समै, सरसैं केती[8] अंग-तरंगनि झोकै ,
आंनन आननसौं उरसौं उर रीझि रही छबि ता अवलोकै ।
ता समै मांग मिल्यौ लरबंदीसौं, बीचि षुलैं उपमांनकी नोकैं ,
भालपैं टीका जरावकौं मांनो, रह्यो रबि राहकी राहकौं रोकैं[9] ।। ६१

अथ मध्या-सुरतांत

यथा– बिबधि-कलांन केलि कीनी रसभीनी अति ,
रंग-रस-सनी सब रजनी[10] बितै[11] रही ।
अरसौंहै गात हरि प्रात उठि जात लषि ,
तियकी बदन - दुति जनैं कौ कितैं रहो ।

---

५७. १ ख. अलिनाइक ।
५८. २ ख. आइ । ३ ख. कविराई । ग. कविराइ ।
५९. ४ ख. बे । ग. बैंबड़ी । ५ ख. सुबही ।
६०. ६ ख. रति-प्रीति । ७ ख. पतिवस ।
६१. ८ ख. कैती । ९ ख. रोके । १० ख. जगनी । ११ ख. विते ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

फिरि मिलिबेकों कह्यौ चाहत[1] कह्यौ न जात ,
भई अति छीन[2] पल ही में तनतै रही ।
तरुन - तपन - ताप - तापत कुरंग रुचि ,
लोचन न लाइ[3] मुषचंदही[4] चितै रही ।। ६२

अथ मध्या-धीरालक्षन[5]

दोहा– पतिकौं साअपराध लषि, कहै जु कछुक जताय ।
मध्या - धीरा नाइका[6], तासौं कहत बताय ।। ६३

यथा– झिलि-झिलि बृंदन[7] सुजात[8] अरिबिंदनकै ,
कुंदन-कमोदनकें मोद अनुकूले हौ ।
कहूं[9] अनकूले कहूं डूले[10] हौं सुबास-बस ,
कहूं रसलोभकें सुभाइ लगि भूले हौ ।
सौरभ-सुरंभन[11] सुजात मालतीन मिलि ,
हिए न[12] बिहार अनुराग निस फूले हौ ।
कैसें आजु सेवन सुगंध तजि सेवतीकौं ,
किन भ्रम[13] बेलिन भ्रमर आजु भूले हौ ।। ६४

अथ मध्या-अधीरा

दोहा– पियसौं अति सतराइकै, बांनी कहत न धीर ।
कबिजन तासौं कहत हैं, सो नायका अधीर ।। ६५

यथा– हासके बिलासनतैं[14] चंद्रिका - उजासनतैं ,
प्रभाके प्रकासनतैं जेब जुनियतु है ।
जोबन - तरंगनतैं सोभाके प्रसंगनतैं ,
रंग - प्रति - रंगन अनंग लुनियतु है ।

---

६२. १ ख. रह्यो चाहत । २ ख छीनि । ३ ख. लोचन न चावक ।
४ ख. मुषचंदहि । ५ ख. लक्षणं ।

६३. ६ ख. मध्याधीरा नायका ।

६४. ७ ख. झिलि-झिलि बृंदन । ८ ख. सु जानत । ९ ख. कहुँ । १० ख. दूले ।
११ ख. ग. सोरभ-सुरंभन । १२ ख. हिरान । १३ ग. किम भ्रम ।

६६. १४ ख. विलासनि ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

भौंहन - कमांननतैं तीषे - नैन - बाननतैं ,
कांनन - कसीसनतैं कैसे गुनियतु हैं ।
साधे केती भांतिन समाधे केते साधनसौं ,
आजु - काल्हि राधेनैं अराधे सुनियतु है ॥ ६६

अथ मध्या-धीराधीरा लक्षन

दोहा– पियकौं देत उराहनैं[1], कछू बिग्यतैं[2] आय ।
धीर - अधीरा कहत हैं, ताहि महा कबिराय ॥ ६७

यथा– आजु दरसत परसत यन[3] भाइनसौं[4] ,
सारी राति जागत[5] उंनीदी छबि छै रही ।
कैधौं[6] काहु[7] जोगनसौं काहूके संजोगनसौं ,
कैधौं काहू लोगनसौं रिसकैं रिसै रही ।
मेरी सौंहै मोसौं जौपैं कहौगे न साची देपैं ,
सोभातैं सुहातैं लाल डोरे बिरझै रही ।
हितसौं हरीसी लागी एन बसरीसी सोहैं[8] ,
नेह-नफरीसी आंषैं सफरीसी ह्वै रही ॥ ६८

॥ इति मध्या ॥

अथ प्रोढ़ाभेदकथन

दोहा– कहि समस्त-रस-कोबिदा, चित्र-बिभ्रमा[9] जांनि ।
आक्रामति लबधा यहै, प्रोढा[10] च्यारि बषांनि ॥ ६९

अथ समस्त-रसकोबिदालक्षन

दोहा– जो समस्त - रसकोबिदा, ताकौ यहै उदोत ।
जहां[11] रीझि रीझत पिया, तंही[12] रीझ सम होत ॥ ७०

यथा– चपलाइ चौसरं चंबेलि गुन मौंसर ता ,
चंदन मिलन मिलि उपमांसी जौन्हमैं ।

---

६७. १ ग. उराहनौ । २ ख. विग्यंतैं ।
६८. ३ ख. इन । ४ ख. भाइनीसौं । ५ ख. जागती । ६ ख. केधों । ग. कैंधो । ७ ख कहूँ । ८ ख. सोंहे ।
६९. ९ ख. ग. चित्र विभ्रमा । १० ख. प्रौढ़ा ।
७०. ११ ख. ग. जहि । १२ ख. ग. ताहि ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

परम प्रकास नेह - दीपक संजोइ दसा ,
बृजके चवाय धूप अगरके हौंनमैं[1] ।
बृंदाबन - चंद - चित आरती उतारि लाज ,
ध्यांन मुषचंद चाइ चंद्रिकाके भौंनमैं[2] ।
फिरि - फिरि साधे इनि नैंननि समाधे वेई ,
तेंही जु अराधे राधे आधीक चितौंनमैं[3] ॥ ७१

अथ प्रोढा-बिचित्र-विभ्रमांलक्षिन

दोहा– सो बिचित्र[4] कहि बिभ्रमां, जाकी अैसी रीति ।
दीपति जाके देहकी, पियहि मिलावै प्रीति ॥ ७२

यथा–बोलिबौं[5]बोलनिकौ अवलोकिबौ[6], तीषे मनौजके[7] मंत्रसे राषैं ,
छूटी लटैं[8] लग[9] केसरि-खोरि समांन न उप्पमता नहि नाषैं ।
असे अनौषेसे अंगनपैं[10], भ्रमैं[11]भौंर[12] ज्यौं प्रीतमके अभिलाषैं ,
तेरी चढी-चढी आंषिन ऊपर[13], वारौं बडी-बडी पंकज-पाषैं[14] ॥ ७३

अथ प्रोढा-आक्रांमतिलक्षन

दोहा– कहि आक्रामति[15] नायका[16], जाकौ अैसौं हेत ।
नायक बसि कीनौं[17] निपट, मन-बच-क्रमनि समेत ॥ ७४

यथा– आजु बलि सोहै अैसैं सारी बृजसषिनमैं ,
उझली परत सोभा भारो अनुरागकी ।
सारी जालदार सो किनारी जरतारीदार ,
छूटे केसपास सोहैं लंक लगलागकी ।
तापैं षुली महदी महाउर[18] सरस रंग ,
सौतिनके जोतिवेके जंत्र तकतागकी ।
नहरैं सुधाकी गति गहरैं अनेक मांनौ ,
छहरैं छिपाकरतैं लहरैं सुहागकी ॥ ७५

---

७१. १ ख. होंनमैं । २ ख. भोंनमैं । ३ ख. ग. चितोनमैं ।
७२. ४ ख. विचित्र ।
७३. ५ ख. ग. बोलिबो । ६ ख. अवलोकिवो । ७ ख. मनोजके । ८ ख. लटें ।
९ ख. लगि । १० ख. अंगनपे । ११ ख. भ्रमे । १२ ख. भोंर । १३ ख. उपर ।
१४ ग. पंकज पांषै ।
७४. १५ ख. आक्रामनि । १६ ख. नाइका । १७ ख. जानों । ग. कीनौ
१८ ख. महावर ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

अथ प्रोढा-लबधातिय लक्षन

दोहा:- तिय लबधा सो जानिए[1], बरनत[2] सुकबि[3] बषांन ।
कुळ - लज्जा मांनत सकल, दीपति देव समांन ।। ७६

यथा- आजु छबि देत बलि राधे बृजचंद साथ ,
अंग - अंग उमगत जोबनकी जौरैंतैं[4] ।
केसरिकै रंग नित रंग सोहै केतकीके ,
कमल गुलाब कहा चंपक निहोरैंतैं ।
अैसैं लषि रीझिकैं लसत[5] रीझि कुंज-भौंन ,
उप्पम न[6] आवै कछु मेरे चित चोरैंतैं ।
चांदिनी सुदेस-मुष-चंदकौं[7] निहारि करि ,
चाकरसे ह्वै चले चकोर चह्वँ ओरैंतै[8] ।। ७७

अथ प्रोढ़ासुरत

यथा- सोहैं परजंक पर प्रीतमकैं संग अैसे ,
राजै अंग-अंग प्रति आंनद हिल्यौसौ है ।
बिथुरत[9] अलक सलिल श्रमजल छूटि ,
हार उर टूटि अंग-अंगन मिल्यौसौ है ।
अैसैं बिपरीति समैं आंननकी छबि दोन्यौं ,
आय उपमांसौं इन नैंननि तुल्यौंसौ है ।
कलाकैं षुल्यौसौ चंद्रिकासौं[10] उझल्यौंसौ ,
ज्यौं चल्यौसौ रबि राह पर चंद्रमा मिल्यौसौ है ।। ७८

अथ प्रोढ़ासुरतांत

यथा- रैंनिकी जागी सो प्रात जगैं, षुले हारसौं अंगपै ओप बिजैंठौ ।
यौं बिथुरी अलकैं उरपैं, अलकावलि एक उरोज अमैठौ ।।
पांवन जानि अपांवनकौंसो, यहै जिय जानि मनोरथ अैठौ ।
संभुकै सीस महाविष हाल, मनौं रुष ब्याल बिहाल ह्वै बैठौ ।।७९

---

७६. १ ख. जानियें । २ ख. वरनत । ३ ख सुकवि ।
७७. ४ ख. जोरते । ५ ख. लसनू । ६ ख. उप्पमा न । ७ ख. सुदेषमुखचंदकौं । ८ ग. चिहुंओरैतैं ।
७८. ९ ख बिथुरक । १० ख. चंद्रकासौं ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

अथ प्रोढ़ा-धीरालक्षन

दोहा– प्रोढ़ा - धीरा - नायका[1], धीरज लयें अछेह ।
कछु रिस[2] प्रगटै पीयकौ[3], और ठौर लषि नेह ॥ ८०

यथा– मोरनके छंद छूटि जटी[4], षुलि जावक भालमैं लोचन लाये ।
अंबर पीत बघंबर ज्यौं, अंगराग बिभूतिनसौं छबि छाये ॥
जूटि भुजंगम त्यौं अलकैं, मिलि चंदसै भाल अमी बरसाये ।
रीझि कहा कहौं पेस सबै, मेरे नेह सुंदेस महेस ह्वै आये ॥ ८१

अथ प्रोढ़ा-अधीरालक्षन

दोहा– पिय अपराधी जांनिकैं, रिस करि रूषी होइ ।
प्रोढा ताहि अधीर तब, बरनत हैं सब कोइ ॥ ८२

यथा– साची कहौ जाकी मांनत सौंह सो, कौंनकै[5] नेह रहे सरसे हौ ।
रैंनि जगी अंषिया तरजी, बिरझी रंग अंगनसौं अरसे हौ ॥
जावो जहां मिलि आए तहां, हमकौं इन बातनिसौं परसे हौ ।
चंद ह्वैकैं कितहू दरसे, यतकौं[6] रबि[7] ह्वैकरिकैं दरसे हौ ॥ ८३

अथ प्रोढा-धीरा-अधीरालक्षन

दोहा– धीरज बि अधीरके[8], कछू कहति जो बैंन[9] ।
प्रोढा-धीरा-धीर तिह[10], कहि बरनत कबि तैंन[11] ॥ ८४

यथा– लोचन वै बरही जनके, अति रीझि रहें छकिसे छबि सौंहैं ।
रैंनि रहे मिलिकैं उतही, उमडे फिरि कौंन हितू जति सौंहैं[12] ॥
आय यतै दरसे सरसे. घनस्यांम यौं कौन गही गति सौंहैं ।
आजु बडी-बडी बूंदनसौं, गरजे कित बरसे कितहू हौंहैं ॥ ८५

इति श्रीनेहतरंगे रावराजा श्रीबुद्धसिंघ सुरचते नायका मुग्धा-मध्या-प्रोढा-धीरादि-भेद निरूपणं नांम त्रितियौ[13] तरंग

---

८०. १ ख. ग. प्रौढ़ा-धीरा-नायका । २ ख. रस । ३ ग. पीयको ।
८१. ४ ख. जटा ।
८३. ५ ख. कोंनकै । ग. कौनकै । ६ ख. इतकों । ७ ख. रवि ।
८४. ८ ख. धीरा बहुर अधीर कै । ९ ख. बेन । १० ख. तीहि । ग. तिहिं । ११ ख. तेन ।
८५. १२ ग. सोहै । १३ ख. तृतीयो । ग. त्रितयो ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

अथ अष्ट-नायकाबर्नन[1]

दोहा– स्वाधिनपतिका उतका[2], वासकसज्जा[3] जांनि ।
प्रोषितपतिका षंडिता, अभिसंधिता बषांनि ।। ८६

दोहा– बहुरि विप्रलबधा अवर, अभिसारिका अनूप ।
अष्ट नायका ये सकल, बरनत समय सरूप ।। ८७

अब क्रमसौं[4] लक्षि लक्षिन कहत है

अथ स्वाधिनपतिकालक्षन

दोहा– पिय जाके गुनसौं बध्यौं, निसदिन रहै अधान ।
स्वाधिनपतिका ताहि कहि, बरनत सबै प्रबीन ।। ८८

यथा– अंगके ढंग उपंगके अंगनि, हासी तरंगनके संग तैसैं ।
भूलैं नही अलकैं भ्रकुटी न, ललाटपैं केसरिषोरि ह्मैसैं ।।
और सबै ब्रजकी जुवती, नहि हेरत हैं ब्रजचंद अनैसैं ।
ज्यौं मुषचंदकौं चाहिकैं नैनन[5], चांहै चकोर नक्षित्रनि[6] जैसैं ।। ८९

अथ उत्कंठितालक्षन

दोहा– जोवै अवधि - संकेतकौं, मिलन-बननकौं[7] जोइ ।
कहि तासौं उत्कंठिता, परम पुरांनैं लोइ ।। ९०

यथा–चंद्रिकासी अबला चपलासी, लषै कमलासी सो सोभा लगीसी ।
सारी हरि[8] गहरैं[9] रंगसौं, उझलीसी गुराई परैं उमगीसी ।।
लाषौं मनौंरथकीसी[10] मिली, रही आंवनि[11] लालकैं आषौं षरीसी ।
चौंकी[12] चकीसी, जकीसी बकीसी, टगी अटकीसी गढी है ठगीसी ।। ९१

---

८६. १ ख. नायका वर्णनं । २ ख. उत्तका ।
३ ख. वासकसज्जा । ४ ग. क्रमसौ ।

८९. ५ ख. नेंतन । ६ ख. नक्षत्रनि ।

९०. ७ ख. मिलन वनकों । ग. मिलन वननकौं ।

९१. ८ ख. ग. हरी । ९ ख. गहरे । १० ख. मनोरथकीसी । ११ ख. आंबन ।
ग. आवन । १२ ख. चोकें ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

अथ वासकसज्जालक्षन

दोहा– आगम आवन पीयकौ[1], जो तिय सजति सिंगार ।
बासकसज्जा कहत हैं, तासौं कबि निरधार ।। ९२

यथा– सौंधै[2] करि मंजन[3] सुधारे केसपास भारे ,
धारे अंग - अंगन जलूसनके चांवडे ।
चीर जालदार मिलि उझलत ओप घनैं ,
ठौर - ठौर[4] चंपकके बृंदन[5] कनांवडे ।
आज अैसै आंवन तिहौर पर बृजचंद[6] ,
बढ़ि चले सौतिनतैं[7] मगज अगांवडे ।
राजि[8] राषे उप्पम समझि राषे सोभा सर ,
सजि राषे लोचन सरोजनके पांवडे ।। ९३

अथ प्रोषितपतिकालक्षन

दोहा–पति बिदेस जाकौ बसै, निसिदिन नींद बिहाय[9] ।
ताकौ प्रोषितप्रेयसी, कहि बरनत कबिराय ।। ९४

यथा– ऊधौ एक[10] सुनिबै[11] है अरज हमारी ओर ,
एते[12] पर उनह्वूकैं मनमै न आती है ।
भौन भयौ भाकसीसौ साषसीसौ दिन भयौं[13] ,
राकसीसी रैनि भई देषैं न सुहाती है ।
कहियौ जू एती दई मनमैं जो आवै क्यौंहू[14] ,
देषन जौं पावैं केती कहिबे न आती है ।
चढ़ि-चढ़ि नेह-निधि कढि-कढि लाज हम ,
सुषै पांनी सफरी लौं बढि-बढि जाती हैं ।। ९५

---

९२. १ ग. पीयको ।

९३. २ ख. सोधें । ३ ख. मज्जन । ४ ख. ठोर-ठोर । ५ ख. व्रंदन । ६ ख. तिहारे व्रजचंद भारे । ७ ख. सौतिन तिके । ८ ख. रीझ ।

९४. ९ ग. बहाय ।

९५. १० ख. येक । ११ क. सुनिवै । ग. सुनिबे । १२ ख. येते । ४ ख. मोंन भयो भाषसीसो साखसी रैंनि भई राखससो दिन भयो । १४ ख. कहूँ ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

अथ षंडितालक्षन

दोहा– और ठौर रति मांनिकै, पिय आवै परभात ।
ताहि षंडिता जानिए[1], कहत बिग्य[2] गहि बात ।। ९६

यथा– लागैं इतै न झुकैं उतहीं, चित लागैं नहीं जैसे देषे हमैसे ।
पीक कपोलनि अंजन[3]भाल, साहाल[4]लसैं मिलि तंत्रनि तैसे ।।
सारस-अंगनि आरससे भलैं, आए इतैं मेरे भागनि अैसे ।
रैंनि जगी इनि आंषिनकौं, किनि कीनैं[5] उपाइ धनंतर कैसे ।। ९७

अथ अभिसंधितालक्षन

दोहा– पियकै मांन मनावतैं, करै अधिक ही मांन ।
पछितावै पीछैं मनैं, अभिसंधिता बषांन ।। ९८

यथा– पाय[6] परैं मनुहारि करीहु, करि बात घनी बहु भांयिन[7]भाष्यौ ।
प्रीति करी उन कोरि उपाइ, तऊ उनकौ हियकौ हित नाष्यौ ।।
कीजे कहा कहिए[8]कहि कौंनसौं, गाढ़ घनौं अपनौं अभिलाष्यौ ।
मैं मतिबौरी रही करि लाज, हहा हरिकौं भरि अंकन राष्यौ ।। ९९

अथ बिप्रलबधालक्षन

दोहा– कीनैं कौल संकेतकी, सषी बुलावत चाहि ।
आवै पिय पावै नहीं, बिप्रलबध कहि ताहि[9] ।। १००

यथा– छूटे केसपास हारभार लंक लूटैं जात ,
जूटैं जात भौहैं बर छबिता अमंदकी ।
अंग अवधारी सेतसारी मुषचंद मिलि ,
जालदार लहंगा[10] लसत लाग छंदकी ।
कुंज-भौंन[11] जाइ सूनौं[12] पाइकैं संकेत फिरि ,
फि[री] निज भौंन चित चाइनकै मंदकी ।
आसपास आली जात उपमांन चाली जात ,
चांदिनीमैं चाली जात चुगलीसी चंदकी ।। १०१

---

९६. १ ख- जानियै । २ ख. विंग । ग. विग्य ।
९७. ३ ख. अंजनि । ४ ख. सुहाल । ५ ख. कोनें । ग. कीने ।
९९. ६ ख. पाइं । ७ ख. वहुभाइन । ८ ख. कहियै ।
१००. ९ ग. ताहि ।
१०१. १० ख. जालदार-लहगा । ११ ख. कुंजभोंन । १२ ख. सूनों ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

अथ अभिसारिकालक्षन

दोहा– सजि सिंगार जो मिलनकौं, जावै पाय चलाय ।
ताहि तिया अभिसारिका, कहत सबै[1] कविराय ।। १०२

अथ सुकला अभिसारिका

यथा– सौंधे करि मंजन सुधारि केसपास धूप ,
अगर धुपाय गोरैं आंग छबि छैरह्यौ ।
चंदमुष हांसी चंद्रिकासी चांदिनीसी आपु ,
च्यारचौ ओर चाहिकै चकोरौ[2] चित चैरह्यौ[3] ।
तेरे बलि आजु अभिसारके[4] समाज पर ,
पाज उपमांनकी डगन डग दैरह्यौ ।
छत्रपति छत्र लै चढचौ है मनमथ आजु ,
निरषिन छित्रपति[5] छत्रछबि ह्वैरह्यौ ।। १०३

अथ क्रस्नाभिसारिका

यथा– काजरसी का[री] निसि करत उज्यारी स्यांम ,
सारी हू न दुरत जुन्हाई जालभरे है ।
चुहल मचावत नचावत चकोर हंस ,
चटकन चहु चंह्वावत परे षरे हैं[6] ।
ठौर - ठौर भौंरनके भौंरन जगावतसे ,
त्यौं - त्यौं पैंड - पैंड कल - कोलाहल करे हैं ।
कैसै रंगमहललौं सषी साथ पहुंचौंगी[7] ,
मेरे अंग आली आजु मेरैं बैर परे हैं[8] ।। १०४

अथ दिवा अभिसारिका

यथा– चंदमुष अंबर कसूंभी सोहैं अंग मिलि ,
सोहैं जालदारसो किनारी जरतारलौं ।
चौंकि-चौंकि[9] चंचल-चकोर-गन चाले जात ,
छूटे केसपास लागे लंक - लग भारलौं ।

---

१०२. १ ख. सबे ।
१०३. २ ख. चकोर । ३ ख. चित वैरह्यौ । ४ ख. अभिसारिके । ५ ख. क्षत्रपति । ग. क्षित्रपति ।
१०४. ६ ख. खरे खरे हैं । ७ ख. पोहचेगी । ग. पहुंचोगी । ८ ख. मेरे ओर परे हैं ।
१०५. ९ ख. चोकि-चोकि ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

आजु अभिसार सोहै ग्रीषम समाज दिन ,
गुंजि - गुंजि लागे कुंज - कुंजन अपारलौं ।
आसपास च्यारचौ ओर सारें मग भौंर ह्वै-ह्वै ,
उडि-उडि भौंर भऐ[1] चौंर घरी चारलौं ॥ १०५

इति श्रीनेहतरंगे रावराजा श्रीबुद्धसिंहै सुरचते अष्टनायका-निरूपणं नांम चतुर्थो तरंग

★

अथ मिलन-स्थांनवर्नन

दोहा– ध्याय[2] सहेली सुबन जल, सूनै घर भय मांनि ।
ब्याधिजनी निस चार हैं, नौंते[3] उत्सव जांनि ॥ १०६

दोहा– मिलन - थांन एही कहैं, मिलें इहाही[4] ढंग ।
सवही मन बढ़िकें[5] करैं, राजा - रंक प्रसंग ॥ १०७

अथ ध्यायके घरकौ मिलन

दोहा– मिली ध्यायके भौंनमैं, नदनंदनसौं धाय ।
ज्यौं चलिकैं मनु चंद्रिका, लसै चंद लपटाय ॥ १०८

यथा-- सांझहीसौं ब्रजबालनसौं, कथा-जालनमैं रजनी दै अहूटी ।
फेरि चढै घनकै नभमैं, बाल-ष्यालके हालकी चाल बिछूटी ॥
धाय कह्यौ चलौ मंदिरमैं, तहां राधिके ठाढी है ऊपम लूटी ।
लूटगी[6] देषत ही हरिकैं, रबि चंदकी ज्यौं किरनैं छति[7] छूटी ॥ १०९

अथ सहेलीके घरकौ मिलन

दोहा-- अली सहेलीकैं भुवन, मिली चंद ब्रज आय ।
ज्यौं जुग - राकाके मनौं, चंद - चंद सरसाय ॥ ११०

यथा-- हेरि हसौ बसौ नेहसौं लाल जो, ल्याई हौं या कबितानसी गाई ।
घेरो चकोरन भोरनकौं, अरिबिंदन हू समता कित पाई ॥
सारी मिलै जरतारीकी जालसौं, सो उपमां उरमैं अधिकाई ।
गंगसी टूटिकैं षूटि कला, त्यौंही चंदसौं छूटिकै अंगन आई ॥ १११

---

१०५. १ ख. उमंडि उमंडि भोर भयै घरी चारलौं । ग. वौंर घरी चारलौं ।
१०६. २ ख. ग. थाय । ३ ख. न्योंते । ग. नौतै ।
१०७. ४ ख. ढंग । ५ ख. बलिकें । ग. बढ़िकै ।
१०९. ६ ख. ग. जूटगी । ७ ख. ग. छिति ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

अथ सुबनमिलन

दोहा– लसैं[1] बिपन-घन-सघनमैं,[2] मिली चंद-ब्रज चाय[3] ।
दंपति छिति ऊपर मनौं, देव-कला दरसाय ।। ११२

यथा– आंनद हेत घनां-घन-कुंजमैं, राधिके राजत साथन आली ।
आए[4] तहां हरि रोझिसौं भीजि सु देषी छकी लिये रूप अराली ।।
त्यौं मुषतें सितसारी षुलंतें, वे धाय[5] लिये उपमा या सभाली ।
टूटि उतंग मनौं सिवसीसतें, छूटिकैं ज्यौं छिति गंगसी चाली ।। ११३

अथ जलबिहारकौं मिलन

दोहा– जलबिहारमैं मिलनकी, रहि उपमा यौं जूटि ।
ज्यौं[6] जुग-चंद चकोर-जुग, चषनि-चाहि रहि[7] लूटि ।। ११४

यथा– रैनि समैं सलिता मधिमैं, नंदनंदन राधे लसैं यौ तिरे हैं[8] ।
सोहैं कमोद नसी सषियां, परसैं अति आंनद-रंगभरे हैं ।।
यौं दुहु-वोरनकी[9] छबितासौं, समाजसौं आषिन बीचि धरे हैं ।
ज्यौं ससि साथ नछित्रनकै, प्रतिबिंब त्यौं छूटि दुहूंउघरे हैं ।। ११५

अथ सूनैं घरको मिलन

दोहा– मिली भुवन सूनै मही, उपमां रही सुहाय ।
मांनौ दीपति देहकी, मिली देहसौं आय ।। ११६

यथा– आजु परोसनि मंदिर सूनै, मिलो ब्रजचंदसौं राधे छलीसी ।
सोहै प्रमा(भा) दिनसी अंगसौ, उझलैं प्रति-अंगनि भांति भलीसी ।।
ता छिनकी उपमां अति सो मन, मेरेमैं आयकैं ग्रैसैं चलीसी ।
छूटि लसैं घनके घन बीच, मनौं चकि चंचला चंद मिलीसी ।। ११७

अथ भयकौमिलन

दोहा– मिली जाय भयकै समैं, यौं ब्रजचंद सुहाय ।
मनहुं[10] चंदहूंसौं लगी, चपलासी चपलाय ।। ११८

---

११२. १ ख. लसें । २ ख. विपन पननमें । ३ ख. आइ ।
११३. ४ ख. आयें । ५ ख. बै धाय ।
११४. ६ ख. ज्यों । ७ ग. रही ।
११५. ८ ख. सों निरे हैं । ग. यौं तिरे हैं । ९ ख. दुहुं वोरनकी । ग. दुहू वोरनकी ।
११८. १० ख. मनों । ग. मनहूं ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

यथा– पारैं[1] परोसकैं आगि लगै, करैं लोगु बुझांवनकौं उघटैंसी ।
ता छल पाय मिली ब्रजचंदसौं, तू चितकी करिकैं सिमटैंसी[2] ॥
यौं मन मेरेमैं आवत[3] है, डर भूलि इतै न करै चपटैंसी ।
दौरि[4] सबै झपटैंगे इतै, सो लगी लषि पावककी लपटैंसी ॥ ११९

अथ व्याधि-मिसकौ मिलन

दोहा– व्याधि - भुवन अैसैं मिली, नंदनंदनसौं जूटि ।
मांनौ सफरी झरफि जल, मिली जालसौं छूटि ॥ १२०

यथा– आजु[5] कछू अंग आरसतैं, सो जतायकैं राधे समाज मिली है ।
ता समैं आए इलाजनकौं, बहिआं नदनंदन हाथ मिली है ॥
छूटि रही अलकैं[6] उरपैं, ब्रजचंदके रंग मिलैं उझली है ।
मानहुं सीसतैं चंदलता, असिता पुलि धार हजार चली है ॥ १२१

अथ जनीके भुवनकौं मिलन

दोहा– जनी - भुवन अैसैं मिली, नंदनंदनसौं आय ।
छूटि मनौं कुमदनि[7] मिली, चंद - चंद्रिका छाय ॥ १२२

यथा– आजु[8] ग्वालबाल[9] मिलि भारी-भौंन[10] अंगनमैं ,
षेलके प्रसंगनमैं भीर न समाती है ।
हसि-हसि चहुंधां[11] कहत आंषि मूदि षेलैं ,
जूटी - जूटी घिरत फिरत ताती - ताती है ।
कांनलौं बडौंहै नैंन राधिकाके मूदे हरि ,
पुलिकैं[12] निकारि ताकी सोभा बरसाती है ।
अफरीतैं जलतैं तरफरी सम्हारी मनौं ,
टूटैं जाल सफरी ज्यौं छूटि-छूटि जाती हैं ॥ १२३

अथ निसचारकौ मिलन

दोहा– लसत साथ निसचारमैं, नंदनंदनसौं आय ।
चंद घनांघन जालमैं[13], दुरचो मनौं दरसाय ॥ १२४

---

११९. १ ख. पार । २ ख. सिमटोसी । ३ ख. आवती । ४ ख ग. दोरि ।
१२१. ५ ख. आज । ६ ख. अलकें ।
१२२. ७ ख. कुमुदनि ।
१२३. ८ ख. आज । ९ ख. ग्वालु बालु । १० ख. भारीभोंन-अंगन । ११ ख. चहखा । १२ ग. षुरिकैं ।
१२४. १३ ख. लजा ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

यथा– पूजनकौं ब्रजदेबीकौं रैंनमैं, ध्याए सबै न रह्यो घरमैं है ।
छूटी घटामैं लुटै रूप राधिके, भेट भई हरिसौं झरमैं[1] है ।।
यौं मिलगे दोऊ नेह-छके[2], उपमां मन मेरे नयी भरमै है ।
ज्यौं[3] घन सत्थ सुधाधर मांनौ, छिपैं छबि देत ज्यौं अंबरमैं है ।। १२५

अथ न्यौंतेको मिलन

दोहा– नौंतेकै मन्दिर मिली, नंदनंदनसौं जूटि ।
जैसैं षुलि रबिसौं मिली, जनु सरोजनी षूटि ।। १२६

यथा– जैंवन पास परोसकैं राधे, गई जबै सौंहैं करोर छली है ।
देषि अकेले तहां नंदनंदन, लाज कछू उर माझ फली है ।।
चीर गह्यौ हसिकै स्यामरंगकौ*, यौ उपमां उरमें उझली है ।
कंजतैं त्यौं षुली षूटि उतावली, ज्यौं अलि-आवली छूटि चली है ।।१२७

अथ उत्सवकौ मिलन

दोहा– उत्सवकैं मन्दिर मिली, नंदनंदनसौं आय ।
फारि घटा चंदहि मिली, बिज्जु छटासी जाय ।। १२८

यथा– रातिजगैं ब्रजमैं ब्रजदेवीकैं, आय सबै छितिकी धन जूंटी ।
राति घटैं[4] नीद आंषिन आयें, करी प्यारैं राधिके आंनंद लूंटी ।।
चुंबन दै उघरे[5] मुषपै बंदी[6], मोतिनकी उपमां यों बिछूटी ।
षूटी करोरन सथ्य[7] मनौं, तमपै छुटि चंदकी पंकति टूंटी ।। १२९

इति श्रीनेहतरंगे रावराजा श्रीबुद्धसिंह सुरचते मिलन-स्थांन निरूपणं
नाम पंचमो तरंग

★

अथ सषीजनबर्नन

दोहा– धाय नटी नांयनि जनी, और परोसनि नारि ।
मांलनि बरथनि[8] सिलपनी, चुरेहेरी[9] निरधारि ।। १३०

---

१२५. १ ख. जरमें । २ ख. नेंनके । ३ ख. है ।
१२९. ४ ख. घटि । ५ ख. उघरी । ६ ख. बेंदी । ७ ख. सध्य ।
१३०. ८ ख. ग. वरयनि । ९ ग. दुरहेरी । *'रंग स्यामको' ऐसा पाठ होना चाहिए ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

दोहा– रामजनी सन्यासनी, अवर[1] सुनारि सुनांम ।
पटयनि एती कहत हैं, सषी मिलनकी[2] वाम ।। १३१

अथ धायकौ बचन श्रीराधिकासौं

दोहा– करत चलाकी चंचला, महाबलाकी सोर ।
चंदमुषी चलि राधिका, मिलिए नंदकिसोर ।। १३२

यथा–मोतिन-माल[3] नषित्रन फैलिकै, चंद्रिका-हासि[4] ज्यौं छवि छाये ।
लाज सरोजनि मुद्रित कैं[5] चित, मोदक मोदनिकौ[6] सरसाये ।।
प्राची-दिसा चढ़ि चायनपैं[7], अति आनंदसौ या दसा दरसाये[8] ।
ज्यौं तेरे नैंन-चकोरनपैं, बृजचंद मनौ चलि चंदसे आये ।। १३३

अथ धायकौ बचन श्रीकृष्णसौं

दोहा– लाई हौं हित रावरैं, तन - उपमांसौं जूंटि ।
रहि चकोर चष छूटिकै[9], चंदकलासी टूटि ।। १३४

यथा– अंजन वंक कलंक[10] षुलैं, तार-हारन-मोतिनकी छबि छाई ।
हासी लसैं चंद्रिका ज्यौं कमोदसी, आलिन संग अमी बगराई ।।
छूटत कुंज-घनांघनसौं वन, लूटतसी तिहुंलोक निकाई ।
रावरै नैंन चकोरनपैं आजु, चंद ज्यौं चंदमुषी चलि आई ।। १३५

अथ नटीवचन श्रीराधिकासौं

दोहा– चहुं-दिसितैं चपला चमकि, उठै घोर घन आय ।
जूटि - जूटि ता मिलनकौ, लुटी - लुटी दरसाय ।। १३६

यथा– स्यांम लसैं घन-अंबरसे, अलकैं धुरवांनिहूंसी[11] अवधारे ।
चंचला टूटि पितंबरकी[12] दुति, बूंदन[13] मोतिन-हार सुधारे ।।
आजु या कुंजनकैं[14] मिलवैं, अभिलाष ज्यौं मोरनके उर धारे ।
चंदमुषी तेरे लोचनपैं, बरिषारितु ज्यौं बृजचंद सिधारे ।। १३७

---

१३१. १ ख. अबर । ग. अवरि । २ ख. मिलीनकी ।
१३३. ३ ख. मोतिनु-माल । ४ ख. ग. चंद्रिका-हांसिन । ५ ख. मुद्रिके ।
६ ग. मौदनिकौ । ७ ख. चाप तपैं । ८ ख. पद सारद गायें ।
१३४. ९ ख. चूटिके ।
१३५. १० ख. ग. कलंक ।
१३७. ११ ख. ग. हुसी । १२ ख. पीतांबरकी । ग. पीतंबरकी ।
१३ ख. ग. वूंदन । १४ ख. याके जनके ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

अथ नटीकौ बचन श्रीकृ ष्ण

दोहा— आजु मिलैं मिलिये बनैं, सुनौं बात बृजचंद ।
चाहत है तुमकौं वहै, ज्यौं चकोर मुपचंद ॥ १३८

यथा— अंबर नील-घटासी षुलैं, मोतीहारन बूंदन ज्यौं बरषाई ।
छूटि लसैं अलकैं धुरवासी त्यौं, हांसीनपैं तडिता छबि छाई ॥
घूघटकैं उघरैं उघरैं[1] मुषचंदकी[2] ज्यौं उघरैं परछाई ।
नैंन तिहारे ज्यौं चातकपैं, चलि बाल किधौं[3] बरषारितु आई ॥ १३९

अथ नायनिकौ बचन श्रीराधिकासौं

यथा— परत पुंज अति बिरहके, तम - निकुंज घहराति ।
तू न चकीसी[4] चलति किन, महाबकीसी[5] राति ॥ १४०

यथा— अंबर-पीत षुलैं कदली, अभिलाषन - पल्लव त्यौं सरसाये ।
छूटि झरैं अंगराग - पराग, सुगंधन सीतल मंद जताये[6] ॥
हार लसैं फुलवादि-बहारहिं, तू[7] जन कोकिल कीरति गाये ।
षंजनसे तेरे नैंननिपैं, बृजराज मनौं रतिराज ह्वै आये ॥ १४१

अथ नायनिकौ बचन श्रीकृष्णसौं

दोहा— षरी चाहि उहि चटपटी, मिलन बारकौ हेरि ।
जैसी लागी चंदकी, ज्यौं चकोर अवसेरि ॥ १४२

यथा— भौंरन-भौंरन साथ लये, लयें कोकिल साथ लसैं चतुराईं ।
फूल अनेक ज्यौं अंबर साजि[8], सुगंध-सुगंधनकी सरसाईं ॥
काल्हिके केते निहोरनिसौं, करि द्यौर-जिठानीकी संक न लाईं ।
नैंन-सरोज तिहारेनपैं, रतिराज[9] ज्यौं चंदमुषी चलि आईं ॥ १४३

अथ जनीकौ बचन श्रीराधिकासौं

दोहा— अंग - सिंगार फुलवादि ज्यौं, तेरे मिलन इलाज ।
आये हैं बृजराज यत[10], साजि मनौ रतिराज ॥ १४४

---

१३९. १ ख. उघरें-उघरें । २. ग. मुष ओपम । ३ ख. किशोर ।
१४०. ४ ख. ग. नचका । ५ क. महाबकासो ।
१४१. ६ ख. जुताये । ७ ग. तु ।
१४३. ८ ख. अंबर साझि । ९ ग. रातिराजि ।
१४४. १० ग. इत ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S.　　　　Jin Gun Aaradhak Trust

यथा– भूषन-जोति मनौं घुलिकैं, किरनैं कढ़िकै[1] अंगसौं सरसे हैं ।
अंबर - पीत अताप विषेरिकै[2], चंद्रलता अहितूकरसे हैं ।।
आवत या बनि बांनिकसौं, मग-कुंज इहो छबिसौं परसे हैं ।
राधे तो नैंन-सरोजनिपैं, बृजचंद ज्यौं सूरजसे दरसे हैं ।। १४५

अथ जनीकौ बचन श्रीकृष्णसौं

दोहा– लाल तिहारे मिलनकी, वह बलि करत उमाह ।
ज्यौं घनकी नितिप्रति रहै[3], चातककैं उर चाह ।। १४६

यथा– अंगनसौं फुलवादिसी घूटिकैं, ताप दै सौतिनपैं अतिसी है ।
धूम दै ऊंनत-कुंजनपैं घुलि, हासिन चंद्रिका कीजतिसी है ।।
कांपत गात ससंक जिठांनीसौं, सासके त्रासन त्यौं गतिसी है ।
चाहिकैं[4] तो हितसौं ब्रज़चंद वा, आवत आजु छहौं रितसी है ।। १४७

अथ परोसनिकौ बचन श्रीराधिकासौं

दोहा– आजु तिहारे मिलनकौं, नंदनंदन उमहात ।
लसै बढ्यौ[5] उपमांनसौं, चंद चढ्यौ यत[6] आत ।। १४८

यथा– जे सिव साधि समाधिन-साधन, वेद-पुराण[7] कहैं अनुरागी ।
ध्यावैं जिनैं नर देव अदेव, विरंचिहुंकै[8] मुष कीरति जागी ।।
धारे जिन्हैं[9] तिहुं लोक उधारि, मिलापकी आतुरता अति लागी ।
चंदमुषी सुनि री बृजचंदकैं, तू वडे भागनि आंषिन लागी ।। १४९

अथ परोसनिकौ बचन श्रीकृष्णसौं

दोहा– लाल तिहारे मिलनकौं, वह बलि चित बरजोर ।
ज्यौं अभिलाषन लाषतैं[10], 'रहे मोर घन ओर[11]' ।।

यथा– अंजन घूटि लसैं बिषसो, सोही[12] हांसी सुधारसप्रै अतिसी है ।
बंक-चितौनी सुरा, मुषचंद अमंद लिये चांद्रिका जतिसी है ।।

---

१४५. १ ख. कटिकैं । २ ग. बिषैरिक ।
१४६. ३ ख. हरैं ।
१४७. ४ ग. वाहिकैं ।
१४८. ५ ख. चढ्यौ । ६ ख. ग. बढ्यौ इत ।
१४९. ७ ख. वेंद-पूराण । ८ ख. विरह । ग. विरचिहूंकैं । ९ ग. जिनैं ।
१५०. १० ग. लाषतैं । ११ ख. रहै मौर घन ओर ।
१५१. १२ ग. साहा ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

मोतिन-हार हिये षुलिकैं, पग-जावकसो गति पावकसी है ।
दीपति दीप मिलौं बृजचंद वा, आवति आजु नदीपतिसी है ।। १५१

अथ मालनिकौं बचन श्रीराधिकासौं

दोहा– कछु उघरचो-उघरचो चहत, अबैं[1] चंद चढ़ि आत ।
क्यौं कपाट[2] उघरत जरत, परत राति इतरात ।। १५२

यथा– अंगनकी प्रति-अंगनकी[3] षुलि, चंद्रिका जाल हियें अवरेषैं ।
फैलेसे त्यौं मृदु - हांसनमैं[4] नहि, सुद्ध सुधा बसुधा न बिसेषैं ।।
हार - नक्षित्रनकी उछटैं कित, तारनकी उपमा अनलेषैं ।
तो मुषचंदकौ[5] देषतही, समता बृजचंद न चंदकौं देषैं ।। १५३

अथ मालनिकौ बचन श्रीकृष्णसौं

दोहा– वहि[6] आलीकौ मिलनकी, चाह रहत चित पास ।
रैंनि - दिनां जैसे लगी, रहै फूलमैं वास ।। १५४

यथा– आजु हौं ल्याईहौं गोपसुता बलि, रंभाहुंसौं[7] रतिसौं अगलीसी ।
चौकि चकौरनहूं चहुंओरतै, भौरन हंसनहूं मगलीसी ।।
चूनरी स्यांम समाजनतै परैं, चंद्रिका अंगनतैं उगलीसी ।
चाही चिराकन[8]चंपकहूं,स मिली मानौं चंद्रमाकी चुगलीसी ।। १५५

अथ बरयनिकौ बचन श्रीराधिकासौ

दोहा– ज्यौं किरनपति[9] किरनिकी, आस धरत अरिविंद ।
चंदमुषी तो मिलनकी, चाह करत बृजचंद ।। १५६

यथा– कौन दई यह बाय बलायलौं, नैंक परैं नहि नेह नवेरू ।
लाज सके बिझुकेसे[10] थकेसे, जकेसे रहैं तिंहि रूपके तेरू ।।

---

१५२. १ ख. अबे । २ ख. कंपटि ।

१५३. ३ ख. अति अंगनकी । ४ ख. मृदुहासनि । ग. मृदुहासन । ५ ख. मुषचंदके ।

१५४. ६ ख. ग. वह ।

१५५. ७ ख. रंभाहुंते । ८ क. निराकन ।

१५६. ९ ख. किरननपति । १० ख. बिछकेसे ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

तो मुषचंदके देषनकौं लगि, चाय रही उपमां उरझेरू ।
पेमके[1] फंदनमैं पहुचे[2] वे, परे पिजरांनके जानि पषेरू[3] ॥ १५७

अथ वरयानिकौ वचन श्रीकृष्णसौं

दोहा– वह बलि कीयौं मिलनकौं, चितवृति[4] चष झुकि झौर ।
मिलि सरोज प्रतिरोजकौ, ज्यौं भूलत नहि भौर ॥ १५८

यथा-- आजु मैं ल्याई हौं गोपुसुता छवि, सोहत तैसी प्रभानकी मैली ।
चांदिनी ज्यौं अंगअंगन छूटिकैं, जूटि समेटिकैं सारी उजेली ॥
सोहत है अति यौं दरमैं[5], उपमां मन मेरेमैं अैसें उझेली ।
आवत वा मग-कुंजनकैं, चहुंओरतैं मानौं चिराकसी[6] फैली ॥ १५९

अथ सिलपनीकौं बचन श्रीराधिकासौं

दोहा– उनहिं मिलनकी झटपटी, निपट नटपटी नीति ।
लगी दृगनि अति चटपटी, षरी अटपटी रीति ॥ १६०

यथा-- ता पर देव-अदेव-कुमारि, उतारिकैं लाजके साज धरैंगी ।
ता मुषकी मधुरी - मुसकांनिसौं[7] चंद वहारकौं मंद करैंगी ॥
ता हरिकौ तू निहारिबौ चाहत, क्यौं गति तो मति यौं निसरैंगी ।
जागीसी ज्यौं रति-रंगनसौ, आषैं[8] लागी तौ लागी तौ लागी रहैगी ॥ १६१

अथ सिलपनीकौं बचन श्रीकृष्णसौं

दोहा– बकी - बकीसी रहत निसि, थकी - थकीसी गेह ।
लषी - लपी ता दिन वहै, बिकी - बिकीसी देह ॥ १६२

यथा– टीका जराऊ[9] सुधारससैं[10], मुष भारैं तमोरनि बोप सुधारैं ।
धारैं हरैं षुलि अंवरकैं, षोरि केसरिकी दयें सुद्ध कतारें ॥
भूषन हीरनके छहरैं, छूटे बार त्यौं मोतिनसौं उरझारैं ।
आवत आजु तिहारैं लिये, मग राधिके अंग नऊं गृह[11] धारें ॥ १६३

---

१५७. १ के. पेमेके । २ ग. पहुंचे । ३ ग. जांनि पषेरूं ।
१५८. ४ ख. चितव्रत । ग. चितवृति ।
१५९. ५ ख. ग. दरसें । ६ ग. राकसी ।
१६१. ७ ग. मधुरी मुसकानि । ८ ग. आंषेपे ।
१६३. ९ ख. जराय । १० ख. सुधारससों । ११ ख. नवग्रह । ग. नउग्रह ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

अथ चुरेहेरनिकौ बचन श्रीराधिकासौं

दोहा-- मोतिन - माल नक्षित्र[1] मिलि, अंग - अंग छबिछंद ।
याते तेरे मिलनकौं, चंदमुषी वृजचंद ।। १६४

यथा– सासके लंगर टूटतसी, बृजनारि त्यौं छूटि मिल्यौ अभिलांषैं ।
देवकुमारी अदेवन-नारिसो, गौंरिकौं पूजि बिचारमैं राषैं ।।
ता बृजचंदकौ तू अब मोहि, बुलायकैं देत मिलापकी साषैं ।
प्रीति इलाजसौं लाजसौं धोई री, हाथसौं षोई री वैरनि आषैं ।। १६५

अथ चुरेहेरनिकौं बचन श्रीकृष्णसौं

दोहा– मिलन रावरैं काज हरि, बाढत[2] नेह अछेह ।
दीप तिहारैं दरस उन, की[3] पतंगसी देह ।। १६६

यथा– रावरी बातैं सुभायकैं[4] भायसौं, चाहिकै भाय[5] कहूं जी चढैंगी ।
ता पर आवन यौं तमको, मग फैलिकैं चांदनी कुंज मढैंगी ।।
मोहि महा[6] डर है धौं बडौ, पढै मंत्रन जंत्र अनेक बढैंगी ।
राधिकाकी वे बडी-बडी-आंषैं, गडी तो गडी न वे काढी कढैंगी ।। १६७

अथ रांमजनीकौ बचन श्रीराधिकासौं

दोहा– मुष - मयंक - परकासकी, मिलि है जौति मयंक ।
रंगरलो करिकैं अली, चलि अब कुंज निसंक ।। १६८

यथा– आजु बुलावनकौं बृजचंदकौं, बोली मैं जाय घरी-सुघरी हैं ।
फूल्यौ हियौ बहियां फरकी, हरषी अषियां अति रीझि भरी[7] हैं ।।
सोहत अैसे समाजनसौं, उपमां मन आयकैं यौं निषरी हैं ।
मांनौ चकोरनकैं अभिलाषपैं, चंदकी छूटि कला बिखरी हैं ।। १६९

अथ रांमजनीकौ बचन श्रीकृष्णसौं

दोहा– अफरी-अफरी भुवनमैं, मिलन तिहारैं चीति[8] ।
परी तरफरीसी लसै, जल - सफरीकी[9] रीति ।। १७०

---

१६४. १ ख. नक्षत्र ।
१६६. २ ख. वाटत । ग. वाढत । ३ ग. कीड ।
१६७. ४ ख. सुभाईकैं । ५ ख. भाई । ६ ग. माहा ।
१६९. ७ ख. अति रागि भरी ।
१७०. ८ ख. मीति । ९ ख. सफरीक ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

यथा– ल्यावत आजु[1] तिहारे मिलापकौं, गांवही तै[2] ओर राह गही[3] है ।
कैसै[4] करों उघरी परैं[5] अंबर, अंग[6] छिपायौ तऊ न छही है ।।
भौंरके भौंर समाज[7] चकोरन[8], तैसै पतंगनि देह दही है ।
काहू चिराक कही चपला कही, चंद्रिका काहूनै चंद कही है ।। १७१

अथ सन्यासनीकौ बचन श्रीराधिकासौं

दोहा– अतनबूंद[9] दाहत तनह, चाहत मग घनस्यांम ।
मधुप - पुंज गुंजत षरैं, चलिन कुंज बलि बांम[10] ।। १७२

यथा– काहूसौं[11] बात करै मन षोलै, न डोलै न कुंजन चाहि बगो[12] है ।
मैलेसे[13] गात सुहात महा, उपमां अनाघात ज्यौं चंद पगी है ।।
भूलीसी भूष बिसारेसे पांन, नही सुधि न्हांन समाधि जगी है ।
जानी परै नहि हौनौं[14] कहा, उनकै मुष एक तुही तू लगी है ।। १७३

अथ सन्यासनीकौ बचन श्रीकृष्णसौं

दोहा– पीरीसी नीरी[15] दरस, वह बलि सहज - सुभाय ।
रैंनि-दिना[16] लागी रहै, दृगनि[17] रांवरी चाय[18] ।। १७४

यथा–या डरसौं तुमसौं छलसौं करि, बातैं अनेक बनाय अथागैं ।
भादौंहूंकी या कुहूंकी निसामधि, ल्याई हुंती तमसौं छबि लागैं ।
अंगन-अंगनकी षुलि जात वै, जोतिके जाल अगाऊलैं बांगैं ।
लागत लूटि प्रभानकी[19] सैलीसी, फैलीसी[20] आवति चांदिनी आगैं ।। १७५

अथ सुनारिकौ बचन श्रीराधिकासौं

दोहा– लोक-लाज निदरी सबै, प्रगट तरफरी प्रीति ।
भलैं लई यन[21] नैंनतैं, जल - सफरीकी रीति ।। १७६

---

१७१. १ ख. ग. आज । २ ख. तें । ३ ख. गई । ४ ख. केसें । ५ ख. परें । ६ ख. आंग । ७ ख. समाझ । ८ ख. ग वारैनते ।

१७२. ९ ख. अनतवूंद । ग. अततबूंद । १० ख. ग वांम ।

१७३. ११ ख. काहूसों । १२ ख. वगी । १३ ख. मेरेंसो । १४ ख. होनों ।

१७४. १५ ख. नारि । १६ ख. रेनि-दिना । १७ ख. द्रगन १८ ख चाह ।

१७५. १९ ख. अभानकी । २० ख. फेलीसी ।

१७६. २१ ख. ग. भई यन ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

यथा–आजु गई ही जसोमतिकैं, सो मिले नंदनंदन प्रीति उघारैं ।
मोसौं करी बडी बेरहु लौं[1], मनुहारि महा अभिलाष उजारैं ।।
आजु तिहारे मिलापहूकौं, दोऊ नैन रहे उपमां उनहारैं ।
चाय-चपे-चित-चातक[2] चौंकि, त्रिषानकी त्राससौं चांच[3] पसारै ।। १७७

अथ सुनारिकौ बचन श्रीकृष्णसौं

दोहा– लाल तिहारैं दरस उन, लगी दृगनि जक जाफ ।
न्यारी भई न नांच है, चाहत भयौ जुराफ ।। १७८

यथा–आई तिहारे मिलापनकौं, रति-रंभासी गंगाहूसी गहरैंसी[4] ।
केसरि-षौरि षुली अलकैं[5], बसैं[6] अंग-सिंगारनकी बहरैंसी[7] ।।
ता पर यौं चहु-चांदिनीकी मिलि, केसनि बीचि लसै कहरैसी ।
मांनहुं सीस छिपाकरकैं छुटि, जाल-नक्षत्रनकी[8] छहरैंसी ।।१७९

अथ पटयनिकौं[9] बचन श्रीराधिकासौं

दोहा– हौं[10] पठई तुव[11] लैंनकौं, अब कित चहत बसीठ ।
जगी - जगी अनुरागसौं, लगी - लगी वे दीठि ।। १८०

यथा–कोऊ[12] कहौ भल[13] कोऊ सुनौं, कछू होत कहा कहि बात न[14] नांषैं ।
द्यौरजिठांनी रिसांनी जौ सासु, बसानी कहा चितकैं अभिलाषैं ।।
देषैं[15] बिनां जिन्हैं[16] कैसैं सरै, जिनकी सषि बेद-पुरांननि साषैं[17] ।
आपनी[18] एन सगी जिनकी, सुलगीं जेरी लाषनि बीचि वै आंषैं ।।१८१

अथ पटयनिकौ बचन श्रीकृष्णसौं

दोहा– मिलन - लगन लागी लगैं, मनमैं रही उमाहि ।
लवैं सचांनक लौं लगी, चषनि अचांनक चाहि[19] ।। १८२

---

१७७. १ ख. बेरहीलों । ग. बेरहू । २ ख. चाप-चपे-चित-चातक । ३ ख. चोंच ।
१७८. ४ ख. ग. गेहरैंसी । ५ ख. अलकें । ६ ख. वसें । ७ ख. वहरैंसी ।
८ ख. लाज-नक्षत्रनकी ।
१८०. ९ ख. पटवनिकौ । १० ख. हों । ११ ख. तुब ।
१८१. १२ ख. ग. कोउ । १३ ख. भलो । १४ ख. वातनि । १५ ख. देख ।
ग. दैषैं । १६ ख. जिह । १७ ख. वेद पुरांनमैं साखें । १८ ख. अपनी ।
१८२. १९ ख. वाहि ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

यथा– बंक-मयंक नषछदसौ षुलि, तारन-हारनकी छबि छांई[1] ।
भारे[2] सुगंध समीर लयें[3], संग नायककें सरसें[4] सरसांई ।।
कीजे कहा चित[5]टोकी कहूं, मिलि ल्याईय तें[6]करिकें चतुराई ।
मेरे ए[7] नैंन सरोजनपें[8], कितसौं बनि आई है सौति जुन्हाई ।। १८३

अथ सषी-कर्मकथनं

दोहा– सछ्या[9] बिनय मनावनौं, करै सिंगार मिलाइ ।
झुकै रु देत उराहनौं[10], ए सषीनके भाइ ।। १८३

अथ सछ्यालक्षन

दोहा– सीष देत कछु समुझिकैं[11] दंपति हिय सुष पाय[12] ।
ताकौं सछ्या[13] कहत हैं, कविकोबिद समुझाय[14] ।। १८५

अथ श्रीराधिका कहुं सछ्या

यथा–बानिक तें[15]बनिकें सजनी, चलिए वनसौं मिलिए बलि जांहीं[16] ।
चाहत या सुषकौं सगरी सुख, मैं दुषकौ गहिबौ है बृथा ही[17] ।।
जा हरिकौं नर देव-कुमारि, करें तप कोटि लहैं नहि छांहीं ।
नांहीसौं नांही करौ बलि नांही री, नाहसौं नाही निबांहन नांही ।।१८६

अथ श्रीकृष्णकौं सछ्या

यथा– मिलै बिन देषै[18]बलि प्रीतिरीति अैसी बिधि ,
चंद्रिका चमेली[19]चारु चौकनि[20]निसार है ।
उन दिन बिन उन घरि बिन पल बिन ,
सौरभ सरागी बिन चंपक[21] बहार है ।
मिलन बसंत दई आस[22] जौ न करतौ तौ ,
निबहत कैसें नेह लागे इकतार है ।

---

१८३. १ ख. छाई । ग. चांहि । २ ख. ग. भार । ३ ख. लयें । ४ ख. सरसे ।
५ ख. चितये । ६ ख. ल्याई इतें । ७ ख. मेरे ये । ग. मेर ए ।
८ ख. सरोजनियें ।

१८४. ९ ख. सिष्या । १० ख. उराहनो ।

१८५. ११ ख. समुझिकें । १२ ख. सुखपाई । १३ ख. सष्या । १४ ख. समुझाई ।

१८६. १५ ख. वानिकसों । १६ ख. चलियें बलि रावरी सो मिल जांई । १७ ख. वृथाई ।

१८७. १८ ख. देखो । १९ ख. चमैली । २० ख. चोकनि । २१ ख. पंकज ।
२२ ख. आसा ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

गहरी[1] गुलाब छूटि भौंर जरि स्याह भयौ ,
भौंर छूटि सूलनि गुलाब वारपार है ॥ १८७

अथ बिनयलक्षिन

दोहा– करै बीनती दुहुंनकी[2], सषी जोरिकैं पांनि ।
ग्रंथनिमैं कबि कहत हैं, तासौं बिनय बषांनि ॥ १८८

अथ श्रीराधिका कहु[3] बिनय

यथा– देषनकौं मन त्यौं तरसैं, तरसै श्रुति बोलनकौ जु महा री ।
त्यौं मिलबै बहियां तरसैं, परसैं जु नही[4] अभिलाषन भारी ॥
कौंन मिलावै कहा करिए, मनहूंकी दसा इन बातन हारी ।
चंदमुषी मुष देषिबेकौं, सु लई इन आंषिन पीर उधारी ॥ १८९

अथ श्रीकृष्ण कहुंबिनय

यथा– वा गुनकी अगरी-अगरी, सगरी लयें रीति सुग्रंथनि गांही ।
जो पै[5] कहा भयौ बात कहा, कहिबै सुनिबै मैं कछू कहि आंही ॥
अैसैं नहीं[6] बलि यौं करिबौं, मिलिये चलि आंनदकैं मनमांही ।
क्यौं करौ नेहकी बातनमै, सु तिहारै सुनी मुष या नई नांही ॥ १९०

अथ मनावनलक्षन

दोहा– ढाहि देत हठ दुहुनकौ, रस करि दैहि मिलाइ ।
तासौ कहत मनाइबौ, कबितामैं कबिराइ[7] ॥ १९१

अथ श्रीराधिका कहुं मनायबौ

यथा– मोर ज्यौं[8]हेरत मेघनिकौं, हिय हंस ज्यौं सागरकौं मन टेरैं[9] ।
ज्यौं अलि हेरत कंजनिकौं, प्रति-हेरत ज्यौं अरिबिंद उजेरैं ॥
मांनिए मेरी अती[10]बिनती, मिलिये सषियां वे रही मन फेरैं ।
चौंकि-चकेसे[11]रहे चहुंघां, सु चकोरनि[12]ज्यौं बिन चँदकौं हेरैं ॥१९२

---

१८७. १ ख. गहरे ।
१८८. २ ख दउंन । ग. दुहूनकी ।
१८९. ३ ख. को । ग. कौ । ४ ख. जुत ही ।
१९०. ५ ख. यें । ग. जो पै । ६ ग. अैसौ नहि ।
१९१. ७ ख. कबिरायी ।
१९२. ८ ख. ज्यों । ९ ख. टेरे । १० ख. इती । ग. अति । ११ ख. चोंके-चकेसे ।
१२ ख. चकोरन ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

अथ श्रीकृष्ण कहुं मनाइबौ

दोहा– आपनैसैं परमान चलौ, हरि या बृजमैं[1] निबहै रस कैसें ।
मांन करैं वह तौ इह[2] बूझिए[3], आप करौं उलटी गति तैसें ।।
एतौ[4] भलौ अधिकौ न मनाव है[5], मेरी सौं बात बनावन[6] अैसें ।
काहूकौं बीच दै बीच न पारौ, मिलौ बलि ज्यौं मिलि आए हौ जैसें ।। १९३

अथ सिंगारलक्षन

दोहा– सजैं सिंगार दुहूंनके[7], सोरह बिबधि बनाइ ।
ताहि सिंगार बषांनिकैं, कहत सबै कबिराइ ।। १९४

अथ श्रीराधिका कहुं सिंगार

यथा– अंजन मंजन कैं दृग - रंजन, षंजन चंचलताई चुराई ।
मांग बनी सजनी सिरि ज्यौं गिरि, बिंधपै गंगकी धार धसाई ।।
टीका जरायकौं साथ लसै मिलि, भालपैं बंदनकी चतुराई ।
बैंनी बनाय गुही[8] बलि आजु मैं, मांनौं भुजंगनि पांष[9] लगाई ।। १९५

अथ श्रीकृष्ण कहुं सिंगार

यथा– स्यांम-सरीर[10] लसै पट पीत, मनौं घन-दामनि रूप भयौ है ।
बीरा[11] बन्यौं मुख सांथ मनौहर, यौं उमह्यौ[12] अनुराग नयौ है ।।
मोरकी चंद्रिका मोहै महा मन, अंग-प्रकासनतैं उगयौ है ।
चंदसे आंननपैं दिये षौरि, सुचंदनकी चित चोरि[13] लयौ है ।। १९६

अथ मिलैबौलक्षन

दोहा– काहू बिधि चित[14] दुहुंनकौ, मिलै मिलावै आंनि ।
ताहि कहत मिलाइबौ, कबिजन सबै बषांनि ।। १९७

अथ श्रीराधिकाकौ मिलाइबौ

यथा–मेरो कह्यौ सुन्यौ सो हितकौ, मिलि लालसौं मांनि कह्यौ सगलौ है ।
रीझत हैं सजनी सगरी, जिनसौं तुमसौं दिनमांन तलौ[15] है ।। १९८

---

१९३. १ ख. ग. व्रजमैं। २ ख. ईह। ३ ख. बूझियैं। ४ ख. ऐतौ। ५ ख. मनाइवो। ६ ख. बनावत।
१९४. ७ ख. दोहूनके। ग. दुहुनके।
१९५. ८ ख. गुहा। ९ ख. खांख।
१९६. १० ख. स्याम शरीर। ११ ख. वीरा। १२ ख. उमयो। १३ ग. चोर।
१९७. १४ ख. चित्त।
१९८. १५ ख. दिन मीत मिलो है।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

गौतिनकौ सुष हौ तिनमैं, सु तौ सौतिनकै भयौ चाला चलौ है ।
आजु भली पल आजु भली छिन, आजु घरी दिन आजु भलौ है ।। १९८

अथ श्रीकृष्णकौ मिलाइबौ

यथा—मोद भयौ सजनीगनमैं चहुं, कौद भरचौ रस-सायर तैसैं ।
लागे चकोरनलौं चष दौरि, फिरे न फिरैं इक सेवनि वैसैं ।।
राधिकसौं अति आधिक पांय, मिले हरि-संग सषागन अैसैं ।
ऊग्यौ नछित्रनिसौं[1] मिलि[2] मानौं, कमोदनिके कुलपैं ससि जैसैं ।। १९९

अथ भुकनलक्षन

दोहा—जो[3] सुषदायक निज हितू, कोउक औगुन देषि ।
षिजै दुहुंनकौ सहजमैं, भुकिबौ ता कहुं पेषि[4] ।। २००

अथ श्रीराधिका कहुं भुकिबौ

यथा—रावरी रौस परी यह कौंन[5], कहौ[6]सुषमैं कह[7]रोस रढावै[8] ।
मेरे बनाये बन्यौ रस आय, सु काहेकौं[9]और सी बात कढावै ।।
स्यांनप होइ तौ[10]आवै कछुक न तौ सुक लौं दिनमांन पढावै ।
मांन बढावत हौ उनसौं इत, मोसौं कहा बलि भौंह चढावै ।। २०१

अथ श्रीकृष्णकहुं भुकिबौ

यथा—मैं जु कह्यो नंदनंदनसौं, मिलिबेके सुभावकी रीति भनीलौं ।
पाई कहांतैं दिठाई इती, सो न गाई परै गुनवंते गुनीलौं ।।
आछी कहैं उलटी समुझै, मन होत कहा अभिमांन घनीलौं ।
त्यौं-त्यौं भई चित चौगुनीसी, दुगनी तिगुनी भई आठगुनीलौं ।। २०२

अथ उराहिनै[11] लक्षिन

दोहा—बिनां भांवती[12] बात लषि, दुलषै तिनकौं आय ।
तासौं कहत उरांहिनौ, सबै सुकबि मन लाय ।। २०३

---

१९९. १ ख. नक्षत्रनिसौं । २ ख. मिल्यो ।
२००. ३ ग. जौ । ४ ख. पैखि ।
२०१. ५ ख. कोंन । ६ ख. ग. कहा । ७ ख. कहा । ८ ख. बढ़ावै ।
९ ख. कायेकौं । १० ख. मानहोय तो ।
२०३. ११ ख. उराहना । ग. उराहनौ । १२ ख. भावनी ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

अथ श्रीराधिका कहूं उरांहिनौं

यथा–तू वडैं मानभरी अभिमांन, कितै कहिबै सुनिबै अवधारी ।
तौपैं[1] न तेरें न आवै कछू, मन आछी न अैसी दसा जो निहारी ।।
यौं बढ़ि बोलिबौसौ उनसौं, वै तौ[2] चाहि लगे तेरें रूप उजारी ।
हेरि हिये हरिके हितकौं सु, हहा बलि हौं इन बात निहारी ।। २०४

श्रीकृष्णकौं उराहिनौं

यथा–मांनसकौं पहिचांनत[3] नांहि, सबै रसरीतिकी रौस थकी है ।
जात जहां फिरि जात जहां[4], सकुचौ न तहां[5] गति या अधिकी है ।।
सांवरौ रूप सलौंनौसौ देषिकैं, भौरी वहै भ्रम पाइ छकी है ।
गाथ कहौ हरिजूकी अकाथ, हहा हरि रावरैं हाथ बिकी है ।। २०५

अथ सषी-बाकि-लक्षन[6]

दोहा– पियका सषि तियसौं[7] कहत[8], तियकी पियसौं आय ।
रसहि बढावै सो[9] सषी - बाकि कहैं कबिराय ।। २०६

अथ श्रीकृष्णकी सषीकौ बचन श्रीराधिकासौ

थया–आजु[10] किती बडीबारहू लौं, उन मोसौ कही किती बात तिहारी ।
तेरी कहावतिकौं कहिकैं, पछितावत केरि महा बनवारी ।।
मेरे कहैं मिलिए चलिकैं सो, सुधासौं सनी लियें रूप उजारी ।
चाहि रहे वे चकौरनि ज्यौं, बलि मांनिए हौं मुषचंदपैं वारी ।।२०७

अथ श्रीराधिकाकी सषीकौ बचन श्रीकृष्णसौं

यथा–चंदसी[11] चंद्रिकासी तजिकैं सु, रहे मन सौंषि जिकैं इक सातैं ।
या बलिकैं अभिमांन महा मन, है सो तौ रावरे नेहकैं नातैं ।।
तापर आप ईतौ करिए सुनि, आई पै[12] क्यौं न सुनाई न जातैं ।
तासौं मिले सो निहारी-निहारी हौं,तौं बलिहारी तिहारी ये बातैं ।।२०८

---

२०४. १ ग. तोपैं । २ ग. व तो ।
२०५. ३ ख. पहिचानित । ग. पहिचानत । ४ क. जाहां । ५ ख. जहा ।
२०६. ६ ख. सषीवाक्य लक्षन । ग. सषीवाकि । ७ ख. तियकों । ८ ख. कहति । ९ ख. ग. बढ़ावहि ।
२०७. १० ख. आज ।
२०८. ११ ख. चंद्रसी । १२ ख. आइयें ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

अथ चेष्टालक्षन

दोहा– पिय प्यारि[1] लषि परसपर, अति अँडात जम्हात ।
चितवैं मुरि मुसकै हसै, सो चेष्टा कहांत ।। २०९

अथ श्रीराधिकाकी चेष्टा

यथा–आजु कछू बारबार जम्हाइ, कछू सरसाइकैं मोद मढ़ी है ।
त्यौं-त्यौं महा अंगरावै कछू, अरसाय[2] रही मनमैं न दढी है ।।
सांची कहौं बलि मेरी सौं मोसौं, सु तू सुनि कैसें सुभाव कढी है[3] ।
दो अलि-पंकतिसी बढिकैं, भृकुटी चढि भाल अकास चढी है ।। २१०

अथ श्रीकृष्णकी चेष्टा

यथा–आवत जात हौं जांनि न जात[4], कछू गति-गूढ़से पाठ पढी है ।
बार ही बार उठौ अगराइकैं, हासि महा मन[5] मोद मढी है ।।
चाहसौं कौंन उछाह भरे सु[6], कहा अभिलाषकी बात रढी है ।
चंदसे भालपैं भौहैं बढी, अंषियां चढि आजु अकास चढी है ।। २११

अथ स्वयंदूतलक्षन[7]

दोहा– क्यौंहु न दंपतिकौं बनै, मिलबौ मनभय मांनि ।
बुधि-बल[8] हौंहि बसीट तहं, स्वयंदूत पहिचांनि ।। २१२

अथ श्रीराधिकाकौ स्वयंदूत

यथा–तैसी अंधेरीसी रैंनि[9] रही, चमकैं तहं चंचला चाइ[10] लगैंकौं ।
भारी त्यौं भौंन रु सूनै परोस त्यौं, सूनीसी एकषिलाइ संगैकौं[11] ।।
कान[12] सुनौं इह बात नई सु तौ, मोहि महा डर लागै अगैकौं ।
आजु अली मिलिकैं ननदीकै, गई सब रातिकै रातिजगैंकौं ।। २१३

अथ श्रीकृष्णकौ स्वयंदूत

यथा–तैसैंही कुंज रहैं अलि गुंजत, तैसैं चंपक चाल गही है ।
कोयल मोर मराल चकोर[13] चितै चहुंओरनि चौंप चही है ।।

---

२०९ १ ग. प्यारी ।
२१०. २ ख. अरसाई । ३ ख. कटी ।
२११. ४ ख. जांनिकें जात । ५ ख. महामनी । ६ ख. भरचो ।
२१२. ७ ख. स्वयंदूति । ८ ग. बुद्धि-बल ।
२१३. ९ ख. रेनि । १० ख. चाप । ११ ख. एक लीखाई संगैकों । १२ ग. कांन ।
२१४. १३ ख. चकोरन ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

देषिए नैक निहारि उतै, रतिराज महा मन मोद मही है
सायर सोहैं सरोजनिसौं, तैसें चन्द्रमा चांदिनी छूटि रही है ॥ २१४

इति श्रीनेहतरंगे रावराजा श्रीबुद्धसिंह सुरचते सषीजन कर्मचेष्टा स्वयंदूत निरूपणंनांम षष्टमो तरंग

★

अथ मानलक्षन

दोहा– अति हिततैं अनुरागुतैं, अंग गरब छबि छाइ[1] ।
ताही सौं कबिबर सकल, कहत मांन अधिकाय ॥ २१५

अथ मांनभेद

दोहा– लघु मध्यम गुरु मांनिए[2], प्रिय प्रति तिय अधिकाय[3] ।
प्रिय त्रिय प्रति प्रगटात है, कहि बरनत कबिराय ॥ २१६

अथ लघुमांनलक्षन

दोहा– कामनि और बिलोकतैं, नैंननि देषै आय ।
उपजत है लघु मांन तह, कहैं सकल कबिराय ॥ २१७

अथ श्रीराधिकाकौ लघुमांन

यथा–आरसी मंदिरमैं रिस राधिकैं, बैठि चढ़ी भृकुटी[4] लटैं षूंटी ।
ता छबि नैक निहारतही[5], आजु कौंन वे नारि न होति ज्यौं लूटीं ॥
ता समैंकौं सषियां चहुंधा घिरि, मांन मनांवन उप्पम[6] जूटीं ।
चंदकैं ज्यौं आसपासनि छायकैं, पंति[7] नछित्रनकी छबि छूटी ॥ २१८

अथ श्रीकृष्णकौ लघुमानलक्षन[8]

दोहा– कह्यौ करै नहि पीयकौ, तिया कौंन हू भाय ।
उपजत है लघु मांन तहं[9], प्रीतमकैं उर आय ॥ २१९

यथा–मोहन आजु कछू बलि राधेसौं, मानकी रीति हियें उघटी हैं ।
ता समैं आय सबैं सषियां, सो मनावनकौं अति बातैं थटी हैं ॥
ऐसैं अनेक समाजनसौं, उपमा मेरी आंषिनमैं उछटी[10] हैं ।
जैसें कमोदनिके कुलपैं, ससि छूटि मनौं किरनैं प्रगटी हैं ॥ २२०

---

२१५. १ ख. ग. छाय ।
२१६. २ ख. मानये । ३ ख. अधकाय ।
२१८. ४ ख. भ्रकुटी । ५ ख. निहार तहाँ । ६ उपय्यम । ग. उप्पमा ।
७ ख. पंकति । ग. पति ।
२१९. ८ ख. लछिन । ९ ख. ग. तहै । १० ख. उछूटी ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

अथ मध्यम-मानलक्षन

दोहा– करत बात पिय औरते[1], अवलौकै तिय आंनि ।
तमकि भौंह सतराय तहं, मध्यम-मांन बषांनि ॥ २२१

अथ श्रीराधिकाकौ मध्यम-मांन

यथा–राधिके[2] रोसमैं आजु लषी, गरैं मोतिनकी मिलि माल बिछूटीं ।
बातैं बकैं सक सैंन थकै, अैसैं नाषैं कितेकसी घातैं अफूटीं[3] ॥
गोरी मनांवनकौं सब दौरीसी, जे उपमां मंन मेरेमैं जूटीं ।
लै[4] छबि यौं अध-अंबरतैं, चपला मनु चंद मनांवन टूटीं ॥ २२२

अथ श्रीकृष्णकौ मध्यम-मांनलक्षन

दोहा– किहू भांति मांनत नहीं, तिया मनावत पीय ।
उपजत मध्यम - मांन तहं, आंनि पीयकैं जीय ॥ २२३

यथा–आजु कछू बलि राधिकासौं[5], हरि सोहत रूठिकै बैठे[6] अपूठैं ।
आय घिरी चहुंओरनतैं, यौं मनावन लागी सषीन अहूठैं ॥
ता छबिकौं लषिकैं इहि भायसौं[7], दौरी यों[8] उप्पमता न अनूठैं ।
चंदमुषी चहुं ओरनतैं, मनु चंदकौ[9] चंद मनावत[10] रूठैं ॥ २२४

अथ श्रीराधिकाकौ गुरु-मानलक्षन

दोहा-- देषि चिन्ह कछु सौतिकौ, सुनि वाकौ हित साज ।
उपजि परत[11] गुरमांन तहं, कहत सबै कबिराज ॥ २२५

यथा--मंद भयौ पियकौ मुष चंदसौ[12], चंद्रिका हौंन चली सरनैं है ।
सौंतिनके[13] षुले नैंन-सरोज, हितू चित जैसैं मुद्रा बरनैं हैं ॥
मोतिनहार नषित्रन - जोति, यौं मानसमैं उपमां झरनैं हैं ।
जेठ समैं मांनौं तापसौं तूटिकैं, छूटि परी रबिकी किरनैं हैं ॥ २२६

---

२२१. १ ख. ओरतें ।
२२२. २ ख. श्रीराधिका । ३ ख ग. अहूटी । ४ ग. ले ।
२२४. ५ ख. राधिकाकों । ६ ख. बैठि । ७ ख. इहिभाईसौं । ८ ख. होरी ।
९ ख. मनोचंदकौ । १० ख. मनावन ।
२२५. ११ ख. जरत ।
२२६. १२ ख. मुख चन्द्रसौ । १३ ग. सोतिनके ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

अथ श्रीकृष्णकौ गुरुमांनलक्षन

दोहा– तजि मरिजादा जगतकी, बचन कहति तिय[1] आंन ।
प्रीतमकै[2] उर आय तहं, उपजत है गुरुमांन ।। २२७

यथा–राधेसौं[3] आजु कछु नंदनंदन, भारी हियें मन मांन भरचौ है ।
सारी सषीन मनांवनकौं, मिलिबेकौं तऊ मनहूं न करचौ है ।।
ता छबिकौं लषिकें छकिकें, मन मेरौ यौं उपम्मताई तरचौ है ।
सांझ[4] समैं अरबिंदनपें ससि, सोलै कलानि लयें उघरचौ है ।। २२८

दोहा– तजें मांन प्रीतम प्रिया, बाढै[5] उर अनुराग ।
ते षट-बिंधि बरनौं अबै, सुनौ श्रवन-रस-लाग ।। २२९

दोहा– सांम दांन भेद रु प्रनत[6], और उपेछा होइ ।
पुनि प्रसंग बिध्वंस अरु, डंडन बरनें[7] कोइ ।। २३०

अथ स्यामलक्षन

दोहा– क्यौंहूं रसमय होत हैं, दंपति मांन निवारि ।
तांसौं सांम उपाय सब, कबिजन कहत बिचारि ।। २३१

अथ श्रीराधिकाकौं सांम-उपाय

यथा–हौं पठई कबकी मत लैंन, सौ तेरें कहा कितहू मन भायौ ।
कौंनसी बातन कैसी करै, नहिं जांनत कैसें कहा समझायौ ।।
और सीमेटि सबै चितकी[8], मिलबौ करिए अति ही अकुलायौ ।
तू सुनि री बलि चंदमुषीसों, चलै क्यौं न चंद सिरांहनें आयौ ।। २३२

अथ श्रीकृष्णकौ साम-उपाय

यथा–जा दिन तैंभये रावरें मांन[9], सम्हारै न बातनकी गहराई ।
वा दिनकी उन बातनपें बलि, कीजिये क्यौं यतनी[10] सतराई ।।
वाकै[11] भये मुष रूषें कछू, ज्यौं सबै सषियानकी उप्पम छाई ।
रातिकै आंवन[12] पांतिकी पांति, मनौं जलजातकी जात लजाई ।। २३३

---

२२७. १ ख. त्रिय । २ ख. पीतमके ।
२२८. ३ राधेसे । ४ ग. साज ।
२२९. ५ ख. वाटें ।
२३०. ६ ख. ग. प्रतन । ७ ग. वरनै ।
२३२. ८ ख. चितको ।
२३३. ९ ख. ग. मीन । १० ख. इतनी । ११ ग. वाके । १२ ग. आंबन ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

अथ दांनलक्षन

दोहा– कैंहू छल करि ब्याज मिस, मांन दैंहि बहराइ ।
मोहत मन मधुरे बचन, सोहैं दांन - उपाइ ।। २३४

अथ श्रीराधिकाकौं दांन-उपाय

यथा–केती मजूरी सुधारि कमांन, भरचौ भलका जिहिं बीच सराहैं ।
हेरि समुद्रसौं[1] लाल मगायकै, लाषनि साथ लई लषि लाहैं ।।
ल्याई तिहारे सिंगारकैं काजु, छकी मति रीझि लषैं छबि ताहैं ।
मोंलके[2] मैघेसौ मोती मनौं, नथ मोतिय-चंद मिल्यौ मुष चाहैं[3] ।। २३५

अथ श्रीकृष्णकौं दांन-उपाय

यथा–रातिके जागतही बृजचंद, निहारत आरसी ज्यौं सरसी है ।
पीछैसौं आय मनांवनकौं, सुषसौं प्रतिबिंब दै कैं परसी है ।।
आपनैं कंठकौ हार हियें पर, डारत उप्पमता दरसी है ।
फेरि फिरैं मुषचंदकी ओर[4], मनौं करि कांम-कमान कसी है ।। २३६

अथ उपाय-भेदलक्षन

दोहा– जाहां[5] आपु[6] अपनायकैं, तुरत छिडावै[7] मांन ।
सबै सषिन सुष देत हैं, भेद-उपाय सुजांन[8] ।। २३७

अथ श्रीराधिकाकौ भेद-उपाय

यथा--प्रातहुतै[9] मुष पांन दये नहि, रैंनि जगी अंषियां अनुरागी ।
याहीतै मैं पठई सबही मिलि, बोलन साथ बडी बडभागी ।।
चालौ मिलौ उठिकैं हितसौं,उनकी अैसें चाहि रही उरझागी[10] ।
चक्रत[11] चाहि चहूंदिसितैं, अवसेरि ज्यौं चंद-चकोरन लागी ।। २३८

अथ श्रीकृष्णकौ भेद-उपाय

यथा--लाल यती बिनती सुनिये, चलिये वैंही भौंनकौं प्रीतिकी रीतैं ।
औरको और भई जबतैं, वह जैसें रही सफरी बिन मीतैं[12] ।।

---

२३५. १ ख. ग. जाय समुद्रसों । २ ख. मोलक । ग. मोलकै । ३ ख. मुखवाहै ।
२३६. ४ ख. वोर । ग. और ।
२३७. ५ ख. जहां । ६ ख. आप । ७ ख. छिपावै । ८ ख. ग. सुजानु ।
२३८. ९ ख. प्रातहूं ते । ग. प्रातहूंतै । १० ख. ग. उर लागी । ११ ख. चकित ।
२३९. १२ ग. बिज सीतैं ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

वे उनकी सिगरी सषियां, अंषियां न रही उपमांनकी नीतें ।
मानौं रहे कुल पंकजके, बरषा रितु पाय वसंतकें बीतें ॥ २३९

अथ प्रनत-लक्षन

दोहा– महा मोहतें कांमकी, अति आतुरता पाइ[1] ।
पिव प्यारी पाइन परैं, सो है प्रनत - उपाइ ॥ २४०

अथ श्रीराधिकाकौ प्रनत-उपाय

यथा–प्रानपियारेके मांन समैंसो, अली परी पायन यौं परसै हैं ।
फैलि रहे मुष ऊपरसौं कच, अंगन - रंगनसौं बरसैं हैं[2] ॥
ता छिन ही उपमां यनसौं[3], मन मेरेमैं आयकें यौं बरसैं हैं[4] ।
मांनौं घनांघन-जालकें बीच, छिपाकर छूटि कछू दरसैं है ॥ २४१

अथ श्रीकृष्णकौ प्रनत-उपाय

यथा–राधेकें पाय परैं हरि त्यौं, मुष ऊपर केस परैं बसरी हैं ।
छूटि कछू छबिता उन बीचतें, यौं बरसाय कछू निसरी हैं ॥
सों समता चुभि आंषिनमैं, मन मेरेमैं आयकै यौ वसरी हैं ।
ज्यौं घनकें रबिजाल मही, कढि पार कछू किरनें पसरी हैं ॥ २४२

अथ उपेक्षा[5] लक्षन

दोहा– मांन तजै जातें सुतजि[6], औरें परसंग आंनि ।
छूटि जाइ[7] जिहि मांन मन, उहै उपेछा जांनि ॥ २४३

अथ श्रीराधिकाकौं उपेछा

यथा–चंद्रिका फैलि चहूं दिसितें[8] न, सु तौ चंद्रहासन चौंप चढ्यौ है ।
बोलें चकोर बंदीजनसे, त्यौं[9] कमोदनिपै दल भीर मढ्यौ है ॥
आजु मिलैगी कोई ब्रजचंदसौं, तू मिलै क्यौं न बियौग दढ्यौ है ।
सोहै नक्षत्र बीच[10] बढ्यौ यह, चंद नही रतिराज चढ्यौ है ॥ २४४

---

२४०. १ ख. पाय । ग. पाई ।
२४१. २ ख. अब अंगन-रंगनसौ परसै है । ३ ख. उपमाइनसौं । ४ ख. आयके यौं सरसें हैं ।
२४३. ५ ख. उपेक्षा । ६ ख. सुतज । ७ ख. जाहि ।
२४४. ८ ख. दिसतें । ग. दिशतें । ९ ख. ते । ग. त्यौं । १० ख. बीचि ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

अथ श्रीकृष्णकौं उपेक्षा

यथा—सोहत सजल घन - फौज चहुं-वोर[1] फैलि ,
मधुप - मतंग सम उर आवरेषियें[2] ।
चपला न हौंहि ए चमक चंद्रहासनकी[3] ,
बंदीजन बरही पपीहा लेषैं लेषियें[4] ।
गरजैं निसांन बोलैं कोकिल नकीबगन ,
मांन - गढ ऊपर सजत भय भेषियें ।
पावस - समाज सुभ बैगै राजतिलक लै ,
आजु रतिराज[5] एक राज जग देषियें ॥ २४५

अथ प्रसंग-बिध्वंसलक्षन

दोहा— चितमैं भय भ्रम आंनिकै, मांन तजत तिय पीय ।
सो परसंग[6] बिध्वंस यह, बरनत कबि कमनीय ॥ २४६

अथ श्रीराधिकाकौ परसंग-विध्वंस[7]

यथा—घोरि-घटा-घन घेरि रह्यौ घर, त्यौं चपला चमकैं अति औंडी[8] ।
तैसिय सीतल मंद - सुगंध, लगैं परवाईन होगी कनौंडी ॥
चालिकै जो मिलिए बृजचंदसौं, चाहि धरैं मन मांहि अचौंडी ।
तू सुनि री सु यतै लषि बैरनि, देही[9] फिरैं केती कोयल डौंडी ॥ २५७

अथ श्रीकृष्णकौ प्रसंग[10] बिध्वंस

यथा—च्यारचौही औरतै जोरि[11] रहे,घन सोर करैं मिलि मोर पपीहा ।
चंचला छूटि लसै बहसै झर, भूमि[12] समीरन साथ कपीहा ॥
एती करौं बिनती मिलिए, रहि वाही तिहांरै सनेह जपीहा ।
दै हित नैक निहारौ इतै, पर बाहरौ केतौ पुकारै पपीहा ॥ २४८

इति श्रीनेहतरंगे रावराजा श्रीबुद्धसिंह सुरचते मांनमांन-मोचन
बिधि निरूपणं नांम सप्तमो तरंग

---

२४५. १ ख. चहुं ओर । २ ख. अवरेषियें । ३ ख. चंद्रिहासनकी । ४ ख. लिखिये ।
५ ख. रितुराज ।
२४६. ६ ख. प्रसंग ।
२४७. ७ ख. ध्वंस । ८ ख. ओडी । ९ ख. ग. देती ।
२४८. १० ख. प्रध्वसंग । ११ ख. जोर । ग. जौरि । ११ ख. झूम ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

अथ पूर्वाअनुराग[1] बर्ननं

दोहा– पिय प्यारी दरसै जहां, चितकी लागै लाग ।
देषें बिन दुष दहत[2] पुनि, सो पूर्वाअनुराग ।। २४९

अथ श्रीराधिकाकौ पूर्वाअनुराग

यथा– कुंडल छटन बनमाल उछटन[3] वै ,
मुकट पलटन छूटी लटन[4] सुधारिगौ ।
भाल - भृकुटनि बरुनीनकी कटनि छिन ,
छिनकी छटनि नैंन - सैंननिमैं सारिगौ ।
चंदन लिलाट मुष मुरलीकैं थाट भटू ,
भैंटन[5] भिटाय एही मोहनीसी डारिगौ ।
पीत - पटवारौ जमुनांके तटवारौ वही ,
बंसीबटवारौ बटपारौ पाटपारिगौ[6] ।। २५०

अथ श्रीकृष्णकौ पूर्वा-अनुराग

यथा–काजरकैं षरसांन चढी, यौं भढी अभिलाष सनेह नवीनौं ।
पंषनिसी[7] पल पंषनिसौं, जे उझंकनिकै चित चाइ[8] प्रवीनौं ।।
की जबरी नफरी[9] सफरी, उन देषत ही मन मोलकैं लीनौं ।
मैंन-मढीसी गडी हिय आय, बडी-बडी आंषैं बडौं दुष दीनौं ।। २५१

दोहा– इहि पूर्वा - अनुरागतैं, दसौ औस्था[10] आय ।
ते अब बर्नो कर्मतैं, सुनौं[11] सबै कबिराय[12] ।। २५२

अथ दस-अवस्था नांव[13] कथन

दोहा– अभिलाष सु चिंता गुन कथन, स्मृति उद्वेग प्रलाप ।
उन्माद, ब्याधि, जडता रु भय, होत जु मिलन प्रताप ।। २५३

---

२४९. १ ख. पूर्वाणुराग । ग. जौरि । २ ख. दहन । ग.
२५०. ३ ख. उछतन । ४ ख. लटनि । ५ ख. भेटति । ६ ख. वाटपारिगो ।
२५१. ७ ख. पंखन । ८ ख. चाहो । ९ ख. तफरी ।
२५२. १० ख. ओसथा । ११ ख. सुतो । १२ ख. कविराई ।
२५३. १३ ख. नाभ ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

तहां प्रथमअभिलाष[1]-लक्षन

दोहा– मिली रहै गतिमति[2] जहां, जातिहूं पहलैं जाइ[3] ।
अब सरीर मिलिबौ चहै, सो अभिलाष कहाइ ॥ २५४

अथ श्रीराधिकाकौ अभिलाष

यथा– सोभा - सिंधु पारुनमैं[4] माधुरी अपारनमैं ,
चंदके प्रहासन[5] उजासन धिरत[6] है ।
भौंहनकी भंगै छूटि अलकैं - भुजंगैं मंद ,
हासन - तरंगनकी संग न भिरत है ।
देषैं बिन जेरी निस - द्यौस उरझेरी नंद-
नंदनकैं देषैं बिन आली न सरत हैं ।
तिरि तिरि तेरू भये जोगीलौं जगेरू लागे ,
मेरे नैन हेरूए पषेरूलौं फिरत हैं ॥ २५५

अथ श्रीकृष्णकौ अभिलाष

यथा–अंबर धारैं[7] निलंबरसौं, बडे नैंननि सुछ-सरोज[8] निगाहैं ।
बैंन[9] सुधासे सुधाधरसो मुष, देषी वा एक[10]या कुंजकी राहैं ॥
चाहैं मिल्यौ अब ही उनसौं, सब जे मति जे गति कीनी बिदा हैं ।
ता दिनतौं लागी वैही अथाचित, वैही मन वैही बिथा हैं ॥ २५६

अथ चिंतालक्षन

दोहा– कैसैंकैं मिलिए मिलैं, हरि[11] कैसैं बस होइ ।
यह चिंता चित मित्रकी, बरनत हैं सब कोइ[12] ॥ २५७

अथ श्रीराधिकाकी चिंता

यथा– जंत्र अनुराग सौच[13] तांत्रन सकोच मंत्र ,
मृदु मुसकांवनिकैं सोभा सरसैं रहे ।
भौंह - बरुनीन साज चितवनि चौककरि ,
अंग - अंग न्यारे करि अंगनकौं ले रहे ।

---

२५४. १ ख. अभिलाषा । २ ख. अति मति । ३ ख. पहुँले जाई ।
२५५. ४ ख. ग. पाटन । ५ ख. प्रहारन । ६ ख. धिरत ।
२५६. ७ ख. धार । ८ सुच्छ-सरोज । ९ बेनु । ग. बैन । १० ख. यैक ।
२५७. ११ ख. हर । १२ ख. कोय ।
२५८. १३ ग. सोच ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

गूढ़ गति केती औ अगूढ गति केती छिन ,
छिनकी छलावनिसौं छाय उरझै रहे ।
बृंदाबंनचंद - छबि देषत तिहारी नैंन ,
वा तियके भगलके बाजीगर ह्वै[1] रहे ॥ २५८

अथ श्रीकृष्णकी चिंता

यथा– चितांमनि चितबृत्ति रहे चाय भाय छबि ,
छीर गहराई नीर - गति सरसै रहे ।
तारे बिष-अमल[2] सतारे बिसतारे लषि ,
सुरा पुतरीन नीसतारे छक छै रहे ।
सुधा मंद - हासी बरसाय सरसाय छबि ,
लछि लाइ रूपवस जंत्र बिरझै रहे ।
चंदमुषी ए री मुषचंद लषै तेरो नैंन ,
बृंदाबनचंद्रके समुद्र सम ह्वै रहे ॥ २५९

अथ गुनकथन-लक्षन

दोहा– जह गुन-गन गन देह-दुति[3], बरनहुं सहित असेष ।
ता कहुं जानहुं गुन - कथन, मनमथ - मंत्र बिसेष ॥ २६०

अथ श्रीराधिकाकौ गुनकथन

यथा–कंचन जौ जड़ता तजि देय तौ, अंगके रूपसौं रूप दिषांवैं ।
षंजन मीन सुवा पिक तिर्जक[4], बिद्रुम[5] जाति कुजाति लहावैं ॥
राधिकाके अंग नीके हौं बांनिक, जांन कहैं उपमांन न आवैं ।
चंद कलंक बिना जन होइ तौं, तौ मुषचंद समांन कहावैं ॥ २६१

अथ श्रीकृष्णकौ गुन-कथन

यथा–मंडि[6] सुधानिकी धार चकोरनि, भौंरनि नेहलता बरसावै ।
षेद तजै भ्रमबेके[7] बिभेदकौं, रैनि उदैके प्रभावहि आवैं ॥

---

२५८. १ ख. है ।
२५९. २ ख. विस-अमल ।
२६०. ३ ग. देहु-दुति ।
२६१. ४ ख. तिर्यक । ५ ख. विंदुम ।
२६२. ६ ख. मुंडि । ग. मंड । ७ भ्रमिवेके ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

ताप तजै सजै आंनद आंषिन, ज्यौं मृदु-भाषनि[1] साषि बतावैं ।
चंदमुषी बृजचंदके अंगकी, सूरज तौ समता कहु पावै ।। २६२

अथ श्रीस्मृति-लक्षन

दोहा– औरे[2] कछू सुहाइ तहं, भूलि जाय सब कांम ।
मन मिलिबेकी कांमनां, ताकौ सुमृति[3] नांम ।। २६३

अथ श्रीराधिकाकी स्मृति

यथा–काहूसौं बात कहै न सुनैं, कछु षेलै नहीं छिन मंदिर मांहा ।
लागै नही मनहूं किहिं ठौर, सु औरसे लागत घांम रु छांही ।।
भूषन दूषनसे पहरैं, सो उतारि धरैं यो उठै सतराही ।
भोजन भांति सुहात न भांति सो, काल्हिसी राधिका आजु तौ नांही।।२६४

अथ श्रीकृष्णकी स्मृति

यथा–आपहीं जाय लगी कितकौं, दिन देह-दसा उर भांति न आंनैं ।
साथ सषा पर चैन रुचै, औरैं बातनके न बितांन बितांनैं ।।
नीद न भूष न काल्हिहीतैं, कछू नांही हितूनिहूंकौं मन मानैं ।
दैन लगी दुषकौं दुषियां, अंषियांनकी[4] वै अंषियां नहि जांनैं ।। २६५

अथ उद्वेगलक्षन

दोहा– षिन रोवै हुलसै हसै, उठि चालै उझकाय ।
जित-तित देषि चिते रहै[5], सो उद्वेग कहाय ।। २६६

अथ श्रीराधिकाकौ उद्वेग

यथा–चक्रतसी उझकीसी जकीसी, थकी बतियांनसी आंनत जीसैं ।
पीरैं भई[6] अंग हेरै नहीं, संग औरकी और कहै करि रीसैं ।।
कीजे कहा उपचार बिचार[7], निहारिकैं हारि रहे बिसै बीसैं ।
औरै भई ढंग जांनी परै नही, आजु नही रंग राधिका दीसैं ।। २६७

---

२६२. १ ख. भाषन ।
२६३. २ ग. औरैं । ३ ग. स्मृति ।
२६५. ४ ख. अखियानकी ।
२६६. ५ ख. चितते रहै । ग. चितै रहै ।
२६७. ६ ख. ग. पीर भई । ७ ख. विचारि ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

अथ श्रीकृष्णकौ उद्वेग

यथा—लागैं न वयौंहूं न बातनमैं, मंन आंगन पौरिन मंदिर मांहीं ।
चक्रतसे[1] चित चौंकि रहैं, उठि चालैं कहूं बरजै विरझांही ॥
एकटगी[2] टगसी जक लागीसी, आषैं रही बस मंत्रन गाहीं ।
कीजै कहा गति कैसी भई, मति आजु कछू हरिकौ सुधि नाहीं ॥ २६८

अथ प्रलापलक्षन

दोहा— थिर न रहत कहुं[3] गैर मन[4], अति अताप तन-ताप ।
कहै कछू बोलै कछू, कहि तासौं परलाप[5] ॥ २६९

अथ श्रीराधिकाकौ प्रलाप

यथा—करि साज संगीत सषी सुष-हेत, सु तो दुष देत अपूठी झुकीसी ।
भाय[6] मनायकैं सेवा करैं, दिन ही दिन देवता जांनो[7] बकीसी[8] ॥
जाय कहां करै को उपचार, सहाय करै मति होत रुकीसी ।
सारी सषीन रही ज्यौं जकीसी, ह्वै राधिके आजु कछू उझकीसी ॥ २७०

अथ श्रीकृष्णकौ प्रलाप

यथा—बोलैं कछु उठि बोलै[9] कछू, दिल षोलै नहीं गिनैं घाम न छांहीं ।
लागैं नही पल नींद न भूष न, जांनिये कौन दसा मन मांहीं ॥
टौंनांके टूंमेसे लागै भटू, सुनि तू लषि री गहिकैं बलि बांहीं ।
कै कितहूं परछांही परी, नंदनंदन आजु अकेलेसे नांहीं ॥ २७१

अथ उन्मादलक्षन

दोहा— बन - उपवन उद्दीप जे, चित - मति यौं दरसाय ।
सुष सब दुष ह्वै जात जह, सो उन्माद कहाय ॥ २७२

अथ श्रीराधिकाकौं उन्माद

यथा— सुधासौं छकीसी बकी नेहसौं जकीसी रहै ,
सोभासौं झषीसी उझकीसी नई नीकी हैं ।

---

२६८. १ ख. चक्रितसे । २ ख. येकटगी ।
२६९. ३ ख. कहूं । ४ ख. ग. ठौर मन । ५ ख. प्रलाप ।
२७०. ६ ख. माय । ७ ख. दिन देवता जानि । ८ ख. थकी सी ।
२७१. ९ ख. उठि डोलै ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

अलकैं जंजाल जटा - जाल त्यौं सुरष डौरे ,
भगवां बिसाल लाल अंबर नजीकी हैं ।
औरसौं न बोलै जिय षोलमैं न षोलै रहि ,
बातैं बरजीसी चितमति बरजीकी है ।
षंजनसौं तीषी हैं सरोजनि सरीकी[षी] लसैं ,
आली तेरी आंषैं किन सिद्धनसौं सीषी हैं ॥ २७३

अथ श्रीकृष्णकौ उन्माद

यथा--नांही कलंक कियें मुष करौसो[1], पापनकी अवली उमही है ।
नांही सितंबर कोढी कुढंग, 'बियोगन-श्रापन देह दही है'[2] ॥
छीन भयेंहू लयें[3] षलता, अरी देषि सो याकी ए रीति नई है ।
छंदसौं ए नहिं सोहैं अमंदसो, चंद नही यह राह सही[4] है ॥ २७४

अथ ब्याधिलक्षन

दोहा– प्रीति लगैं मिलिबो नहीं, प्रगटै ताकी पीर ।
तब बिबरन ह्वै जात जति, उपजति ब्याधि सरीर[5] ॥ २७५

अथ श्रीराधिकाकी ब्याधि

यथा-- आजु बेसम्हार बलि बिरह बिसालनसौं ,
ल्याये परजंक पर आंगनमैं[6] आरसे ।
छूटि रहे केस लंक लबढि - लबढि बाहैं ,
फैली गौरैं रंग उर अलकैं बिहारसे ।
छकी छबि देषि मति रति नां रती न गति ,
रंभाहू न अति रहे ऊपमके[7] भारसे ।
चंद्रिका सी चेरी रही चकई सी चौकि रह्यौ[8] ,
चाकरसौं चंद्रमा चकोर चौकीदारसे ॥ २७६

---

२७४. १ ख. तेरोसो । २ ख. तैसी वियोगनि देह देही है । ३ ख. लखें ।
४ ख. सई ।
२७५. ५ ख. शरीर ।
२७६. ६ ख. अंकनमें । ७ ख. उपमांके । ग. उपमके बहारसे । ८ ख. रही ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

अथ श्रीकृष्णकी व्याधि

यथा– देहकी सकल सुधि ग्वालनकी सुधि भूलै ,
देषै तन छबि आंषैं आवत हैं आंसु री ।
बसन - असन छिन - छिनमैं अभाये लागैं ,
चंद्रिका चितासी रु बिछौंनां भये डांसु री ।
हरि सांम्हैं[1] हेरि नैंन[2] देषि-देषि लागैं दुष ,
भरि गयौ[3] होयौ गरि गयौ तन - मासु री ।
'कहूं बनमाल नंदलाल कहूं पीतांबर[4]' ,
कहूं मोर - मुकट कहूंक परी वांसुरी ।। २७७

अथ जड़तालक्षन

दोहा– सुष दुष होत समांन सह, भूलि जात सुधि अंग ।
गति - मति देत बिसारिकैं, जड़ताकौ यह रंग ।। २७८

अथ श्रीराधिकाकी[5] जड़ता

यथा–लागि रही ताली चढी भृकुटी बिसाल अलकनि[6] ,
जटाजाल छूटी छबिता अछेह है ।
आसपास सषियां जमाति जग्यासी समाज ,
चंदन भसम लसै उपमांके मेह है ।
अैसी गति भईसी गईसी क्यौं रहीसी सुधि ,
जात न कहीसी यौं बहीसी रही देह है ।
निसि - दिन साधे बृजचंदके अराधेकौ सौ ,
सिवकी समाधि कैधौ राधेकौ सनेह है ।। २७९

अथ श्रीकृष्णकी जड़ता

यथा–छूटे त्यौं बार जटाजूटीं-जाल, बिभूतिसो चंदनके बरकीसी ।
बोलै नहीं पल षोलै नही षुलै, भाल चढी भृकुटी भरकीसी ।।
जांनै को कौनैं किये यन हाल, लसैं उपमां ज्यौं सुधा झरकीसी ।
आधे भये नंदनंदन आजुसौ, साधैं समाधि दिगंबरकीसी ।। २८०

---

२७७. १ ख. सामें । २ ख. हेरि नेक । ३ ख. वरि गयो । ४ ख. कहूं नंदलाल बनमाल क प्रीतपट ।

२७९. ५ ग. राधिकाकौ । ६ ग. अलकिनि ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

अथ करुणां बिरहलक्षन

दोहा– सुष उपाइ छूटत सबै, उर आकुलता मांनि ।
होत जहां करुनां बिरह, दंपतिकैं उर आनि ।। २८१

अथ श्रीराधिकाकौ करुनाबिरह

यथा–केतौ सिषाइकैं मैं[1] पठई, नफरी अजौं कौंनकैं संग लगी है ।
आपनीं-आपनीं चाढ महा, नहि जांनत हौं[2] मति मोसौं भगी है ।।
आपकी आप कहैं न बनैं, कोऊ जांनै कहा परपीर जगी है ।
कै कोई और जगी हियमैं, कै भई सषि सौतिनहीकी सगी है ।। २८२

अथ श्रीकृष्णकौ करुनांबिरह

यथा–जाय मिली उत आप नही, अभिलांषनि साथ महा अनुरागी ।
कौंनसौं या कहिए[3] सुंनिए, सुंनि रैंनि-दिनां अति ही उरझागी ।।
ए इनकी लषि रीति नई, सो कही हू न जात जिती मन आगी ।
देषैं बिनां दुष देंन महा[4], अषियां फिरि मेरी ए मोहीसौं लागी ।। २८३

अथ प्रवासलक्षन

दोहा– गवन करत प्रीतम-प्रिया, बिछरि कौंनहूं[5] काज ।
तांहि प्रवास बषांनिकैं[6], कहत सबै कबिराज ।। २८४

अथ श्रीराधिकाकौं प्रवासबिरह

यथा–जा दिनतैं बिछुरे नंदनंदन, ता दिनतैं कछु नीति न नैगौ ।
दीन भयौ दिनही-दिनपैं, रैंनि आवत ही दूनौं देषि नसैगौ ।।
मोहि भरोसौ इते पर हौ, सुनही उनहूंकैं बियोग बसैंगौ ।
जांनतही पियकैं बिछुरै, हिय काचकीं चूरि लौं टूक ह्वै जैगौ ।। २८५

अथ श्रीकृष्णकौ प्रवास-बिरह

यथा–देषैं बिनां उनकै कबहू, न[7] रहे न जुदे छिनहूं रतियां है ।
मोहि भरौसौ न हौं इतनौं[8], इनहूं फिरि कौंन गही गतियां है ।।
आवत एक[9] अचंभौ यहैं, सुनि री चित दै करिए बतियां है ।
वा बिछुरैंतैं न फूटि अहूटि, न टूटि छटूक भई छतियां है ।। २८६

---

२८२. १ ख. में । २ ख. महि जानत हों ।
२८३. ३ ख. कहियें । ४ ख. दुख देत महा ।
२८४. ५ ग. कौनहु । ६ ग. बषांन ।
२८६. ७ ख. कबहूं फिर कौन । ८ ख. इतनें । ९ ख. यॅक ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

दोहा– या प्रवासमैं होत हैं, भय - भ्रम निद्रा आंनि ।
पुनि पत्री द्वै भांति सुनि, बाक्य लिखन मन मांनि ॥ २८७

अथ भय-भ्रमलक्षन

दोहा– जहं प्रवासके बिरहतैं, उपजत है भय - भ्रम ।
तासौ भय भ्रम कहत है, सब कबि मन-बच-क्रम ॥ २८८

अथ श्रीराधिकाकौ भय-भ्रम

यथा–सीस नछित्रन[1] मांग बनाय, दिये ससि टीकासो भाल जतांईं ।
बोलकै बोली उलूकनि त्यौं, दसहूं दिस चीर दसा दरसांईं ॥
संग सषीन चुरैलनिसौं, घन ज्यौं तम छूटिकैं केसनि छांईं ।
तू सुनि री बृजचंद बिना, अलि राकिसी तैसीं निसा फिरि आंईं ॥ २८९

अथ श्रीकृष्णकौ भय-भ्रम

यथा–कंठ[2] षद्यौतनके गहनां, बनि अंबर नील - घटा घहरांईं ।
त्यौं चपला चमकैं अति हाससो, केस षुले धुरवा छबि छांईं ॥
बोलत बोल मयूरनकैं मिस, दादरकैं बिछियांन बनांईं ।
चंदमुषी बिन तू सुनि री, निस फेरि चुरेलिनि ज्यौं चलि आंईं ॥ २९०

अथ निद्रालक्षन

दोहा– अति बिरहै[3] परवासतैं, निद्रा आवत[4] नांहि ।
तांसौ निद्रा सबैं कबि[5], समझि लेहु मन मांहि ॥ २९१

अथ श्रीराधिकाकी निद्रा

यथा–मोहनकौं दुष दीनौं सदा ही, इहीं दुषदायक दूनी दुषाई ।
जो चरचा इनकी जु सुनी, सु अबै वह आपसौं जांनिहो पाई ॥
दाव बन्यौं सु करै न कहा, तकि मौंसर कौं उन संग सिधाई ।
नेह नए[6] इन नैंननिकौं, बिछरें निस नाहकैं नीद न आई ॥ २९२

---

२८९. १ ग. नछित्र ।

२९०. २ ख. कंच ।

२९१. ३ ख. विरह । ४ ख. ग. आवति । ५ ख. कहत कवि ।

२९२. ६ ख. नेह नयो ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

अथ श्रीकृष्णकी निद्रा

यथा—वा तियकैं बिछुरैं बिछरी[1], सु कियें उपचारनहूं फिरि आगी ।
आंयेतैं[2] आय[3] है लार लगी, उमगी अंग-अंग षरो अनुरागी ।।
आंवनद्यौं नहि मैंहूं अबै, रसमैं रत ह्वै निस-बासर जागी ।
लागैं नही पलहू पलकैं, नैंनां नीद[4] गई उनकैं संग लागी ।।२९३

अथ पत्रीबर्ननं

दोहा— पत्री दोइ[5] प्रकारकी, बरनत है कबिराज ।
एक लिषन इन बाकि पुनि[6] तिनके सुनौं समाज ।। २९४

अथ लिषनपत्रीलक्षन

दोहा— बिरह-बिकल अकुलाइकैं, लिषि पठवत[7] कछु बात ।
लिषन पत्रिका ताहि सब, कबिकुल बरनत जात ।। २९५

अथ श्रीराधिकाकी लिषन पत्रिका

यथा— लिषन सकत तातैं उतही पठाई आयौ ,
ह्वैहै रितुराज नेहआंचतैं न आंचियौ ।
देषि-देषि अलि अषरांनकी[8] अवलि मेरे ,
बिरह - अंदेसेके संदेसें चित सांचियौ ।
कोकिला[9]कासीद मुष-बचन कहै सो मांनि[10] ,
पौंन डाक[11] चौकीदार चाकरी न रांचियौ ।
राती अनुरागको सुहाती फूल - छापनि ,
धपाती नव - पत्रनकी पाती लाल बांचियौं ।। २९६

अथ श्रीकृष्णकी लिषनपत्रिका

यथा— केता करि लिष्या फेरि जादा करि लिष्या जात ,
मिलनां न औधिपैं बिसारौ मति मन है ।
ज्यौं-ज्यौं यादि आवै वैही बातैं फिरि यादि करि ,
देषनां न औरका सुहावै कछू तन है ।

---

२९३. १ ख. बिछुरी । ग. बिछुरें । २ ख. आयतें । ३ ख. आई । ४ ग. नींद ।
२९४. ५ ख. दोय । ६ ख. वाक्य पुनि ।
२९५. ७ क. यठवत ।
२९६. ८ ख. अषरानिकी । ९ ग. कौकिला । १० ग. मांन । ११ ग. डांक ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

सोई सुभ घरी सुभ दिन सुभ छिन सोई ,
रावरैं दरस लागी आवैं एकपन हैं ।
कहनां न जात कछु कह्या इस हालका सो ,
सांची प्रीति जालिम जवालिका सदन है ॥ २९७

अथ बाक्य-पत्री[1] लक्षन

दोहा– कहि पठवै मुषबचन कछु, बिरह बिकलता होइ ।
बाकि - पत्रिका कहत हैं, तासौं सब कबि लोइ ॥ २९८

अथ श्रीराधिकाकी बाक्य-पत्रिका

यथा– फूले सर कवल तड़ाग उडि मिले भौंर ,
ह्वै चहुं ओर चौंर झौंर[2] झुकि रहिये ।
गालिब गुलाब चंपा भौरै हैं रसाल तर ,
कंचन चंबेलिनकी चगुली न चाहिये ।
उज्जल अवासनकी भासें चादिनी उजासैं ,
देषि - देषि जासैं दिन - दिन न निबाहिये ।
विरह - अंदेसौ आंषै देषि जाय तैसौ सुनि ,
पंथी बीर[3] इतनौं संदेसौ जाय कहिये ॥ २९९

अथ श्रीकृष्णकी बाक्य-पत्रिका

यथा– यौंही बरसांवन सु आयै[4] बर सांवनकौ ,
नेह सरसांवन बिरह तन तैसौ है ।
मोर[5] मिलि गावन पपीहै परचावन पै ,
नांही पर-चांवन समाज जिय अैसौ है ।
आवनकैं मग अैंसी धारी बृत[6] लोंचनन ,
ज्यौं चकोर चंदबृत धारनकौं जैसौ है ।
आवन अदेसेकौ संदेसौ लिषियौं न अजौं ,
कहियौ हमारौ यौ अंदेसेकौं[7] सदेसौं है ॥ ३००

---

२९८. १ ख. बाक्य पत्रोका । टि.–छन्द संख्या २९८ [ख] प्रतिमें नहीं है ।
२९९. २ ख. ह्वै ह्वै चहूँ ओर ठोर झोंर । ३ ख. वार ।
३००. ४ ख. आयो । ग. आयौ । ५ ग. मौर । ६ ख. धारी व्रत ।
७ ग. अंदेसे क्यौं ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

दोहा– बिछरत[1] प्रीतम - प्रिया जहं, बिप्रलंभ-सिंगार ।
बरन्यौं च्यारि प्रकार यौं, करिकै बहु बिस्तार ।। ३०१

दोहा– मांन पूर्ब-अनुराग पुनि, करुनां बहुरि परवास[2] ।
कहे जथामति बरनिकैं, बुधि-बल कछुक प्रकास ।। ३०२

इति श्रीनेहतरंगे रावराजा श्रीबुद्धसिंह सुरचते प्रवास–
बिरह निरूपणनाम अष्टमो तरंग

★

अथ भावबर्नन

दोहा– रस सो ब्रह्मस्वरूप है, कहत सबै कबिराव ।
प्र[पु]नि प्रगटत है भावतैं, तातैं बरनौं भाव ।। ३०३

अथ भावलक्षन

दोहा– मिलि दंपतिकी प्रीति जो, प्रगटत अषिया आय ।
ताहीसौं सब कहत हैं, भाव कबिनके राय ।। ३०४

अथ भावनांम

दोहा– पांच भांतिके भाव हैं, सुनि बिभाव अनुभाव ।
थाईभाव[3] र[4] सात्विको, अरु संचारी - भाव ।। ३०५

अथ विभाव लक्षन

दोहा– जिनकै जिनते[5] प्रगट ह्वै, मैंन बढ़ावत प्रीति ।
आलंबन उदीप करि, सो बिभाव द्वै रीति ।। ३०६

अथ आलंबन उद्दीपनबर्ननं

यथा– प्यारी पिय बृजचंद सकल, आंनंदकंद अलि ।
कोकिल-कुल कल-कुहक कुंज, कुंजनि गुंजत अलि ।।
सरद - चंद दीपति अमंद - छबि, छंद - छंद सुष ।
सौरभ - सुमन - समाज सेज, संगित गुन - गन मुष ।।

---

३०१. १ ख बिछुरत ।

३०२. २ ख. प्रवास ।

३०५. ३ ख. स्थाई भाव । ४ ख. रु ।

३०६. ५ ग. जितनै ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

कलहास बास उजास ग्रिह, बिबिधि बास सुषनिधि धरनि ।
संपति समाज सब रितुनके, 'आलंवन दीपन बरनि[1]' ।। ३०७

अथ अनुभावलक्षन[2]

दोहा– आलंबन उदोपकैं, पीछैं उपजत जात ।
सो अनुभाउ[3] बषांनिऐं, प्रीतम हित अधिकात ।। ३०८

अथ अनुभावनांम

दोहा– देषनि बोलनि चलनि हित[4], चुंवन औ परिरंभ ।
इत्यादिक अनुभाव हैं, बरनहुं करि आरंभ ।। ३०९

अथ स्थाईभावकथन

दोहा– रति थाई सिंगारमैं, रहत हासिमैं हासि ।
करुणांकै बिचि सोक है, रौद्रहि क्रोध बिकासि ।। ३१०

दोहा– बीर बीच उतसाह है, भयहि भयानक बास ।
बिभछा मधि निंदा बसय, बिसमय[5] अदभुत यास ।। ३११

दोहा– नऊं सांत रस तास मधि, थाई है निरबेद[6] ।
सो सरूप सब बरनमैं, सब जन[7] मांझ अभेद ।। ३१२

अथ सात्विक-भावकथन

दोहा– स्वेद रोम सुरभंग कहि, 'कंप बिबर्नहि जांनि[8] ।
आंसू प्रलय स्थंभ ए, सांत्विक - भाव बषांनि ।। ३१३

अथ संचारी-भावलक्षन

दोहा– सागर मांझ तरंग ज्यौं, सबै रसनिमैं होत ।
ते संचारी जानिए, जिनकी बुद्धि उदोत ।। ३१४

अथ संचारी-भावनांम

यथा– निर्बेद, गलांनि, संका, आलस, दय, निमोह ,
श्रम, मद, कोह, मति, सुमृति, बषानिये ।

---

३०७. १ ख. उद्दीपन आलंब बरनि ।
३०८. २ ख. अनुभाव लक्षितं । ३ ख. अनुभाव ।
३०९. ४ ग. चित । टि०—छन्द संख्या ३०९ ख. प्रतिमें अपूर्ण है ।
३११. ५ ख. विस्मय ।
३१२. ६ ख. निर्वेद । ७ ख. सब जग ।
३१३. ८ पंकहि बर्नहि जानि ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

ब्रीडा, धृति, नीद, निंदा, जड़ता, बिषाद, चिंता ,
उतकंठा, आबेग, चपलता, प्रमानिये ।
सुपन, प्रबोध, ब्याधि, उग्रता रु उनमाद ,
त्रक, त्रास, भय, गर्व, हर्ष, उर आंनिये ।
मरन, अपसमार, सहित संचारी - भाव ,
तेतीस सुकबि एई नीकें पहिचांनिये ॥ ३१५

दोहा– 'यनि भायनि[1]' मिलि होत है, रस-सिंगार अनियास ।
ता सिंगार करि करत हैं, तेरे हाव प्रकास ॥ ३१६

अथ हावनांम

दोहा– हेला लीला मद बिहृति, किलिकिंचित बिब्बोक ।
मोटायत बिभ्रम ललित, कुटमित परगट लोक ॥ ३१७

दोहा– बोधक बहुरि बिलास भनि, बिछित्यादिक हाव ।
तिनके लक्षन लक्ष अब, सुनौं सबै कबिराव ॥ ३१८

अथ हावलक्षन

दोहा– नैंक न लाज समाजकी, महा मानियत कांनि ।
लसत जहां पीतम प्रिया, हेला - हाव सुजानि ॥ ३१९

अथ श्रीराधिकाकौ हेला-हाव

यथा–नैंननि अंजनकै धरिबै, धिरबै भृकुटीनकी जूटै निकाई ।
छूटिबै पीठिपैं बारकै भारनि[2], भौंर-कतारनकी छबि छाई ॥
आवन कुंजनकै प्रति-कुंजन, केसरि-षौरि-प्रभा बगराई ।
राधे सुनौं कछु काल्हिहीतैं, जु लए इनि[3] बातनि मोल[4] कन्हाई ॥ ३२०

अथ श्रीकृष्णकौ हेला-हाव

यथा–अंगके रंगसौं[5] हासी - प्रसंगसौं, भौंहके भंगनते छबि छायौ ।
कैऊ उपंगनके ढंगसौं, दुनि देषन केसरसौं सरसायौ ॥

---

३१६. १ ख. इनि भाईन ।

३२०. २ ख. भारन । ३ ग. इन । ४ ख. मोलि ।

३२१. ५ ख. रंगसे ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

राकाकी ग्राजु निसा मिलि ग्राय, लयौ[1] केते भायनसौं[2] परसायौ ।
नंदके नंदनकौ बिनि मोल, गयौ मन हाथसौं हाथ न ग्रायौ ॥ ३२१

ग्रथ लीला-हावलक्षन

दोहा– पिय - प्यारी लीला करत, ग्रपनैं मनकैं भाव ।
बहु भांतिन ग्रभिलाषतैं, बरनौं लीला - हाव ॥ ३२२

ग्रथ श्रीराधिकाकौ लीला-हाव

यथा– तेरे बिन देषें तिन्हैं चैंन कैसै होइ जिन ,
लोचन - चकोरन पियूष - रस चाष्यौ है ।
बोलिनिमैं उझकि-उझकि[3] झांकि-झांकि जात ,
लाष भांति देषनकौं चित ग्रभिलाष्यौ है ।
कबहूक चित्रमै बिचित्र ग्रापुचित्र लिषें ,
पाय परि प्यारी मृदु - बैंन मुष भाष्यौ है ।
ग्रांगनतें कुंजनलौं कुंजनतें ग्रांगनलौं ,
ग्रांगन ग्रौ कुंज भौंन एकैं[4] करि राष्यौं है । ३२३

ग्रथ श्रीकृष्णके लीला-हाव

यथा–बाहरितें घरमैं फिरि बाहरि,ग्रातुरता ग्रति ही उर झा[जा]गी ।
कुंजनतें प्रति कुंजनतें, सषा संगनतें मिलि षेलबै भागी ॥
ग्रैसें नई दिन च्यारिकतें, बिधि कैसें कही परै जात ग्रघागी ।
एरी ग्रली तेरे देषनकी, बृजचंदकौं चाह चुरेल ह्वै लागी ॥ ३२४

ग्रथ मद-हावलक्षन

दोहा– ग्रधिकाई लहि प्रेमकी, उपजत हिये गुमांन ।
सो मद - हाव बषांनिये, जांनहु सुकबि सुजांन ॥ ३२५

ग्रथ श्रीराधिकाकौ मद-हाव

यथा-- साथ सषीनमैं षेलिबे[5] कौंन, मिलै मन भूलि रचै नहि कोई ।
फूलेसे गात लसैं सरसात[6], सो लाज सबै लषि बेनकी षोई ॥

---

३२१. १ ख. लखो । २ ख. भार्यानसौं ।
३२३. ३ ख बेलिनमें उरझि-उरझि । ४ ख. येकें ।
३२६. ५ ग. षेलिबौ । ६ ख. लसें सर साथ ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

जा दिनहींतैं मिली बृजचंदतैं, भोजनकी सुधि जात न जोई ।
कोई हसौ भलि कोई रिसौं भलि,कोई कहौ कि सुनौं भलि कोई ।। ३२६

अथ श्रीकृष्णकौ मद-हाव

यथा–देषैं न भेषैं बिसेषौ कहूं, अवरेषैं लषै टगी एकमैं राषैं ।
चौकैं चकै भ्रमैं भूलैं सुभाव, सौं चाउ[1] उपाय करै यक[2] पाषैं ।।
जानैंहौ अैसैं अबै[3] नंदनंदन, डोलत क्यौं बृजपैं रज नांषैं ।
रैंनि जगी कछु आजुहीतैं[4], अंषियां लगी दैंन सनेहको साषैं ।। ३२७

अथ बिहति-लक्षन[5]

दोहा– जाहि न बोलन देति है, लाज गहत[6] है आइ ।
बिहति-हाव सो बरनिए, बांनिक बिबधि[7] बनाइ ।। ३२८

अथ श्रीराधिकाकौ बिहति-हाव

यथा–सौंहैं[8] किये न हसैं सरसैं, तरसैं जु तऊ अभिलाषनि ओरी ।
चौंकति चक्रतसी चितहूं, अंगहूं न अरै धरै लाज निहोरी ।।
कौलग वा बृजचंदसौं बावरी, चायनकी भरि है ढंग ढोरी ।
राधिकाकी अजहूं लगतै, अंषिया अषियांनतै जात न जोरी ।। ३२९

अथ श्रीकृष्णकौ बिहति-हाव

यथा–आजु कछू नंदनंदनसौं, बलि राधे उराहनैं दैन झुकैं हैं ।
केते अगूढ़ औ गूढ़ किते, कहिबे सुनिबेकौं कितेक बकैं हैं ।।
यौं सकुचे सरसे दरसे, मिलि उप्पमताईसौं अैसैं जकैं हैं ।
चंदसौं ह्वै अरिबिंद[9] मनौ, मुषचंदकै साम्हैं न ह्वै न सकैं हैं ।। ३३०

अथ किलिंकिंचितलक्षन

दोहा– स्रम[10] अभिलाष सगर्ब मिलि, क्रोध हरषकौं जांनि ।
उपजत संग सदा तहां, किलिंकिंचित[11] सो मांनि ।। ३३१

अथ श्रीराधिकाकौ किलिंकिंचित

यथा–देषि रहै हसिबौई करै, मिलिबेकौं अरै मन मोद बढ़ावै ।
चौंकै चकै बकै बावरीसी, थिर हू न रहै ढिग कौंन पठावै ।।

---

३२७. १ ख. चाव । २ ख. इक । ३ ख. कवै । ४ ख. आजहीतें । ग. आजहीतें
३२८. ५ ख. विहत-लक्षन । ६ ख. गहति है । ७ ख. विविध ।
३२९. ८ ग. सोहैं ।
३३०. ९ ख. अरविंद ।
३३१. १० ख. श्रम । ११ ख. किलकिंचित ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

आजु ए तेरे सुभाव अली, वृज वैद बिनां भ्रम कौंन कढ़ावै ।
बांनसे[1] नैंन सरोजसे तांनि, कमानसी भौंहैं उतारै चढ़ावै ।। ३३२

अथ श्रीकृष्णको किलिंकिंचित

यथा—चाहत है मिलिबौ कबहू, कबहू सजै अंग सिंगारनकैं हैं ।
काहूसौं रीझि हसै रिसै काहूसौं, काहूकै संग जकै उझकै हैं ।।
ये बनि अैसे सुभाउ[2] अली, सबकी[3] मति देषतहा जु थकैं हैं[4] ।
लागे रहैं थिरहूं न कहूं, नैंना आजु तौ सूधै न ह्वै न सकैं हैं ।। ३३३

अथ बिब्बोक-लक्षिन

दोहा— नेह - रूप अभिमांनसौं, तहां अनादर होइ[5] ।
उपजहै[6] इह हाव तहं, कहि बिब्बोकहि सोइ ।। ३३४

अथ श्रीराधिकाको बिब्बोक-हाव[7]

यथा—एक समै बृषभांनलली, चली कुंजगलीनि अली संग लायें ।
ग्वालनके गनमैं नंदनंदन, जानि कढे भुजमूल मिटायें ।।
नैन चढ़ाय हियें अकुलायके, बैन कहे रिसके सतरांये ।
बावरी कौंन बकै दिनराति, न जात न[8] जाति सुभाव मिटाये ।। ३३५

अथ श्रीकृष्णको बिब्बोक-हाव

यथा—साजैं सिंगार सषीनकी संगति, देषी हुती बृषभांनदुलारी ।
लालन चित्त घनैं ललचैं, भुज-भेटनकौं बढ़ि बांह पसारी ।।
नैंनकी सैंननि संक झुकी, उझकी कटु-बैंन उचारत गारी ।
जांनै कहा चतुराईकौ जो, रसआषर गोरस-बेचनहारी ।। ३३६

अथ मोटायति-हाव-लक्षन

दोहा— भावनके संगसौं जहां, उपजत सांत्विक भाव ।
ताहि छिपावन कीजिए, सो मोटायत हाव ।। ३३७

---

३३१. १ ग. बानसै ।

३३३. २ ख. सुभाव । ३ ख. सचकी । ४ ख. न होय सकैं हैं ।

३३४. ५ ख. होय । ६ ख. उपजत है ।

३३५. ७ ख. विधोक-हाव । ८ ख. जाति न । ग. जातनि ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

अथ श्रीराधिकाकौ मोटायति-हाव

यथा–बैठी हुती गुरु लोगनमैं, भये सांझ लिये उपमान तटी हैं ।
रातिके भूषनसौ[1] हरि देषि, लजि गति[2]सात्वगकी[3] उपटी हैं ।।
चाहै छिपावनकौं छलसौं, छबि सो उरमैं कहिबै बिछटी हैं ।
चंदसौ आंनन ढांपतही, नभ छूटिकैं चंदकला उछटी हैं ।। ३३८

अथ श्रीकृष्णकौ मोटायति

यथा–बैठे तहां गुरु लोग समाजमैं, सोहैं बनाव बनाय रणेसे ।
एक सषी तहां राधिकाकी, निकसी सुधि आयकैं देषि तकेसे ।।
ता छिन ही भाव सात्विगसौं, सो छिपांवन काज इलाजन केसे ।
छूटि छकेसे लषेसे लषे, उझकेसे बकेसे सकेसे जकेसे[4] ।। ३३९

अथ बिभ्रम हावलक्षन

दोहा– करत[5] औरके और ठां, भूषन बसन बनाव ।
पिय देषनकी चाहसौं, सो सुनि बिभ्रम - हाव ।। ३४०

अथ श्रीराधिकाकौ बिभ्रम-हाव

यथा– नेवर जराऊ मनि जेहरी बिसरि दोऊ ,
पाइ अरिबिंदनपैं बांदिनकौ धरिबौ ।
बाधे त्रिबलीन कसि हेरति हियेंपैं हार ,
हीय मनि किंकनोको भासनिकौ भरिबौ ।
जावक रंगीले मृगसावक से नैंन इहि ,
भावक अनौषे हरि तन - मन हरिबौ ।
कांननिमैं मुरलीकी तांननि सुनतही सु ,
सीषी कहां कांननमैं काजरकौ करिबौ ।। ३४१

अथ श्रीकृष्णकौ बिभ्रम-हाव

यथा–एक समैं बृषभांनसुता, सु गई निज धांमहि नंदके नौती ।
बैठी हुती बनिकै बहु बांनिकैं[6], जांनिक दीपकी ज्यौतिसौं जोती ।।

---

३३८. १ ख. भूषनिसौ । २ ख. लगी गति । ३ ख. ग. सात्विककी ।
३३९. ४ ख. पगेसे ।
३४०. ५ ख. करन ।
३४१. ६ बांनिक ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

एतेमैं देषि छके नंदनंदन, चाहि रहे तिन्हैं अंग जुन्हौती ।
बीरी दई कितहू बगराय, रहे भ्रम पाय चबाय चुनौती ।। ३४२

अथ ललित-हावलक्षन

दोहा– देषनि बोलनि[1] चलनि हित, प्रगटत कांम-कलांनि[2] ।
मोदकलित अति रसबलित, ललित-हाव उर आंनि ।। ३४३

अथ श्रीराधिकाकौं ललित-हाव

यथा– बारनके[3] भार लगि लागे लंक पार मिलि ,
चंदमुष - आंननपैं अलकैं सुहात हैं ।
कुंज - भौंन फिरत घिरत हेरि हंसकुल ,
सोहैं साथ सषियां समाज सरसात हैं ।
चीर जालदार अैसैं राजत कसूंभैं रंग ,
ताकैं पार गहरी गुराई अधिकात हैं ।
आसपास चंचल चकोरनकी चौकी पर[4] ,
केऊ चारु चंद्रमांकी चौकी चली जात हैं ।। ३४४

अथ श्रीकृष्णकौ ललित-हाव

यथा– मांथै मोरपछिकौ मुकटसो मयंक - छवि ,
दबि गए तिमर बियोग - दुष - दंद से ।
पीतांबर संध्या समैं अंबरको उपमांन ,
आसपास ग्वालगन उडगनबृंद से ।
फूले फूल गोपिनके[5] बदन कुमद - बन ,
लोचन - चकोरनके ताप मिटे मंद से ।
आनंदके कंद आजु सकल कला सहित ,
चंदमुषी देषि बृजचंद लसैं चंद से ।। ३४५

अथ कुट्टमित-लक्षन[6]

दोहा– केलि कलहको केलिमैं, जहां केलि अधिकाय ।
सोई बरन्यौं कुट्टमित, हांव सुनौं कबिराय ।। ३४६

---

३४३. १ ख. बोलीन । २ ख. कामकलांन ।
३४४. ३ ख. वारनिके । ४ ख. चोकि परें ।
३४५. ५ ख. फूल फल गोपिनके । ६ ख. कुहमित लछिन ।
टी.–छन्द संख्या ३४६ क. प्रतिमें नहीं है ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

अथ श्रीराधिकाकौ कुट्टमित-हाव

यथा–पहिलें[1] तजि मांन मनाय रही, परि पाय कितीक किये उपषांनें ।
ऊतर हू न दियौ गहि मौंन, सषी न लषी दृग बोल न मांनें ॥
आपुहि जाइ[2] मिली बृजराजहि, लाज तजी हियसौं हित ठांनें ।
पेमके पंथकी बात सषी, सुनि पेमके पंथ चलें सोई जांनें ॥ ३४७

अथ श्रीकृष्णकौ कुट्टमित हाव

यथा–हौं पचि हारी मनांवनकौं, न मनें तऊ ज्यौं हठसौं सबही है ।
आपुही जाय मिलें नंदनंदन, मांनकी बांन दसा न दई है ॥
याकौ अचंभौ कहा सजनी, जिनकी केती साषि[3]पुरांन कही है ।
मेरी सौं मोसौं न जात कहो, नैंनां नेह लगेनकी रीति नई है ॥ ३४८

अथ बोधक-हावलक्षन

दोहा– सेंनहिसौं[4] समुझें जहां, प्रकट करें नहि प्रीति ।
रस-हुलास दूनौं बढै, यह बोधककी रीति ॥ ३४९

अथ श्रीराधिकाकौ बोधक-हाव

यथा–बैठे हुते[5] गुरु-लोगनमैं, नंदनंदन अंग घनें छबि छाये ।
राधिकाके ढिगकी अलि आय, निहारिकें सेंन[6] कछू सरसाये ॥
बोलें बिनां मुषसौ छबिसौं, सो मिलापकौं ग्रैसी दसा दरसाये ।
देषिकें वा रुषहीकौं जबें, फिरि फेरिकें नेंन-सरोज[7] दिखाये ॥ ३५०

अथ श्रीकृष्णकौ बोधक-हाव

यथा–मंदिर आपनें आलिन साथ, सौ बैठी हुती अति रातिकी जागी ।
आय सषी तहां नायककी, घनें नेहसौं अंगनसौं अनुरागी ॥
सेंनहीसौं रुष कुंज बतायकें, राधिके ऊतर देंनकौं लागी ।
आंननसौं कर लाय कछू, अलकें फिरि फैली सुधांरन लागी ॥ ३५१

---

३४७. १ ग. पहलें । २ ग. जाय .

३४८. ३ ग. साष ।

३४९. ४ सेंननहीसौं ।

३५०. ५ ख. बैठी हुती । ग. बैठी हुंते । ६ ग. सेंन । ७ ग. मैंन सरोज ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S.
Jin Gun Aaradhak Trust

अथ विलास-हाव-लक्षन

दोहा– नैंननि-बैंननि[1] सैन विधि, उपजत हियें हुलास ।
जल-थल भूषित अंग रुचि, बरनौं तहां विलास ।। ३५२

अथ श्रीराधिकाकौ विलास-हाव

यथा– लाष-लाष भांति अभिलाषनि गुरावै सोहैं ,
हासो चंद्रहासें गाढ़ बाढ़ अभिलाष्यौ है ।
अलकनि नेजा नैंन बांन पलकें निषंग ,
भौंहनि कमांनें कढ़ि चाप उर झाष्यौ है ।
साहससौ मंत्री त्यौं मुसाहिब बदन-चंद ,
सुभट उपंगनकें ढंग भरि नाष्यौ है ।
लागत न लाग कैहूं सौतें अनमथ तेरौ ,
रूपगढ़ मानौं मनमथ सजि राष्यौ है ।। ३५३

अथ श्रीकृष्णकौ विलास-हाव

यथा– देवनकी[2] नारि औ अदेवनि कुमारि तन ,
वारिबेकौं होत निरधार[3] छबि जेठी है ।
पन्नग बधूनके मनौरथ मिलायबेकौं[4] ,
जीति लीनी त्रिभुवन[5] उपमां इकैठी है ।
अैसी बिधि बरन असेष प्रभा अंगनकी[6] ,
बेदन बिरंचिहू बषांनत अनैठी हैं ।
रावरे निहारबै बिसेष बृज लोगंनमैं[7] ,
जोगनि ह्वै केतिक बियोगनि ह्वै बैठी है ।। ३५४

अथ बिछति-हावलक्षन

दोहा– आभूषनकौ आदर न, होइ तहां मत आइ[8] ।
हाव इहै मनुहारिसौं, बिछित कहौं बनाइ[9] ।। ३५५

---

३५२. १ ख. नैंननि खेंलननि ।
३५४. २ ख. दैवनिकी । ३ ख. निरधारि । ४ ख. मिलायबेकी । ५ क. त्रिभुव ।
६ ख. आंगनकी । ७ ख. ग. वृज लोगनिमें ।
३५५. ८ ख. मति आय । ९ ख. विधित हाव कहाय ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

अथ श्रीराधिकाकौ बिछिति-हाव

कवित्त– उज्जल[1] अनूंप आभा उझली परत चारु ,
चंद्रिकातैं चौगुनी सुधा - रसुधरी धरी ।
बोलनि हसनि मनमेलनि मिलन - बिधि[2] ,
छलनि छलावनिकैं भाय अति ही भरी ।
अैसें रांनी राधिकाके अमल उपंग ढंग[3] ,
उपमांन उपजी बिरंचि मतिहूं हरी ।
कौन रूप थाहै सो अथाहै सो सुथाहै अंग ,
कबिन बृथाही यौही चंदकी कथा करी ।। ३५६

अथ श्रीकृष्णकौ बिछिति-हाव

यथा–सार सबै जगके सुषदायक, लायक हैं जदुराय अकेले ।
मांनिक हीर तजे मुकताफल, गुंजके पुंजनकौं गल मेले ।।
पाइके सौरभ पाइबेकौं सो, सुगंधन ए बृजके रज झेले ।
लाष करोरनिको हते भूषन, ते सब मोर-पषौवनि पेले ।। ३५७

इति श्रीनेहतरंगे रावराजा श्रीबुद्धसिंघ सुरचते भाव हाव
निरूपण नांम नवमो तरंग

*

अथ अवर रस बर्ननं

दोहा– रस सिंगार बरन्यौं सबै, अब बरनत रस ठौर ।
जा क्रमसौं आगालगू[4], कहि आए कबि और ।। ३५८

अथ हास्य-रसलक्षन

दोहा– लोचन बचननितैं कछू, उदै होत मन मोह ।
बुधिवंत[5] कबिबर सकल, कहत हास्यरस सोह ।। ३५९

अथ हास्य-रसभेद

दोहा– मंद हांस्य जानहु प्रथम, अरु दूजौ कल-हांस्य ।
होत तीसरौ हास्य अति[6], कहि चौथौ परिहांस्य ।। ३६०

---

३५६. १ ख. उज्वल । २ ख. मिलनि विधि । ३ उपंग छन्द ।
३५८. ४ ख. आगेंलगू ।
३५९. ५ ग. बुद्धिवंत ।
३६०. ६ ख. हास्य तिहि । ग. हास्य रति ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

अथ मंद-हास्यलक्षन

दोहा– प्रफुलित लोचन होत कछु, दसन बसन मुलकाय ।
फरकत तनक कपोल जुग, मंद हांस्य सरसाय ।। ३६१

अथ श्रीराधिकाकौ मंद-हास्य

कवित्त– भोर पति संगते ससंक अंक 'जोर आली'[1] ,
बैठी सषियन साथ छबि साथ टूटी हैं ।
छूटैं कल अलकैं बिछूटैं नैंन स्यामताई ,
ओठ 'रदनं-छद'[2] सौ 'सबै जात लूटी हैं'[3] ।
ता छबि निहारि आंषें 'हसी अनहसी हसी'[4] ,
हसिबेकौं भई ताकी उपमां यौं जूटी हैं ।
रबिके उदैतैं मांनौं सब वे सरोजनीसी ,
षुली अधषुली एंकै[5] षुलैं एकै षूटी हैं ।। ३६२

अथ श्रीकृष्णकौ मंदहास्य

यथा–आजु लसैं हरि राधिका संग, निकाई सबै जगकी गहरैंसी ।
नांक बनावनकौं नथकौं, हसि हाथ दयौ गंहि केस हरैंसी ।।
ता छबिकौं लषिकै सषियां, मन रीझि रही छबिता बहरैंसी ।
चंदहूंके मुषतैं छहरैं, लहरैं मनु गंग षुली नहरैंसी ।। ३६३

अथ कल-हास्यलक्षन

दोहा– सुनियत धुंनि गंभीर कछु, प्रगटत दसन बिलास ।
प्रसन चित्त लषि होत है, वहै बरनि कल - हास ।। ३६४

अथ श्रीराधिकाकौ कल-हास्य

यथा–आजु लषी सषी साथसौं राधे, मैं साधैं सबैं रसकी तलकी है ।
छूटी लटी एक टूटी उरोज, सुमेरपै त्यौं असिता छलकी है ।।
सारें सराहत आपनहूं, तकिकैं मुसकी उपमां भलकी है ।
होत उदैकैं प्रभांन लौं चंद्रिका, चंदतैं 'छूटि कछू झलकी है'[6] ।। ३६५

---

३६२. १ ख. ग. जोर प्यारी । २ ख. रदन छब । ३ ख. ग. सबै जल लूटी हैं ।
४ ख. हंसी अनहंसी लसी । ५ ख. येक ।
३६५. ६ ख. छूटि कछू उझली है ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

अथ श्रीकृष्णकौ कल-हास्य

यथा—एक समैं बलि राधिकानैं, कुबिजाकौ प्रसंग कह्यौ हितहूसैं ।
बोलि हसी मिलि संग सषी, कछु जाहरकै हरि संग ज हूसैं ।।
ता छिनकी उपमांइ 'निभाइ, रही'[1] मिलिकैं उन आंननहूसैं ।
सोधि सबै बसुधाकी सुधा, उपटी मनु सोधि सुधाधरहूसैं ।। ३६६

अथ अति-हांसलक्षन

दोहा— निकसत हसत निसंक जह, होत सिथल सब अंग ।
सो अति - हास बषांनि तहं, बदन[2] सुगंध तरंग ।। ३६७

अथ श्रीराधिकाकौ अति हांस

यथा—एक समैं हरि राधिकासौं, समैं प्रात लसैं छबिता सरसी है ।
एक[3]सषी तहां सौतिकी आय, गुपांलसौं बोलकैं 'रोस गसी है'[4] ।।
अैसे प्रसंगनिकौं लषिकैं, मिलि सारी सकोचकौं देषि लसी है ।
एक सषी लषि रीझि हसी, एक आषैं हसी एक बोल हसी है ।। ३६८

अथ श्रीकृष्णकौ अति हास्य

यथा—आवत आजु लषे नंदनंदन, अंग-प्रभानि[5] धरैं जिषरी हैं[6] ।
ता छबि नैंक निहारि भई, न वै कौन बधू ब्रजकी फिकरी हैं ।।
ता षिन राधेसौं बार बडी लौं हसैं उपमां यह त्यौं[7] निषरी हैं ।
चंदकी वै अध-अंवरतैं, छिति[8] छूटि मनौं किरनैं बिषरी हैं[9] ।। ३६९

अथ परिहासलक्षन

दोहा— हसैं सषीजन सकल जहं, रचि कोतिक करि रीति ।
ताहि कहत परिहांस सब, सुकबि सबै करि प्रीति ।। ३७०

अथ श्रीराधिकाकौ परिहांस्य

यथा—नंदनंदनकै एक नारिनैं होरीमैं काजर-रेष लिलार कसी है ।
ता दिसकौं ब्रजकी जुवती, सबही मिलिकैं हसिबेकौं लसी हैं ।।

---

३६६. १ ख. न भाई रही ।
३७७. २ ग. सुधन ।
३६८. ३ ख. इक । ४ ख. रोस गही है ।
३६९. ५ ख. प्रभाति । ६ ख. ग. जुखरी है । ७ ख. सों । ८ ख. छत । ९ ख छूट कछू किरनें बिखरी हैं ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

सोहै प्रसंग या उपमतैं, मन मेरेमैं आयके यों सरसी हैं ।
'च्यारचौंही'[1] ओरतैं चंदमुषी, 'मुषचंदतैं'[2] चंद्रिकासी बरसी हैं ।। ३७१

अथ श्रीकृष्णको परिहास

यथा–आजु मिली ब्रजनारि सबै, होरि षेलकौं नंदकैं द्वार थटे ज्यौं ।
सारी सषीन सबै एक ह्वै, नंदनंद गहे सिमटी न हटे ज्यौं ।।
काहू गह्यौ कर काहू नै अंबर, अैसैं छुटे उपमांन लुटे ज्यौं ।
घेरि घटांनके बीचिहूसौं, चपलांनकी[3] चौकीसौं चंद छुटे ज्यौं ।। ३७२

अथ करुनांरसबर्नन

दोहा– अपनैं हितकौ अहित जहं, सुनत सोच चित होय ।
उपजत करुना रस तहां, बरनत कबिबर सोय ।। ३७३

अथ श्रीराधिकाकौ करुनांरस

यथा–'आये कहूंतैं'[4]री आय कछू, जाकी बंसीकी गंसी हियेसु भरी हैं ।
ता पर त्यौं बस मंत्रसी हासी, निहारें परीतैं परीतैं परी हैं ।।
ता दिनतैं सफरोकैं सलूक, भई नफरी उपमां उघरी हैं ।
वें[5] छिन वैं घरी देषि छके,'सु अजौं लग[6] वैं' छिन 'वैई घरी हैं'[7] ।। ३७४

अथ श्रीकृष्णकौ करुनांरस

यथा–जा दिनतैं लगे नैंन तिहारे, सो ता दिनतैं वे बिके तन त्यौं हैं ।
काहूकौं 'लांच दै'[8]काहूकौं सांच दै, काहूकौं आंच दै जाच दै ज्यौं हैं ।।
अंबु ज्यौं ओछै परी सफरी, नफरी भये त्यौं अकुलातसे यौं हैं ।
आजु कछू फिरि काल्हि कछू. परसौंतैं कछू तरसौंतैं कछू हैं ।। ३७५

अथ रौद्ररसलक्षन

दोहा– उग्र देह अति कोपमय, रक्तबर्न सब[9] अंग ।
ताहि रौद्ररस कहत हैं, सब कबि पाय[10] प्रसंग ।। ३७६

---

३७१. १ ख. च्यारही । २ ख. मुखचंद्रि ते ।

३७२. ३ ग. चपलानकी ।

३७४. ४ ख. आयेहू कहूंते । ५ ख. वे । ६ ख. सु अजु लगि । ७ ख. बेई घरी हैं ।

३७५. ८ ख. नांचवें ।

३७५. ख. ता दिनतें फिरि आजु कछु फिरि काल्हि कछु परसों ते कछू हैं

३७६. ९ ख. रक्तबरन । १० ख. पाइ ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

अथ श्रीराधिकाकौ रौद्ररस

यथा—वामैं कलंक इहैं निकलंक, हैं निसिद्यौस निसा इह जो है ।
अंग घटै वह बाढै इहै, रंग सोहत है अलकें अवरोहै ।।
सीचत है बिषबेली वहे, इहै नंदके नंदनकौ मन मोहै ।
चंदकौं क्यौं सम दीजे भटू, मुषचंद तौ चंदतें 'सौगुनौं सोहै'[1] ।। ३७७

अथ श्रीकृष्णकौ रौद्ररस

यथा—न्हांन सबै जमुंनां जलकौं, ब्रजके नर नारी हियें उमगे हैं ।
राधिका-रूप रहे लथि रीझि, भए[2] अभिलाष अनेक रंगे हैं ।।
ज्यौं गुरु लोग सकोचन सोच, सरोजनसे उपमांन जगे हैं ।
अैसें लगे दहूं ओरतें नैंन, सो लाजके 'नां हीय लाज लगे हैं'[3] ।। ३७८

अथ बीररसलक्षन

दोहा— गौरषख गंभीर तन, अधिक उछाह उदार ।
ताहि बषांनहु[4] बीररस, कबिबर करि निरधार ।। ३७९

अथ श्रीराधिकाकौ बीररस

यथा—तारे सुभट्टन मोतिन - माल, बिचित्रत चीर धुजा फहराई ।
दीपति देह तुरंग लसैं, गजराजन साजत गौंन निकाई ।।
हासी षुलैं चंद्रहासैं लसैं, बर बंब चकोर अवाज सुनाई ।
यौं ब्रजचंद रिझांवनकौं, चमू चंद ज्यौं चंदमुषी सजि आई ।। ३८०

अथ श्रीकृष्णकौ बीररस

यथा—मोतिनहार नछित्रन फैलि, बियोगनि त्यौं तमकौं करसे हैं ।
सोहत पीतसे अंबरसौं, लियें अंबर सांझ समै दरसैं हैं ।।
ग्वालनिबृंद कमोदनिसे, 'षुलि आवत'[5] अंगनिसौं सरसैं हैं ।
चंदमुषी तेरे नैंन-चकोरनि[6], चंद मनौं बृजचंद लसैं हैं ।। ३८१

---

३७७. १ ख. चोगुनों सो हैं । ग. चौगुनौ सो है ।

३७८. २ ख. भई । ३ ख. नाहीं इलाज लगे हैं ।

३७९. ४ ख. बखांनिहुं ।

३८१. ५ ख. लिख आवत । ६ ख. ग. चकोर पे ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

अथ भयरसलक्षन

दोहा– स्यामबरन दुति देहकी, अति भयमय दरसात ।
देषत सुनत संकात मन[1], सो भयरस सरसात । ३८२

अथ श्रीराधिकाकौ भयरस

यथा– नांही बगुपांति यह कौडावलि देषियत ,
गरजत नांही बाजै सांकरनि[2] झेले हैं ।
छूटि जटा चंचला भसम धूम अंगलेप ,
मोर - सोर - हांक मिलि कोइलन भेले हैं ।
अंबर धनष नील बचन झरत बूंद ,
बिरह - परब घेरैं चातकनि चेले हैं ।
चहू ओर भेलं ए समीर झकझोले[3] आली ,
पावस न भेले ए मलंगनके मेले हैं ।। ३८३

अथ श्रीकृष्णकौ भयरस

यथा– उमडे अडारे[4] घन कारे ते अफारे भय -
भारे अंधियारे धुरवारन सुजातकी ।
चातक अलापैं पिक किन्नर झिंगारैं सुर ,
झिंगरन झांई मिलि मोरनि जमातकी ।
गरजें घटाकी छबि छूटिनि छटाकी सुधि ,
आवत अटाकी दुति भूलत सुगातकी ।
ज्यौं-ज्यौं सुधि जात जात छिन-छिन राति जात ,
एक एक राति जात लाष-लाष रातकी ।। ३८४

अथ बिभत्सरसलक्षन

दोहा– नीलबरन विभत्सरस, अति निंदामय देह ।
उदासीन चित होत है, देषत सुनत जु जेह ।। ३८५

---

३८२. १ ख. ग. सुकात मन ।

३८३. २ ख. सांकरिनि । ३ ख. इकडेलें ।

३८४. ४ ग. आडारे ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

अथ श्रीराधिकाकौ बिभत्सरस

यथा–पावसकी मधि रैंनि समैं, पग-पायल पन्नगकी उर झागो ।
अंवर पंक भरे गये भीजि, तऊ जियमैं कछु संक न जागी[1] ।।
होत इहीं बिधितें जियबौ, चित चाय बिधाता करी अनुरागी ।
जांनेंगी जेही जे जिय आंनेंगी, जे अंषियां अंषियानसौं लागी ।। ३८६

अथ श्रीकृष्णकौ बिभत्सरस

यथा–भादवकी भयभारी निसा, न गिनी जलधार बिहार सनौषी ।
बेलनि ज्यौं लपटें घनैं पन्नग, त्यौं मग पिंडुरी[2] कंटक झोषी ।।
सारे सबै ब्रजलोगनि[3] हाथ, तिहारे मिलापकैं कारन सोषो[4] ।
कीजे कहा कहिये जु कहा, लगो आंषिनकी यह रीति अनौषी ।। ३८७

अथ अद्‌भुत रस-लक्षन

दोहा– जाकं देषत सुनत होय, होत अचंभौ आंनि ।
पीतबरन दुति अंगसौं, अद्‌भुतरसहि बषांनि ।। ३८८

अथ श्रीराधिकाको अद्‌भुतरस

यथा–देवीकै देहुरै पूजत आजु, लषे वृजचंद सुधा सरसाती ।
रीझि मिली अंषियां अंषियां, उरझाती लजाती न औरौं लषाती ।।
यौं दहुं ओरनतें सुधि कुंजकी, अैसैं चली मिलिबेकौं[5] उडाती ।
चारेतें चौंकि[6] त्रिषांनकैं[7] त्रास, पसारिकैं पंष[8] जुराफ ज्यौं जाती ।। ३८९

अथ श्रीकृष्णकौ अद्‌भुत रस

यथा–आजु मिले जमनां-तटपैं, नंदनंदन ज्यौं ब्रषभानकिसोरी ।
धाय मिली अंषियां अंषियां, सषियांनकैं साथ चपैं करि चौरी ।।
ज्यौं अभिलाषनतें यक[9] साथ, ह्वै सैंन[10] धुलो मिलि कुंजको वोरी[11] ।
मंजन हेत चली तकि ताल, मनौं उडि षंजनकी जुग जोरी ।। ३९०

---

३८६. १ ख. संक न लागी ।
३८७. २ ख. प्युंडुरी । ३ ख. वृजलोकनि । ४ ग. सौंषी ।
३८९. ५ ख. मिलिबेकूं । ६ ख. ओरेतें चोकि । ७ ग. त्रिषानकैं । ८ ख. पंज ।
३९०. ९ ख. ईक । १० ख. हसैं न । ११ ख. कुंजकी चोरी ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

अथ समरसलक्षन

दोहा– सबतैं चित्त उदास ह्वै[1], एक मांझ ह्वै लीन ।
तासौं समरस कहत हैं, कवि पंडित परबीन[2] ।। ३९१

अथ श्रीराधिकाकौ समरस

यथा–बोलै न डोलै न षेलै हसै, बनि बैठी[3] लिये अंग-अंग उजेरें ।
पांन न षाय न पानी पियैं, तजे भूषन बास बिलास घनेरें ।।
जोगसौं साधि समाधिसी लाय[4], रही सु तौ आवति है मन मेरें ।
हेरें बिनां हरिकैं उनकैं, रह्यौ हेरिबौ औरनकौं हरि हेरें ।। ३९२

अथ श्रीकृष्णकौ समरस

यथा–चित्रके से लिषे[5] मित्र गवालनि, बालनि छाडिकैं भौन बसेरें ।
भूले[6] सबै सुधि षांनकी पांनकी, भूषन भाय बिसारे घनेरें ।।
अैसैं रहे उघरीसी दसा, उघरी कैधौ जोगदसाकैं उजेरें ।
हेरी हुती तुव आवत जा दिन, ता दिनतैं हरि औंर न हेरें ।। ३९३

इति श्रीकृष्णकौ समरस

इति श्रीनेहतरंगे राउराजा श्रीबुद्धसिंह सुरचते रसनिरूपणं नांम दसमो तरंग

★

अथ च्यारिवृत्ति कबित्तकी बर्नंनं

दोहा– प्रथम बृत्ति कौसिकि[7] कहौं, बहुरि भारती देषि ।
आरभटी तीजी कहौं[8], चौथो सात्विकि[9] लेषि ।। ३९४

अथ कौसिकीलक्षन

दोहा– करुनां हास्य सिंगार रस, अक्षिर[10] सरस बषांनि ।
सुंदर भाव समेत मिलि[12], बृत्ति कौसिकी जांनि ।। ३९५

यथा–रैंनिकी लागी कपोलनि पीक, हिये अनुरागु[13] उतै उघरचौ है ।
टूटि रहें उर हार लसैं, सु सुहागसौं सौतिन चाढ भरचौ है ।।

---

३९१. १ ख. है । २ ख. प्रवीन ।
३९२. ३ ख. वाने बैठी । ४ ख. समाधि मीलाय ।
३९३. ५ ख. लिखि । ६ ख. भूलि ।
३९४. ७ ख. कोसिक । ८ ख. कहूं । ग. कहुं । ९ ख. सात्विक ।
३९५. १० ख. अक्षर । ११ ख. समेति मिलि ।
३९६. १२ ख. अनुरागु ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

तापर यौं सिर सोभा समाजसौं, उप्पमता यह गाढ करचौ है ।
प्रीति उदगलकौं ब्रजचंदसौं, ज्यौं सिर मंगल छत्र धरचौ है ।। ३९६

अथ भारतीलक्षन

दोहा— हास्य बीर करुनांरसहि, रचि बर-अक्षर प्रीति ।
कहत सुकबि कबिता-निपुन, यहै भारती रीति ।। ३९७

यथा—आजु लसैं बनितांनकें[1] बोचि, रही अंग-अंगन जोबन जोरैं ।
रातिके सो रदनछदकौं, अलकांनितें[2] ढांपति है चषचोरैं ।।
ता छिनको छबिता छकिकें, यह उप्पमता मन ऐसैं निहोरैं ।
जैसे सुधाधरसौं सिमटाय, अमी उपटात मनौं इक बोरैं[3] ।। ३९८

अथ आरभटीलक्षन

दोहा— आरभटी तीजी कहौं, बृत्ति जमक सरसाय ।
भय रु रौद्र बिभत्स रस, बरनत सब यहि[4] भाय ।। ३९९

यथा—गाजकें सज्जल कज्जलसे, घन छूटि मदज्जलसे झर जागी ।
मोरके सोर करैं चहुं ओर, सौ चंचला ज्यौं चलि षाग उनागी[5] ।।
कैसें करौं हौ रहौं न मिलैं, बिन ए अंषियां जिनसौं अनुरागी ।
तू सुनि री बलि या न भली, बली बैरनि ज्यौं बरिषा[6] रितु[7] लागी ।। ४००

अथ सात्विकीलक्षन

दोहा— बीर रौद्र अद्भुत समह, होत जु ए रस आंनि ।
बृत्ति सात्विकी[8] कहत हैं, कबिता मतकौं जांनि ।। ४०१

यथा—रैंनि दिनां अभिलाषभरी, नहि रोकी रुकी पलकी पंषियांसौं ।
बाहरिकी घरकी सब त्रास, तजी कुल लाज लगी लषियांसौं[9] ।।
देषैं बिनां जिय लेषैं नहीं, अधिकी इनि रीति गही झषियांसौं ।
तेरो सौं ए नहीं मेरी सगो, एरी नौज लगौ अंषियां अंषियांसौं ।। ४०२

इति बृत्ति

---

३९८. १ ख. वनितानिकें । २ ख. अलिकानितें । ३ ख. मनों इक चोरे ।
३९९. ४ ख. ईहि ।
४००. ५ ख. ज्यों पावन पागी । ग. उन आगी । ६ ख. बरखा । ७ ख. रित ।
४०१. ८ ख. वृति सात्विकी
४०२. ९ ग. अषियांसौं ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

अथ अनरस कवित्तबर्ननं

दोहा– प्रतनोक नीरस बिरस, और सुनहु दुसंधांन ।
पातर-दुष्ट कबित्त जिनि, बरनहुं सकबि सुजांन ।। ४०३

अथ प्रतिनीकलक्षन

दोहा– जहां सिंगार बिभत्स भय, वीरहि कहैं बषांनि ।
करुनां अरु रौद्रहि तहां, प्रतिनीक रस जांनि ।। ४०४

यथा– बात चलावत हौ तुम ज्यौं-ज्यौं, वै बातनि ही मधि मांन मलै हैं[1] ।
जौ[2] छलसौं छल्यौ चाहौ तौ वैऊ, महाछलकैं छलकोरि छलैं हैं ।।
जौं चित आंनत हौ अनतैं, कहुं जाय एतौ वैऊ आय रलैं हैं ।
ज्यौं-ज्यौं निहारत हौं बृजचंदकौं, चौगुनी त्यौं-त्यौं चवाई चलैं हैं ।।४०५

अथ नीरसलक्षन

दोहा– मिलि मुहुही दंपति रहैं, दिन प्रति औरै रीति ।
कपट रहै लपटाय यह, नीरस रसकी प्रीति ।। ४०६

यथा– नेह समुद्रकी थाह अथागन, लेषौ चहै सु तौ क्यौं निबहै है ।
पौंनके पायन दौरचौं चहै, चित चौरचौं चहै सु वो कैसैं लहै है ।।
नंदके नंदनकौ बसि कीबौ चहै, सु तौ बावरी बांनि गहै है[3] ।
अैसैं नहीं करिबौ कबहू[4], मुष औरै कहै मन औरै कहै है ।। ४०७

अथ बिरस-रसलक्षन

दोहा– सोग मांझ बरनैं जहां, भोग बिबधि बिधि बांनि ।
ताहि कहत हैं बिरसरस, सब कबिराज बषांनि ।। ४०८

यथा– नंदके नंदनसौं वहै बात, चहै सु तौ बावरी क्यौं बनि आवै ।
वै तो रंगे रंग राधिकांकें, जिनकौं अब दूसरी[5] कौंन सुहावै ।।
कीजे बिचारनके उपचार, बृथा है[6] विथा तौहि को समझावै ।
काहेकौं एती करै मनमैं, अली पीछैं परैं कछु हाथ न आवै ।। ४०९

---

४०५. १ ख. भले हैं । २ ख. ज्यों ।

४०७. ३ ख. ग. बावरि बन गहै हैं । ४ ग. कबहूं ।

४०९. ५ ख. अवर दूसरी । ६ ख. वथा है । ग. वृषा है ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

अथ दुसंधांनलक्षन

दोहा– इकु[1] अनकूल[2] बषांनिए, नीकी भांति पिछांनि ।
प्रतिकूल दूजौ करै, ताकै पीछैं आंनि ।। ४१०

यथा–दीजे दही, कहौ काहे कौ दीजे जू ? दान हमारौ, न मोल नक्यौ है ।
मोल कहा है ? तो लेहु दही, नहि देहु तौ, देह न अैसें बक्यौं है ।।
जैहौ तौ रोकि हैं, को, हम रोकि हैं, तौही रुकी न रुकी तरक्यौ है ।
तौही तिहारौ बिक्यौ जु बिक्यौ,
तौ बिक्यौ तौ बिक्यौ न बिक्यौ न बिक्यौ है ।। ४११

अथ पातर दुष्टलक्षन

दोहा– पुष्ट और ही कीजिए, होइ औरकी चाह[3] ।
तासौं पातर दुष्ट सब, कहि बरनत कबिनाह[4] ।। ४१२

यथा– सेहरकैं जु तजे हरकैं, मिलि जे बलि ये हरिकै जिय जी है ।
पैंनै रंसांलके पल्लवसें, लषि चंपककी कलिकांन जकी है ।।
बिद्रमहार बहारन बिंब, ठहा रिसकै नहि एक रती है ।
प्रातके पंकज पेलि प्रभा, पग सोहत जावक[5] पावकसी है ।। ४१३

इति श्रीनेहतरंगे राव राजा श्रीबुद्धसिंघ सुरचते चतुर विधि कवित्त बृत्ति पंचविधि अनरस कवित्त निरूपणं नांम एकादशौ तरंग ।। ११

★

अथ छह[6] रितुबर्नन

दोहा– रितु बसंत ग्रीषम अवर, पावस सरद सुजांनि[7] ।
हिम रु[8] सिसरि संजुत सरस, छ रितु लेहु पहचांनि ।। ४१४

अथ बसंतबर्नन

दोहा– करत गुंज मिलि पुंज अति[9], लपटैं लेत सुगंध ।
ठौर ठौर झौरंत झपत, भौंर-झौंर मद अंध ।। ४१५

---

४१०. १ ख. इक । २ ख. अनुकूल ।
४१२. ३ ख. ओर ही चाह । ४ ख. कविताह ।
४१३. ५ ख. सोहन जावकं ।
४१४. ६ ख. छहु । ७ ग. सुजांण । ८ ग. हिमरुति ।
४१५. ९ ख. मिलि पुंज अलि ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

यथा– फूली[1] लता नव पल्लवकी, सो जटा षुलि केसरि ज्यौं छबि छायौ ।
गुंजन भौंरनकी चहुधां, कुसमाद पलासनकें नष लायौ ।।
सीतल-मंद-सुगंध समीर, तिही भय त्रासन आगम धायौ ।
यौं बृजपैं[2] बृजराज बिनां, रितुराज मनौं मृगराज ह्वै आयौ ।। ४१६

अथ ग्रीषमबर्नन

दोहा– परि अताप किरनैं प्रकट, दाधे तरु सरुजात ।
जग देषत ज्वाला लगै, जोगी जेठ जमात ।। ४१७

यथा– धूप तपै तपताप पंचागि[3], दवागिनि सो भगवां रंग सोहै ।
लेप बिभूति किये अंग ज्यौं, मृगकी त्रिसनां तकि त्यौं अवरोहै ।।
फूलि रहे छकि नैंन सरोज से, उप्पमता लषिकैं मन मोहैं ।
यौं किरनैं रहि छूटि छटानही, ग्रीषम जोगी जटांधर सोहैं ।। ४१८

अथ बरषाबर्नन

दोहा– भसम धूम अंबर घटा, छटा धनष राकेस ।
जटाजूट षुलि चंचला, घन महेस आदेस ।। ४१९

यथा– छूटि झरैं धुरवा गति ज्यौं[4], गंगधार हजारनकी सरषा है[5] ।
बादर नांहि बिभूति लसैं, नांद कोकिल कीजतिकी[6] करषा है ।।
चंचला सोहै जटा षुलिकैं, भाल चंदसो चंद्रिकाकी निरषा है ।
उप्पमताई सौं यौं परसैं, दरसैं महादेव किधौं बरषा है ।। ४२०

अथ सरदबर्नन

दोहा– बदन - चंद षुलि चंद्रिका, दृग - सरोज सम आज ।
आई है करि आतुरा[7], सरद पातुरा साज ।। ४२१

यथा– चंचल चकोर चहु वोर जोर हंसनकी ,
चंदमुष चांदिनोसी छूटि छबि छाई है ।

---

४१६. १ क. फुली । २ ख. या व्रजमें ।

४१८. ३ ख. पंचाग्नि ।

४२०. ४ ख. धुरेंवा गति त्यों । ५ ख. वरखा है । ग. बरषा है । ६ ख कूजतकी ।

४२१. ७ ख. आतुरी ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

मोतीहार मिलिकैं सुकल प[पं]छि मांनसर ,
षुले से[1] सरोजन दृगन दुति पाई है ।
सुधा बरसांन देषैं देत बरदांन यौं ,
परसपर उपमा प्रवाह परसाई है ।
अंग-अंग साजसौं सुदेस छबि आजु सोहै ,
सारदा ज्यौं सरद समाज सजि आई है ॥ ४२२

अथ हेमंतबर्नन

दोहा– सब जगमैं सब जननकौं[2], सुषदायक सुभनंत ।
तेल तूल तांबूल तप, तापन तपन अनंत ॥ ४२३

यथा–बाढ़ी निसा बहरैं छहरैं, ससि छूटि कलारस अमृत भीनौं ।
सीत चहू दिस फैलि महा, तरु पंछी लता कुमिल्हात अधीनौं ॥
त्यौं उतरात समीर झकोर, लगै जलहू थिरतापन लीनौं ।
ज्यों जियसो तियसो पियसौं, जग मांनौं हिमंत जुराफसौ कीनौ ॥ ४२४

अथ सिसरिबर्नन

दोहा– मत्त मकरधुजमैं किये, नरनारी सब जीति ।
बिटपबृंद दाहे सबै[3], महा सिसरिकैं[4] सीति ॥ ४२५

यथा– आषिन झरैंसी धरैं हारन प्रमोद मन ,
रैंनिकौं बढायें दिन घटै अंग अैठी है ।
चांदिनी अमल चंद चंदन अलेप तजें ,
सजें च्यारचौं और करि अनल थकैठी है[5] ।
लाज बृज लंगर त्यौं[6] षूटिकै बिछूटी रहै ,
आक-बाक बकति कहा धौं जिय पैठी है ।
साजिकैं समाज सौभा सरस सिसरि आजु ,
जोगनीसी बावरी बियोंगिनी ह्वै बैठी है ॥ ४२६

---

४२२. १ ग. षुल से ।

४२३. २ ग. सब जनकौं ।

४२५. ३ ख. सब है । ग. दहि सबै । ४ ख. सिसरकैं ।

४२६. ५ ख. अनल इकैंठी है । ग. अनल यकैठी है । ६ ख. व्रजरंगर ज्यों ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

अथ पिंगल मतबर्नन

दोहा-- बहुत छंद कृत नागके, पिंगल मत[1] बिसतारि ।
बिदत छंद कछु कहत हौं[2], सो नीकै उर धारि ॥ ४२७

अथ गनबर्नन

यथा-- त्रिगुरु मगन महि देवता श्रवत सिरी ,
त्रिलघु नगन नाक बुद्धि बकसैं नृमल ।
आदि गुरु भगन मयंक बिसतारैं जस ,
आदि लघु यगन उदिक सुष दैं सकल ।
मधि गुरु जगन दिवाकर उपावैं रोग ,
मधि लघु रगन हुतासन हतैं प्रबल ।
अंति गुरु सगन बयारि सो बहावैं बहु ,
अंति लघु तगन गगन करैं सुं निफल ॥ ४२८

अथ दोहालक्षन

दोहा-- तेरै मत्ता[3] प्रथम ही, पुनि[4] अग्यारह जोइ ।
तेरै ग्यारह बहुरि करि, दोहा लक्षन होइ ॥ ४२९

दोहा-- हारि जात बरनत सुजस, डारि जात जलजात ।
पारिजात तो पर अलो, वारि जात निज गात ॥ ४३०

अथ गजिंद्रगतिलक्षन

दोहा-- सात भगन गुरु होइ जह[5], रचौ मात बत्तीस ।
तेइस अक्षर चरनके, सो गजिंद्रगति दीस ॥ ४३१

यथा--जात चलि मिलि संग अली सु, मिलो मग गोकुल मांझ सवारी ।
लाग्यौ सौ लंक रहे लगि केस, करी बिधि चंद्रमा चोरि निवारी[6] ॥

---

४२७. १ ख. मंगल मत । २ ख. कहत हुँ ।

४२८. ख. प्रतिमें नहीं है ।

४२९. ३ ख. तेरे सत्ता । ४ ख. पुन्न ।

४३१. ५ ख. जहँ ।

४३२. ६ ख. चोरि नवारी ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

चीर हरैं लहगा लसैं लाहंकैं[1], छूटि रही अलकैं न सुधारी ।
चाय चढी[2] चित आय चढी, अंषियांनि गडी बडी आंषिनवारी ।। ४३२

अथ दुमिलालक्षन

दोहा– सगन आठ कीजे जहां, चौइस बरन बनात ।
मात बतीसह चरनकी, दुमिला छंद कहात ।। ४३३

यथा–इहिं रूप लषी वह आवत ही, मनमोहनीसी पल पांषनिमैं ।
दरसैं दुतिकौं परसैं मृगनी, सरसैं सफरीनकी साषनिमैं ।।
जबतैं बिछुरी दृगतारनितैं[3], पुतरी घनस्यांमके ताषनिमैं ।
तबहीतें षुभी पियके हियमैं, वन आंषिनकी छबि[4] आंषिनमैं ।। ४३४

अथ प्रेमसवया लक्षन

दोहा– करौ मात इकतीस पद, च्यारि चरन जुत प्रीति ।
षोड़स पदरा पर बिरति, प्रेमसबैया रीति ।। ४३५

यथा–चंपक रंभ अंब द्रुम मौरे, चहुं दिसि कोकिल कूक सु लग्गी[5] ।
गुन गालिब गुलाब केतक पर, कमलनि अलिकुल माल बिलग्गी ।।
अमल चंद वै किरनि चंदकी, त्रिबिधि समीर जुन्हाई जग्गी ।
यह जीवन लग्गे एते पर लग्गै, अंगि बांव फिरि बग्गी ।। ४३६

अथ मनहरनलक्षन

दोहा– षोड़स पंद्रह पर बिरति, चरन अंक यकतीस[6] ।
छंद नांम मनहरन हैं, गुरु इक अंतक बीस ।। ४३७

कवित्त– चूक्यौ फिरै चंद लषि चंपक बिझूक्यौ फिरै ,
षंजन षिसात फिरै समता न साधेकी ।
कुंदन-कलांनि वारि[7] डारौं चंचलानि सोहै ,
कमला कलासी अंगरंग चकचांधेकी[8] ।

---

४३२. १ ख. लायके । २ ख. ग. पाय चढ़ी ।

४३४. ३ ख. ग. दिगतारनमें । ४ ख. उन आंखिनकी छबि ।

४३६. ५ ख. सू लगी । ग. सु लगी ।

४३७. ६ ख. इकतीस ।

४३८ ७ ख. कुंदन कलानि चारि । ८ क. चक चंधिकी ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

बृंदाबनचंद चित लोचन अधार वै ,
अराधैं निस-द्यौंस भायक यौंक समाधिकी ।
बिरहके दाधे इन नैंननि हमारेकी जौ ,
बाधेकौं हरौ न तौ हजार सौंह राधेकी ।। ४३८

अथ कड़षालक्षन

दोहा– दस दस संतरै पर[1] बिरति, सप्ततीस सब मात ।
कहत भूलना याहि कबि, कोऊं कड़षा[2] गात ।। ४३९

यथा– चंद्रमुख चंद्रिका अंग चहु वोर षुलि ,
चषनि चिति चाहि चक्कोर मंडी ।
भाल ससि दोजि त्रिय नैंन भौंहैं ,
चढी बढी आरकंत्त दुति[3] अषंडी ।
बिष्णु ब्रह्मा चरन सरन संकर सदा ,
सिद्धिदांयनि महा कर उदंडी ।
नमो मत्त - मात्तंग[4] कुंभ कुच - ललिता ,
प्रगट एक अद्वैत जागर्त्त[5] चंडी ।। ४४०

अथ छप्पैलक्षिन

दोहा– ग्यारह तेरह मातके, च्यारि चरन सुध हांनि ।
पंद्रह तेरह चरन जुग, छप्पै छंद सुजांनि ।। ४४१

यथा– झलकि चंद सिर गंग[6], बलित भू[ष]न भयंग अंग[7] ।
मिलित रुंड उर माल अंग अरधंग गवरि संग ।।
दृग निमत्त[8] उनमत्त-मत्त भुव भंग भंग रुष ।
मिलन मत्त बिबिभ्रंग संग अवली सभाल मुष ।।
नरदेव देव बंदत चरन, अंबर बाघंबर अटल ।
त्रिहुलोकनांथ कैलासपति, जय जय जय जोगी जटल ।। ४४२

इति श्रीनेहतरंगे रावराजा श्रीबुद्धसिंह सुरचंते पिंगल
मत छंद निरूपण नांम त्रियदसौ[9] तरंग

★

४३९. १ ख. तेरे पर । २ ग. षडषा ।
४४०. ३ ख. ग. आरक्त दृग दुति ४ ख. मनोमत्ता मातंग । ५ ग. जागतें ।
४४२. ६ ख. सिर गिर गंग । ७ ख. भूषन भुयंग अंग । ८ ग. निमित्त ।
: ख. त्रियोदशो । ग त्रिदुसौ ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

अथ अलंकारबननं

दोहा– नवरस बरनैं बहुरि कछु, पिंगल छंद बताय ।
अलंकार अब कहत हौं, बर्नन अवसर पाय ।। ४४३

छंद मुत्तीयदांम

कहौं लछिनं लछिलंकृत नांम ।
सुनौं चित दै छंद मुत्तीयदांम ।।
ब्रना अबरन्न रु बाचकधर्म्म ।
लुपै लुपता चहुं पूरन कर्म्म[1] ।। ४४४

अलंकृत पूरन उप्पम[2] मांनि ।
तिया मुषचंदसौं[3] उज्जल जांनि ।।
इकै द्वय[4] तीनि बिनां निरधार ।
लहौं उपमां इम लुप्त बिचार ।। ४४५

तिया सम[5] सुंदर को जग जानि ।
सु तौ नव हेमलता सो बषांनि ।।
सुनौ संजनी पिक बैंन पिछांनि ।
वहै मृगनैंनि बसै चित आंनि ।। ४४६

अनन्वय नांम सुलक्षिन[6] लेषि ।
तिया मुष जैसौं तिया मुष देषि ।।
कहौं उपमांनु यहै उपमेय ।
तहां परसप्पर उप्पम देय ।। ४४७

लसैं दृगसे[7] कंज कंजसे नैंन ।
सुबैंन सुधासे सुधा - सम बैंन ।।

---

४४४. १ ख. कर्म ।

४४५. २ ख. उपमा । ३ ख. सुषचंद । ४ ख. ग. दुय ।

४४६. ५ ख. सब । ग. सांम ।

४४७. ६ ख. सुलक्षन ।

४४८. ७ ख. द्रगसे ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

प्रतीप कहौं बिधि पांच बनाइ ।
इहीं क्रम लछि रु[1] लछिन पाइ ।। ४४८

प्रतीप सु उप्पम द्वै उपमेय ।
भयौ ससि आंननसौ[2] तुव सेय ।।
निरादर उप्पमतैं उपमेय ।
कहा ग्रब बैंननि बीन न लेय ।। ४४९

जाहां[3] उपमेयतैं उप्पम हींन ।
तकैं तन तो[4] भइ दांमनि दीन ।।
कछू उपमा समता सम नांहि ।
तिया गजसी गति क्यौं कहि जाहि ।। ४५०

बृथा उपमां उपमेय सु सार ।
नहीं पिककैं सुध बैंन उचार ।।
इसी बिधि पंच प्रतीप बताय ।
कहैं कबिराज उकत्ति[5] उपाय ।। ४५१

अलंकृत रूपक द्वै बिधि जांनि ।
समांन इकै नहि दूजे समांन ।।
समांन सुलक्षिन जांनि समांन ।
तिया कुच सुंदर संभु प्रमांन[6] ।। ४५२

समांन न ग्रौर समांन न जोइ ।
कलंक बिनां मुषचंद न होइ ।।
प्रणाम सुकाज करै उपमांन ।
लषै दृग-पंकजतैं तिय जांन ।। ४५३

---

४४८. १ ख. ग. लक्षरु ।

४४९. २ ख. ग्रांन ग्रसौ ।

४५०. ३ ख. ग. जहां । ४ ख. तनु तों ।

४५१. ५ ख. उकति ।

४५२. ६ यह पंक्ति 'ग' प्रतिमें तृतीय चरण पर है ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

इकै बहु मानैं उलेष सुचाल ।
कहैं हरि संत रु दुज्जन काल ।।
इकै बहुतैं गुन दूजौ उलेष ।
तिया रतिरूप रु जोति[1] निसेस ।। ४५४

सुनौं जु सुमर्ण अलंकृत भाय ।
लषै उपमां उपमेय सु पाय ।।
मिली वह औधि कही हुती[2] तीज ।
लषी संग राधे लषैं घन बीज ।। ४५५

भ्रमैं तहं ग्यांनहु सो भ्रम होइ ।
इहै[3] मुष चंद चकोर न कोइ ।।
लषौ जु सदेहु संदेहु ही साज ।
किधौं मुष - कंज किधौं निसराज ।। ४५६

दुरै ध्रम सुद्ध[4] अपुन्हति जांनि ।
जलद्न मांते मतंग बषांनि ।।
अपुन्हति हेत[5] दुरै उपमेय ।
न मोहन ए छबि कांमहि देय ।। ४५७

सुप्रज सुता गुण और ही रुष्ष[6] ।
सुधाकर नांहि सुधाकर मुष्ष ।।
अपुन्हति भ्रंम सुभ्रमं न हौंन ।
नहीं गजगौंन न हंसहि गौंन ।। ४५८

अपुंन्हति छेकसु जुक्ति दुराव[7] ।
कपोलनि पीक नहीं रदघाव ।।

---

४५४. १ ग. जौति ।
४५५. २ ग. हुंती ।
४५६. ३ ख. रहै ।
४५७. ४ ख. धर्म सुद्ध । ५ ख. केत ।
४५८. ६ ख. रुख्य ।
४५९. ७ ख. सुराव ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

अपुंन्हति कै तव ह्वै मिस[1] भांति ।
हसैं मुषकांति करै ससिकांति ।। ४५९
इहै उतप्रेछ जु संसय सांच ।
गनौं इक हेत इकै फल बांच[2] ।।
न ती सम[3] चाल धरै गज धूरि ।
मनौं तुव ओठ सुधा ससि पूरि ।। ४६०
(सह्यौ) कति अतिसै[4] उप्पम होइ ।
लसैं जलजात पैं षंजन दोइ ।।
अपुंन्हित सो गुण औरके और ।
सुगंध तिया नहिं चंपक ठौर[5] ।। ४६१
इकै भिद कांति कहावति और ।
लसैं तुव नैंननि[6] औरहि दौर[7] ।।
अजोगहि जोग सबंधति देषि ।
जलन्निधि छोटौ रु मीन बिसेषि ।। ४६२
सयोकति जोगकौ कीजे अजोग ।
भए कुच सेन करैं सिव जोग ।।
मिले अंक्रमाति[8] जु कारण काज ।
लगे दृग नेह इकै संग साज ।। ४६३
सुनौं चपलाति सु चंचल भांति ।
पिया मिलिकै तनमैं न समांति[9] ।।
सयोकति पुंन्हति होइ तौ होइ[10] ।
सुधा तुव बैनसौ जोइ तौ जोइ ।। ४६४

---

४६०. १ ख. तुव है मिसि । २ ख. वांचि । ३ ख. न ता सम ।
४६१. ४ ख. अतिसय । ५ ख. चंपक खोर ।
४६२. ६ ख. नैंनन । ७ ओर हि दोरि ।
४६३. ८ अक्रमात ।
४६४. ९ ख. तन मों न समात । १० ग. होय तौ होय ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

जहां बिपरीति अतिंतति गाय ।
मिलैं पहलैं सवतैं परी पाय ।।
कहै तुलियोग सु तीन सुरूंप ।
लहौ क्रम तैं यह रूप अनूप[1] ।। ४६५

हितू अहितै पद एक प्रमांन ।
हित अरिकौं अति दीजत मांन ।।
इकै सब दैवहुकौं बिसरांम ।
बढैं रतिराजमैं कोकिल कांम ।। ४६६

गुणै समता बहु मैं जु लषाय ।
सिवारति तू वरमां तुव पाय ।।
सुदीपक बस्त[2] क्रिया सुबिचार ।
पिकै मधु पावक केकि उचार ।। ४६७

तहां[3] पद आबृति दीपक हौइ ।
दिपै मुष[4] तीय दिपै ससि जोइ ।।
सु अर्थ जु आबृति[5] दीपक कीय ।
तक्यौं दिन औधि लष्यौ तब पीय ।। ४६८

पदारथ आबृति दीपक आहि ।
सखी तिय चैंन भयौ पिय चाहि[6] ।।
कहैं प्रति बरन[7] सु उप्पम ताहि ।
रहै इक अर्थ दुहू पद माहि ।। ४६९

हितू निज होइ कहै सिष बात ।
अरी समझावत छै तुव गात ।।
दष्टांत[8] इहैं लषि लक्षिन नांम ।
लहै उपमां प्रतिबिंब सु तांम ।। ४७०

---

४६५. १ ख. रूप अरूप ।
४६७. २ ख. वस्तु ।
४६८. ३ ख. जहां । ४ ख, दियें मुख । ५ ख. आवत ।
४६९. ६ ख. पिक चाहि । ७ ख. प्रति वस्तु ।
४७०. ८ ख. द्रष्टांत ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

बनैं लघु पैं नहि ऊचके[1] साज ।
करै जुगनू कबै भांनके काज ।।
सुनौं कबि निद्रसनां त्रिय भेंद ।
सुपोषक अंग दुहु बिन षेद ।। ४७१
सुहागनि और दुहागनि गाव ।
बिनां बरसै रति पावस भाव ।।
सुनौं द्रसनांगुन और म कीन ।
करी गति कांमनिकी गहि लीन ।। ४७२
सुनिद्रसनां इक या बिधि पाइ ।
भलौ र[2] बुरौ फल कारज भाइ ।।
अनींकौ रु नीकौ सु कान्ह रु कंस ।
निद्रसन तीनकि अैसी प्रसंस ।। ४७३
अलंकृत यूं बितरेक कहेय ।
तहां[3] उपमां तै भलौ उपमेय ।।
कहैं तन कुंदन सौ किमि[4] होइ ।
कठोर तहां न सुगंध समोइ ।। ४७४
सहौकति सो इक साथहि जांन ।
छुटचौ[5] संग मांनकै सौतिन मांन ।।
बिनौकति द्वै बिधि ह्वै जग मद्धि[6] ।
भलौ र बुरौ कछु अर्थतैं सिद्धि[7] ।। ४७५
भलेतैं भलौ सु बिनौकति गाव ।
लसै हसती संग फौज बनाव ।
बिनौकति सो फल बी[षी]नतैं षीन ।।
तिया अति उत्तम रोसतैं हीन । ४७६

---

४७१. १ ग.-ऊंचके ।

४७३. २ ग. भलौ रु ।

४७४. ३ ख. जहाँ । ४ ख. किम ।

४७५. ५ क. छुद्यो ६ ख. मध्य । ७ ख. सिद्ध

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

समासउकत्ति तहां गुन श्लेष ।
दुरि[री] चपला इन भौंनमैं देष ।।
सुनौं सुपरिक्कर[1] लक्षिन सोइ ।
बिसेषण भाय लये तहं होइ ।। ४७७
है मुष पंकज तेरौ बषांनि ।
भरचौ बहु बासनि फूलत जांनि ।।
परिकुर अंकुर औ अभिप्राय ।
न आयि बुलाये मिली अब आय ।। ४७८
इकै पद अर्थ अनेक संलेष[2] ।
सु कुंज रहैं अलि मत्त बिसेष ।।
अन्यौकति[3] औरमैं औरकी उक्ति ।
करी पर भौंर कहा यह जुक्ति ।। ४७९
प्रजायउकत्ति कहैं विधि दोइ[4] ।
लहौं क्रमतैं लक्षि लक्षिन जोइ ।।
प्रजाइ कहै कछु बिग्य तै[5] बात ।
नयौ ससि सोहत रावरैं गांत ।। ४८०
प्रजाय सु दूजी कहैं मिस बैंन ।
चली उन कुंजके फूलनि लैंन ।।
सुब्याजसतुत्तिहि लक्षिन धारि ।
'बकी अघ'[6] दुष्ट दळे[ए] हरि तारि ।। ४८१
सुब्याज निदालछिनां महि जोइ ।
मिले हरि तैसें मिलै नहि कोइ ।।
अछेप[7] कहै न कह्यौ चहै भाव ।
सुनौं इक बात कहौं नहि जाव ।। ४८२

---

४७७. १ ख. सुपरिक्षर ।
४७९. २ ख. पंखेप । ३ ख. अन्योक्ति ।
४८०. ४ ख. विधि होई । ५ विगतै ।
४८१. ६ ख. यकी अघ ।
४८२. ७ ख. अछेय ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

नटै कहिकैं पुनि[1] आंछिप जांनि ।
भरे अपराध कहूं न बषांनि ।।
बिरोध सुभाव बिरोधहि[2] रीति ।
सुनीति अनीतिहि राजन[3] प्रीति ।। ४८३
बिभावन कारिज कारन छांडि ।
बुलाये बिनांही मिले रस मांडि ।।
अपूरण पूरै बिभावन सोइ ।
करै[4] अबला बसि सिद्ध न जोइ ।। ४८४
बिभांवन काज रुकै न सबंध ।
तिरें तकि गंग गहे तम अंध ।।
बिभावन काज अकाज तैं होत ।
तुम्हैं तन सौतिकौ रूप उदोत ।। ४८५
बिभावन कारण तैं नहि काज ।
सुमोहन नांम कुचालके साज ।।
बिभावन कारण काजतैं होत ।
लषौ[5] चष मीनतै बारि उदोत ।। ४८६
बिसेष-उकत्ति अलंकृत गाय ।
सुकारण होइ पैं काज न[6] पाय ।।
लगैं दृग बांन पै षाउ न आंय ।
भरे दृग नीर पै[7] प्यास न जांय ।। ४८७.
'अजोगमैं जोग'[8] असंभव मांनि ।
कहौ कब राज बभीषन पांनि ।।
असंगति कारण काजहि भेद ।
लगे दृगे सौतिसौं सौंतिकैं षेद ।। ४८८

---

४८३. १ ख. पुन्य । २ विरोधह । ३ ख. राजत ।
४८४. ४ ग. करैं ।
४८६. ५ ख. लखैं । ग. लषै ।
४८७. ६ ख. कारज पाई । ७ ग. प्पै ।
४८८. ८ ख. अजोगतें जोग ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

असंगति ठौंर बिनां इक काज ।
कपोलमैं अंजन 'राजत साज'[1] ।।
असंगति औरतैं और उपाय ।
जगे मुहि चाहि लगे सौंति पाय ।। ४८९
गनै बिषमाय असंगहि संग ।
'कहां हरि बाल[2]' कहां गिरि ढंग ।।
सुनौं बिषमाक्र कारण भेद ।
लसैं अधरारुन[3] हासि सुपेद ।। ४९०
भले फलतैं ह्वै बुरौ बिषमाय ।
बियोगमैं आगिन चंदन लाय ।।
तहां सम होइ समा तिहिं जोय ।
रमांपति साथ रमा रंग होय ।। ४९१
'समा पुनि काजमैं'[4] कारन पाय ।
जती जग दोष न लागत काय ।।
यकै[5] सम काजहि ह्वै बिन षेद ।
सु चाहत एक मिले चहु बेद ।। ४९२
फलै बिपरीति बिचित्रहि आय ।
तिया हित हेत परै पिय पाय ।।
कहौं अधिका तहं 'आधिक पाय'[6] ।
तिया-तन-रूप धरा न समाय ।। ४९३
बडी इक ठौर सु आधिक और ।
अच्यौ रिष[7] अंजुलि सिंध सजोर ।।
तहां अलपा अलपै तन कीन ।
पिया बिछुरैतैं भई तिय छीन ।। ४९४

---

४८९. १ ख. राजन साज ।
४९०. २ ख. कहौं हरि वाल । ३ ख. अपरारुण ।
४९२. ४ ख. सभा पुनि काजसे । ५ ख. इकैं ।
४९३. ६ ख. साधिक पाय । ग. आधिक पाय ।
४९४. ७ ख. रच्ये रिष ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

अन्यौनि[1] अलंकृत नांम सुरूप[2] ।
निसा ससितैं ससितैं निस रूप ॥
बिसेष बिनां सु अधार[3] अधेय ।
रहै नभ ऊपरि धूहरि सेंय ॥ ४९५
बिसेष 'सुसुक्षिम तैं'[4] बहु सिद्धि ।
रुकम्मनि-काज लही द्विज रिद्धि ॥
बिसेष सुबयस्त[5] अनेक ठां अैनं ।
सुधा तिय ओठनि[6] नैननि बैंन ॥ ४९६
सु औरतैं कारज औंर ब्याघात ।
समीर सुसीत जरावत गात ॥
सुगुंफ परंपर कारण पोष ।
बिषै करै पाप तजैं तिहि मोष ॥ ४९७
इकावलि[7] पंकति क्रमतैं[8] आय ।
बितै दत ह्वै दत तै जस पाय ॥
इकावलि दीपक दीपक-माल ।
सबै हरिमैं हरि तो तन बाल ॥ ४९८
अलंकृत सार सुसारहि सार ।
धरातैं ससी ससितैं मुष चार ॥
अनुक्रम जोग[9] जथा सषि रूप[10] ।
हरे गज दांमिनि चाल सुरूप ॥ ४९९
प्रजाय अनेक सु एकहि ठौर ।
भरी 'रस आंषैं'[11] करी रिस और ॥
सु एक अनेकमैं और प्रजाय ।
बसे पिय नैंननि बैंननि आय ॥ ५००

---

४९५. १ ख. अन्योन्य । २ ख. ग. सरूप । ३ ख. ग. आधार ।
४९६. ४ ख. सुक्षमते । ५ ख. वस्तु । ६ ख. ओढ़नि ।
४९८. ७ ख. इकाबिल । ग. एकावलि । ८ ख. कृभ तैं ।
४९९. ९ ख. ग. योग । १० ख. ससि रूप ।
५००. ११ ख. रिस आंखें ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

परबृत्ति थोरौ दयें बहु पाय ।
गुनि दै असीस भए जगराय ।।
प्रसंषि सु[1] दूसरी ठौरमैं लीन ।
सुहाग सु सौतिनकौ तुव दीन ।। ५०१

इहै कै वहै बिकलप्प कि रीति ।
मिलै यह कै वह तौ बढै प्रीति ।।
समुच्चय काज अनेक कराय ।
डराय दुरै तुव सौति पराय ।। ५०२

समुच्चय 'एकमै'[2] हौंहि अनेक ।
करें क[बि] पंडित संग बिबेक ।
सुकारक दीप इकै बहु भाव ।
हसै तरसै सरसै करै चाव ।। ५०३

समाधिक कारन दूसरै[3] काजु ।
मिली तब औधि 'मिले पति आजु'[4] ।
सुकाबिरिथापति है इहिं साज ।
बडौ भये कांम कहा लघु काज ।। ५०४

हत्यौ कपि ईस का रावन रंक ।
दयौ गज तौ कहा अंकुस संक ।
रु काइबिलिंग सु अर्थमैं हेत ।
जरै तन नाह्व लहै न संकेत ।। ५०५

अर्थांतरन्यास अलंकृत सोइ ।
बिसेष समानहि तै दिढ होइ ।
'ब देषत मोहि लिए ब्रजराज ।
सु औरकी बात कहौं किहि काज ।। ५०६

---

५०१. १ ख. असंखि सु ।

५०३. २ ख. एक समें ।

५०४. ३ ख. दूसरों । ४ ख. मिली पति आजु ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

अलंकृत होइ बिकस्सुर[1] सोइ ।
बिसेष समांन विसेषहि होइ ।।
सु तौहि लषैं हरि ह्वै हैं हजूरि ।
ह्वै दांन तहां जस जांनि न दूरि ।। ५०७

सुप्रोढुउकत्ति[2] जु आधिक लेह ।
लसै घन अंबर[3] दांमनि-देह ।।
संभावन जौ इमि होइ त होइ ।
जरावैं [जो काम इहां सिद्ध होय] ।। ५०८

मिथ्या धिव सेवत[4] चंचल रीति ।
थंभै गिर बाल ह्वै बालकी प्रीति ।।
प्रहर्षण जत्न बिनां फल पाय ।
सखी सु कहा[5] मिलि ए सुखदाय ।। ५०९

प्रहर्षण चाहैं तें आधिक आहि[6] ।
चढ्यो कर पारस सोनेकी चाहि ।।
प्रहर्षण वस्तु[7] उपायतें[8] पात ।
भये 'सिद्धि साधिक सिद्धिकी घात'[9] ।। ५१०

विषाद सु ओरतें ओर उपाय ।
तकें पर-ती निज तीय रिसाय ।।
उल्हास धरै गुण ओगुण भांनि ।
कहें बलिकौं 'हरि दै भुवन दांनि'[10] ।। ५११

---

५०७. १ ख. विकस्वर ।

५०८. २ ख. सुप्रौढ़उकत्ति । ३ ख. घर अंबर ।

१. टि. – कोष्ठांकित पद्यांश श्रीयुत् नाहटाजीसे प्राप्त ख. प्रतिसे लिया गया है ।

२. टि. – छन्द संख्या ५०९ से ५१४ तकके छन्द [क] प्रतिमें नहीं हैं । यह ख. प्रतिसे लिये गये हैं ।

५०९. ४ ग. सिवत । ५ ग. सुषही ।

५१०. ६ क. आई । ७ ग. वस्त । ८ ग. उपातें । ९ ग. सिधि साधि ।

५११. १० हिरदै भुव दांनि ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

अवग्या नंही गुण ओगुण लाय ।
मनें न तिया[1] परये हरि पाय ।।
अनुग्या गिणें गुण दोष न जांनि ।
मिली पतितें अपराधनि मांनि ।। ५१२
अवगुण ह्वै गुणमें जह लेख ।
सुधा हित ओठ न[2] पीड़ विशेष ।।
मुद्रा निज अर्थमें अर्थ सु ऊठि ।
सुता वृषभानकी जारत रूठि ।। ५१३
रत्नावलि नांमके नाम अनंत ।
निशेष[3] निसापति है निसकंत ।।
तदगुन सो गुन ओरहिं जोय ।
सु तो कर मुत्तिय मांनिक होय ।। ५१४
पतरुख दीजें गह्यो गुन टारि ।
धसैं जल पीत तजें सित बारि ।।
पतरुष क्योंहूं तजें गुण नांही ।
लगी क्रम कालिमां धोए न जांहि ।। ५१५
अतद्गुनैं गुन नांहि गहाय ।
भय बिषसे[4] तन संकर पाय ।।
अनग्गुण[5] सो गुण लै सरसाय ।
हैं कंकन कुंदनतें अधिकाय ।। ५१६
सुमीलिति[6] ह्वै सममै सम जाय ।
हिये नहि कंचन-माल लषाय ।।
समांन समांन तैं आधिक नांहि ।
लसै 'पग लाली न'[7] जावक मांहि ।। ५१७

---

५१२. १ ग. त्रिया ।
५१३. २ ग. वोठन ।
५१४. ३ ग. निसेस ।
५१६. ४ ख. भयो विषसे । ५ ख. अत्रगुण ।
५१७. ६ ख. सुमीलित । ७ ख. पग लागी न ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

यहै उनमीलिस[त]मैं भ्रम जाय ।
लगी तन कुंकुम बासतैं पाय ।।
समांन समांनमैं पावै बिसेष ।
षुले मुष कौंल कहौं[1] अलि देष ।। ५१८
गुंछौ[ढ़ो]तर उत्तर[2] भावतैं होत ।
करी अलि छांडहुं कौल उदोत ।।
इकै रव पूछत उत्तर चित्र ।
मिलैं पति री कब री गुहि इत्र ।। ५१९
अलंकृत सुक्षिम[3] बात दुराय ।
लगे नष ता पर केसरि लाय ।।
पिहीत छिप्यौ प्रगटै कछु भाव ।
रुषै मुष हास सुमांन जनांव ।। ५२०
करै छल गोप सुव्याजौं-उकत्ति ।
न जावक भाल हैं बंदन मित्त ।।
गुढ़ोतर गूढ करैं उपदेस ।
सषी चलि कुंजके फूल सुदेस ।। ५२१
ब्रत्यौकति गूढ सलेष, प्रकास ।
सनेह ले आवति हौं तुव पास ।।
सुउक्तिक्रिया करि कर्म छिपाय ।
दुरांवन जावक लागत पाय ।। ५२२
लुकोकृतिलंकृति लोंकबिबादि ।
बसौं अनतैं अलि लै हरि आदि ।।
छिकौकृति जांनु[4] अलंकृत एहु ।
लुकोकति ता मधि अर्थ कहेहु[5] ।। ५२३

---

५१८. १ ख. कों लहों ।
५१९. २ ग. मुछोंतर ।
५२०. ३ ख. सुक्ष्म, ग. सूषिम ।
५२३. ४ ख. जानि । ग. जान । ५ ख. सुदे ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

लषैं ही करै सजनी बस बाल ।
सुनौं तिन नांम है मोहनलाल ।।
बक्रोकति जा महि अर्थ फिरांहि ।
फिरी सषि दौरि मिले हरि नांहि ।। ५२४
सुभाउ-उकत्ति सुं जानि सुभाव ।
सहै पुनि देत है सूरहि घाव ।।
रू भावकि भूत भवष्षित होइ ।
अगै हुतौ कांम सोई यह जोइ ।। ५२५
उदात तहां बहुं अर्थ उदोत ।
बसै जहां दांनी[1] तहा कबि होत ।।
इहै अति-उक्ति अतिसय जूप ।
पिया परसैं भइ कुंदन रूप ।। ५२६
निरुक्ति सुजोगतैं अर्थ लगाय ।
लगी हरि ध्यांन भई हरि भाय ।।
निषेद जु अर्थ जहां[2] प्रतिषेध ।
समीर न तीर करैं तन बेध ।। ५२७
सु है बिधि, अर्थहि साधिए[3] फेरि ।
सु मोहन जौ मनमोहत हेरि[4] ।।
मिलै हित कारज कारण साथ ।
भयौ जस दांनकै देत हि हाथ ।। ५२८
क्रिया संग कारग कारज हेत ।
मिले सुष संपति तेरै हि देत ।।
इत्ती अरथा - अलंकार सुजांनि ।
कहौं सबदा अब नीकै[5] बषांनि ।। ५२९

---

५२६. १ ख. जहां दांमिनी ।
५२७. २ ग. तहां ।
५२८. ३ ख. साधियै । ४ ख. मनमोहन हेरि ।
५२९. ५ ग. अति नीकैं ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

फिरैं बहु बर्न दुहूं वर आय ।
अलंकृत छेक कहैं कविराय ।।
मिली सजनी रजनी महिं आंनि ।
घटा मधि बीज[1] छटासि बषांनि ।। ५३०

बहू बर बर्न सु बृत्तिनुप्रास ।
नरी किंनरी न सुरीं इनि[2] पास ।।
बृत्या-अनुप्रास तैं[3] बृत्ति सु तीन ।
भई सु कही कबिताई नवीन ।। ५३१

सुमाधुर ह्वै उपनागरिं सोइ ।
हसै हुलसै बिलसै पति जोइ ।।
गनौं परुषा तहं वोज प्रकास ।
हटै न घटै रपटैं भट जास ।। ५३२

रु कोमला बर्न प्रकास प्रसाद ।
अरौ न करौ न षरौ बकवाद[4] ।।
अनूप्रस लाट उही पद जोइ ।
जपै हरिकौं हरिकौ जब होइ ।। ५३३

जमंक सुसव्द[5] वहै अर्थ और ।
सु मोहन हैं मन-मोहन मोर ।।
इते अलंकार पढै कबिराज ।
लहै सुष संपति साज समाज ।। ५३४

दोहा – नवरस पिगल छंद कछु, अलंकार बहु रंग ।
कबि पंडित हित समझि कैं[6], बरन्यौं नेहतरंग ।। ५३५

---

५३०. १ ख. वीजु ।
५३१. २ ख. सुरी इन । ३ ग. तैं ।
५३३. ४ ख. चकवाद ।
५३४. ५ ख. जमंक र शव्द ।
५३५. ६ ग. समझिहै ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

दोहा – सतरहसै चौरासिया, नवमी तिथि ससिबार ।
सुक्ल पक्षि[1] भादौं प्रगट, रच्यौ ग्रंथ सुषसार ।। ५३६

इति श्रीनेहतरंगे रावराजा श्रीबुधसिंघ सुरचते अलंकार
निरुपणं नांम चतुरदशो तरंग ।। १४ ।।

इति श्रीग्रंथ नेहतरंग संपूरण समाप्ताः ।। श्री ।।
।चै सुणै त्यानैं श्रीराधाकृष्णजी सहाइ ।।
।। शुभं भवत् ।।

संवत् १७८५ वर्षे मिती आषाढ़ वुदी ७ सोमवार पोथी लीषतं च जोसी
भोपती गढ वुंदी मध्ये बास्तव्यं ।। पोथी लषि आबेर मध्ये ।।

श्रीकृष्ण परमात्मा ।।

।। श्रीराम श्रीराम श्रीराम श्रीराम ।।

प्रति [ख] —इति श्री नेहतरंगे रावराजा श्री बुद्धसिंह सुरचिते
अलंकार निरूपणं नाम चतुर्दशो तरंगे ।। १४ ।।
इति श्री नेहतरंग सम्पूर्ण समाप्तम् ।

संवत् १९०१ मिति जेष्ठ वदि १ लिखितमिदें पुस्तक ।

।। शभुं भवतु ।।

प्रति [ग] —इति श्री नेहतरंग ग्रंथ संपूर्ण समाप्त
सर्व दोहा छंद कवित्त ५३६ ।। श्लोक संख्या १४८९ ।। श्रीरस्तु

लीपतं वसंतराय साभर मध्ये संवत् १८०२ मिती काती शुदि ४
वृहस्पतिवारे ।। १ ।। २ ।। ३ ।।

---

५३६. १ ग. शुक्ल पक्ष ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

परिशिष्ट – १

छन्दानुक्रमणिका

[अ]

क्रम संख्या	पंक्ति	छ. सं.	पृ. सं.
१	अंग अंग छबि छाइकैं, रहैं जु जोबन आई	५८	१३
२	अंगके ढंग उपंगके अंगनि, हासि तरंगनके संग तैसें	८९	१९
३	अंगके रंगसौं हासी-प्रसगसौं, भौंहके भंगनते छबि छायौ	३२१	६०–६१
४	अंगनकी प्रति-अंगनकी, घुलि चंद्रिका जाल हिये अवरेषैं	१५३	३१
५	अंगनसौं इत रंगनसौं, उझलै अंग चांदिनीसी छबि छांई	४०	१०
६	अंगनसौं फुलवादिसी घूटिकैं, ताप दै सौतिनपैं अतिसी है	१४७	२९
७	अंग-सिगार फुलवादि ज्यौं, तेरे मिलन इलाज	१४४	२८
८	अंजन घूटि लसैं बिषमो. सोही हांसी सुधारस सै अतिसी है	१५१	२९–३०
९	अंजन बक कलंक घुलैं. तार-हारन-मोतिनकी छबि छाई	१३५	२७
१०	अंजन मंजन कै दृग-रंजन, षंजन चंचलताई चुराई	१९५	३७
११	अंबर धारैं निलबरसौं, बड़े नैननि सुछ-सरोज निगाहैं	२५६	४८
१२	अंबर नील-घटासी घुलैं, मोतोहारन बूंदन ज्यौं बरषाई	१३९	२८
१३	अंबर पीत घुलैं कदली, अभिलाषन–पल्लव त्यौं सरसाये	१४१	२८
१४	अजोगमैं जोग असंभव मांनि	४८८	९१
१५	अतद्गुनैं गुन नांहि गहाय	५१६	९६
१६	अतनबूंद दाहत तनह, चाहत मग घनस्यांम	१७२	३३
१७	अति बिरहै पर वासतैं, निद्रा आवत नांहि	२९१	५५
१८	अति हिततैं अनुरागतैं, अंग गरब छबि छाइ	२१५	४१
१९	अर्थातरन्यास अलंकृत सोइ	५०६	९४
२०	अधिकाई लाहि प्रेमकी, उपजत हिये गुमांन	३२५	६१
२१	अनन्वय नांम सुलक्षिन लेषि	४४७	८४
२२	अन्यौनि अलंकृत नांम सुरूप	४९५	९३
२३	अपनैं हितकौ अहित जहं, सुनत सोय चित होय	३७३	७१
२४	अपुंन्हति छेकसु जुक्ति दुराव	४५९	८६–८७
२५	अफरी-अफरी भुवनमैं, मिलन तिहारैं चीति	१७०	३२
२६	अब दरसन सुनि च्यार बिधि, एक साक्षात सुरूप	२८	६
२७	अब ही तै होत चली उकसौंही छतियां ये, बतियां हंसौंही बूब सूरती सखत पैं	४६	१०

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

क्रम संख्या	पंक्ति	छ. सं.	पृ. सं.
२८	अभिलाष सु चिंता गुन कथन, स्मृति उद्वेग प्रलाप	२५३	४७
२९	अलंकृत पूरन उप्पम मांनि	४४५	८४
३०	अलंकृत यूं बितरेक कहेय	४७४	८९
३१	अलंकृत रूपक द्वै विधि जांनि	४५२	८५
३२	अलंकृत सार सुसारहि सार	४९९	९३
३३	अलंकृत सुक्षिम बात डुराय	५२०	९७
३४	अलंकृत होई बिकस्सुर सोइ	५०७	९५
३५	अली सहेलीकें भुवन, मिली चंद ब्रज आय	११०	२३
३६	अवगुण ह्वै गुणमें जह लेख	५१३	९६
३७	अवग्या नही गुण ओगुण लाय	५१२	९६
३८	असंगति ठौंर बिनां इक काज	४८९	९२
३९	अैसें लसें रदनंछिततें, उठे प्रात समैं छबि चंदकी मोहें	५२	११
४०	अैसी यहं रीतिसौं लुभाने बलि बारंबार, कहीहू न जात सुनी बात न जे चलियां	१६	४

आ]

४१	आनंद हेत घनां-घन-कुजमैं, राधिके राजत साथ न आली	११३	२४
४२	आई तिहारे मिलापनकौं, रति-रंभासी गंगाहूसी गहरेंसी	१७९	३४
४३	आषिन झरेंसी धरें हारन प्रमोद मन, रैंनिकौं बढ़ायें दिन घटें अंग अैठी है	४२६	८०
४४	आगम आवन पीयकौ, जो तिय सजति सिंगार	९२	२०
४५	आज लसें ब्रजनारी सबै, जमना तटपें जुरि आई अलेषें	१४	४
४६	आजु कछू अंग आरसतें, सो जतायकें राधें समाज मिली है	१२१	२६
४७	आजु कछू बलि राधिकासौं, हरि सोहत रूठिकै बैठे अपूठें	२२४	४२
४८	आजु ग्वालबाल मिलि भारी-भौंन अंगनमैं, खेलके प्रसंगनमैं भीर न समाती है	१२३	२५
४९	आजु कछू बारबार जम्हाइ, कछू सरसाइकें मोद मढ़ी है	२१०	४०
५०	आजु कछू नंदनंदनसौं, बलि राधे उराहनें दैन झुकें हैं	३३०	६२
५१	आजु कहौं फिरि कालिह कहौं, परसौंकौं कहौ बिन बातन जीहें	१८	४
५२	आजु कितो बड़ी बारहूलौं, उन मोसौं कही कितो बात तिहारी	२०७	३९
५३	आजु छबि देत बलि राधे बृजचद साथ, अंग-अंग उमगत जोबनकी जोरेंतें	७७	१७
५४	आजु गई ही जसोमतिकें, सो मिले नंदनंदन प्रीति उघारें	१७७	३४
५५	आजु तिहारे मिलनकौं, नंदनंदन उमहात	१४८	२९

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

क्र. संख्या	पंक्ति	छ. सं.	पृ. सं.
५६	आजु दरसत परसत यन भाइनसौं, सारी राति जागत उंनीदी छबि छै रही	६८	१५
५७	आजु परोसनि मंदिर सूनै, मिली ब्रजचदसौं राधे छलीसी	११७	२४
५८	आजु बलि सोहै अैसें सारी बृजसषिनमें, उझली परत सोभा भारी अनुरागकी	७५	१६
५९	आजु बुलावनकौं बृजचंदकौं, बोली मैं जाय घरी-सुघरी है	१६९	३२
६०	आजु बेसम्हार बलि विरह विसालनसौं, ल्याये परजंक पर आंगनमें आरसे	२७६	५२
६१	आजु मिली ब्रजनारि सबै, होरि षेलकौं नंदकै द्वार थटे ज्यौं	३७२	७१
६२	आजु मिले जमना-तटपैं, नंदनंदन ज्यौं व्रषभानकिसोरी	३९०	७४
६३	आजु मिलैं मिलिये बनैं, सुनौं बात बृजचंद	१३८	२८
६४	आजु मुखचंद पर रोचन-रचित भाल, अैंही ब्रजचदके बिकांवनि सिताबकी	२३	५
६५	आजु मैं देखी है गोपसुता, मुख देषैतें चन्द्रमा फीकौ ह्वै जोतो	२१	५
६६	आजु मैं ल्याई हौं गोपुसुता, छबि सोहत तैसी प्रभानकी सैली	१५९	३१
६७	आजु लषी सषी साथ सौं राधे, मैं साधैं सबै रसकी तलकी है	३६५	६९
६८	आजु लषी वह तीर कालिंद्रीकै, चंद्रिका रंगसौं अंगभरीसी	३१	७
६९	आजु लषे ह्वै ते ग्या मगकौं, वह ता छिनतें छकि नैन रहे हैं	३०	७
७०	आजु लसैं बनितांनकें बीचि, रहे अंग-अंगन जोबन जोरैं	३९८	७६
७१	आजु लसै रतिरंग समै, सरसैं केती अंग-तरंगनि झोकै	६१	१३
७२	आजु लसैं हरि राधिका संग, निकाई सबै जगकी गहरैंसी	३६३	६९
७३	आजु हौं ल्याई हौं गोपसुता, बलि रंभाहुंसौ रतिसौं अगलीसी	१५५	३०
७४	आनी अलीन छली छलसौं, मिली सोहत चंचलासी उयरीसी	५१	११
७५	आपनैंसें परमान चलौ, हरि या बृजमैं निवहै रस कैसें	१९३	३७
७६	आपहीं जाय लगी कितकौं, दिन देह-दसा उर भांति न आनें	२६५	५०
७७	आभूषनको आदर न, होइ तहां मत आई	३५५	६७
७८	आये कहूंतें री आज कछू, जाकी वंसीकी गंसी हियेसी भरी है	३७४	७१
७९	आरभटी तीजो कहौं, बृत्ति जमक सरसाय	३९९	७६
८०	आरसी मंदिरमैं रिस राधिकैं, बैठि चढ़ी भृकुटी लटैं षूटी	२१८	४१
८१	आलंबन उदीपकें, पीछें उपजत जात	३०८	५९
८२	आवत आजु लषे नंदनंदन, अंग प्रभानि धरें जिखरी हैं	३६९	७०
८३	आवत जातहौं जांनि न जात, कछू गति-गूढ़से पाठ पढ़ी है	२११	४०
८४	आवै नहीं नवला नवलालकी, सेज सखीजन केती जकीसी	५०	११

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

क्र. संख्या	पंक्ति	छं सं.	पृ. सं.
	[इ]		
८५	इकावलि पंकति क्रमतें आय	४९८	९३
८६	इकुं अनकूल बषांनिए, नीकी भांति पिछांनि	४१०	७८
८७	इकें पद अर्थ अनेक संलेष	४७९	९०
८८	इकें बहु मानें उलेष सुचाल	४५४	८६
८९	इकें भिद कांति कहावति और	४६२	८७
९०	इहि पूर्बा-अनुरागतें, दसौ औस्था आय	२५२	४७
९१	इहिं रूप लषी वह आवत ही, मनमोहनीसी पल पांषनिमें	४३४	८२
९२	इहें उतप्रेछ जु संसय सांच	४६०	८७
९३	इहें कं वहे बिकलप्पकी रीति	५०२	९४
	[उ]		
९४	उज्जल अनूंप आभा उझली परत चारु, चंद्रिकातें चौगुनी सुधा-रसधरी घरी	३५६	६८
९५	उग्र देह अति कोपमय, रक्तबर्न सब अंग	३७६	७१
९६	उत्सवकें मन्दिर मिली, नंदनंदनसौं आय	१२८	२६
९७	उदात तहां बहुं अर्थ उदोत	५२६	९८
९८	उनहिं मिलनकी झटपटी, निपट नटपटी नीति	१६०	३१
९९	उमडे अडारे घन कारेते अफारे भय, भारे अंधियारे धरवारन सुजातकी	३८४	७३
	[ऊ]		
१००	ऊधौ एक सुनिबे हूं अरज हमारी ओर, एते पर उनहू कें मनमें न आती है	९५	२०
१०१	ऊधौ क्यों न कहो जाइ स्यांम सुखदाइकसों, वृजमें विरंचि एक विधि नई बांधी है	८	२
	[ए]		
१०२	एक वोर मंगा गंगा सोहै एक वोर आधें, छूटि रहे केस आधें छूटि जटा भेसकौं	३	१
१०३	एक समें बलि राधिकानें, कुबिजाकौ प्रसंग कह्यौ हितूहूसें	३९६	७०
१०४	एक समें वृषभांनलली, चली कुजगलीनि अली संग लायें	३३५	६३
१०५	एक समें वृषभांन सुता, सु गई निज धांमहि नंदके नौती	३४२	६४
१०६	एक समें हरि राधिकासौं, समें प्रात लसें छबिता सरसी है	३६८	७०

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S.		Jin Gun Aaradhak Trust

क्रम संख्या	पंक्ति	छं. सं.	पृ. सं.
	[औ]		
१०७	और ठौर रति मानिकै, पिय आवै परभात	९६	२१
१०८	औरै कछू सुहाइ तहं, भूलि जाय सब कांम	२६३	५०
	[क]		
१०९	कंचन जौ जड़ता तजि देय, तौ अंगके रूपसौं रूप दिषावैं	२६१	४९
११०	कंठ षद्योतनके गहनां बनि, अंबर नील-घटा घहरांई	२९०	५५
१११	कछु उघर्‌यो-उघर्‌यो चहत, अबैं चंद चढ़ि आत	१५२	३०
११२	कनकबरन कौंधनि हसनि, चितवनि चितकी वोर	२०	५
११३	करत औरके और ठां, भूषन बसन बनाव	३४०	६४
११४	करत चलाकी चंचला, महाबलाकी सोर	१३२	२७
११५	करत गुंज मिलि पुंज अति, लपटैं लेत सुगंध	४१५	७८
११६	करत बात पिय औरतैं, अवलोकै तिय आंनि	२२१	४२
११७	करि साज संगीत सषी सुष-हेत, सु तो दुष देत अपूठी भ्रुकीसी	२७०	५१
११८	करैं छल गोप सुव्याजौं-उकत्ति	५२१	९७
११९	करैं बीनती दुहुंनकी, सषी जोरिकैं पांनि	१८८	३६
१२०	करौ मात इकतीस पद, च्यारि चरन जुत प्रीति	४३५	८२
१२१	करुनां हास्य सिंगारस, अक्षिर सरस बषांनि	३९५	७५
१२२	कहि आक्रामति नायका, जाकौ अैसौं हेत	७४	१६
१२३	कहि पठवै मुषवचन कछु, बिरह बिकलता होई	२९८	५७
१२४	कहि समस्त-रस-कोबिदा, चित्र-बिभ्रमा जांनि	६९	१५
१२५	कहौं लछिन लछिलंकृत नांम	४४४	८४
१२६	कह्यौ करैं नहि पीयकौ, तिया कौंन हू भाय	२१९	४१
१२७	काजरकैं षरसांन चढ़ी, यौं मढ़ी अभिलाष सनेह नवीनौं	२५१	४७
१२८	काजरकैं षरसांन चढ़ी, वै बढ़ी अंषिया भ्रकुटी चढ़ि बाढी	५९	१३
१२९	काजरसी का (री) निसि करत उज्यारी स्यांम, सारी हू न दुरत जुन्हाई जाल भरे हैं	१०४	२२
१३०	कामनि और बिलोकतैं, नैंननि देषै आय	२१७	४१
१३१	काहू बिधि चित्त दुहुंनकौ, मिलै मिलावै आंनि	१९७	३७
१३२	काहूसौं बात कहै न सुनैं, कछु षेलै नहीं छिन मंदिर मांहा	२६४	५०
१३३	काहूसौं बात करैं मन षोलैं, न डोलैं न कुंजन चाहि बगी है	१७३	३३
१३४	किहू भांति मांनत नहीं, तिया मनावत पीय	२२३	४२
१३५	कीनैं कौल संकेतकी, सषी बुलावत चाहि	१००	२१

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

क्रम संख्या	पंक्ति	छं. सं.	पृ. सं.
१३६	कुंडल छटन बनमाल उछटन वै, मुकट पलटन छूटी लटन सुधारिगौ	२५०	४७
१३७	केता करि लिष्या फेरि जादा करि लिष्या जात, मिलनां न औधिपैं, बिसारौ मति मन है	२६७	५६-५७
१३८	केती मजूरी सुधरि कमांन, भरचौ भलका जिहिं बीच सराहैं	२३५	४४
१३९	केतौ सिषाइकैं मैं पठई, नफरी अजौं कौंनकैं संग लगी है	२८२	५४
१४०	केलि कलहकी केलि मैं, जहां केलि अधिकाय	३४६	६५
१४१	कैहूं छल करि ब्याज मिस, मांन दैहि बहराइ	२३४	४४
१४२	कैसेंकैं मिलिए मिलैं, हरि कैसें बस होइ	२५७	४८
१४३	कोऊ कहौ भल कोऊ सुनौं, कछु होत कहा कहि बात न नाषैं	१८१	३४
१४४	कोप-कपट-परवीन-तन, तीछन लोम अपार	२६	६
१४५	कोरि कलानिधि आधिक आज, लषैं भरी नींद मैं त्यौं अभिलाषैं	३६	८
१४६	कौन दई यह बाय बलायलौं, नेंक परैं नहि नेह नवेरू	१५७	३०
१४७	क्यौंहु न दंपतिकौं बनैं, मिलबो मनभय मांनि	२१२	४०
१४८	क्यौंहूं रसमय होत हैं, दंपति मांन निवारि	२३१	४३
१४९	क्रिया संग कारण कारज हेत	५२९	९९

[ष] ख

१५०	षरी चाहि उहि चटपटी, मिलन बारकौ हेरि	१४२	२८
१५१	षिन रोवे हुलसैं हसैं, उठि चालैं उझकाय	२६६	५०

[ग]

१५२	गनौं विषमाय असंगहि संग	४९०	९२
१५३	गवन करत प्रीतम-प्रिया बिछरि कौनहूं काज	२८४	५४
१५४	गाजकैं सज्जल कज्जलसे, घन छूटि मदज्जलसे झर जागी	४००	७६
१५५	गारि-मारकी त्रास सब, नहीं अंग लवलेस	१७	४
१५६	ग्यारह तेरह मात के, च्यारि चरन सुध हांनि	४४१	८३
१५७	गुंछौतर उत्तर भावतें होत	५१९	९७
१५८	गुणै समता बहुमैं जु लषाय	४६७	८८
१५९	गौरषरव गंभीर तन, अधिक उछाह उदार	३७९	७२

[घ]

१६०	घोरि-घटा-घन घेरि रह्यो, घर त्यौं चपला चमकैं अति औंडी	२४७	४६

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

क्रम संख्या	पंक्ति	छं. सं.	पृ. सं.

[च]

१६१	चंचल चकोर चहुवोर जोर हंसनकी, चंदमुष चांदिनीसी छूटि छबि छाई है	४२२	७६–८०
१६२	चंद अमंदसी चंद्रिकासी लषी, सोहत ही जोही वाही अहीरी	३७	८
१६३	चंदसी चंद्रिकासी तजिकैं, सु रहे मन सौंषि जिकैं इक सातैं	२०८	३६
१६४	चंदमुष अंबर कसूंभी सोहै अंग मिलि सोहैं जालदार सो किनार जरतार लौं	१०५	२२
१६५	चंद्रमुख चंद्रिका अंग चहुवोर षुलि, चषनि चिति चाहि चक्कोर मंडी	४४०	८३
१६६	चंद्रिका फैलि चहूं दिसितैं, न सुतौ चंद्रहास चौप चढ्यौ है	२४४	४५
१६७	चंद्रिकासी अबला चपलासी, लषै कमलासी सो सोभा लगीसी	६१	१६
१६८	चंपक रंभ अंब द्रुम मोरे, चहुं दिसि कोकिल कूक सुलग्गी	४३६	८२
१६६	चक्रतसी उझकीसी जकीसी, थकी बतियांनसी आंनत जी सैं	२६७	५०
१७०	चन्द्रकों चकोर ज्यौं दिवाकरकों चक्रवाक, जैसे मधवांनकों कलापी वरजोरी है	१२	३
१७१	चतुर चाहिं गति रति-समैं, बिबधि भाय रति-रीति	६०	१३
१७२	चपलाइ चौसर चंबेलि गुण मौंसरता, चंदन मिलन मिलि उपमांसी जोन्हमैं	७१	१५–१६
१७३	चहुं दिसितैं चपला चमकि, उठै घोर घन आय	१३६	२७
१७४	चाहत है मिलिबौ कबहू, कबहू सजै अंग सिंगारनकैं हैं	३३३	६३
१७५	च्यारि भेद ताके सुनह, अनकूल हियकों देखि	१०	३
१७६	च्यारचौ ही औरतै जोरि रहे, घन सोर करैं मिलि मोर पपीहा	२४८	४६
१७७	चित चंचल गति मंद सब, भारे अंग बषांनि	२४	५
१७८	चित मैं भय भ्रम आंनिकै, मांन तजत तिय पीय	२४६	४६
१७६	चितामनि चितबृत्ति रहे चाय भाय छबि, छीर गहराई नीर-गति सरसै रहे	२५६	४६
१८०	चित्रके से लिषे मित्र गवालनि, बालनि छाडिकं भौन वसेरैं	३६३	७५
१८१	चित्र देषि निज मित्रकौ, मनसुष पावै मित्र	३८	८
१८२	चूक्यौ फिरै चंद लषि चंपक बिभूक्यौ फिरैं, षंजन षिसात फिरै समता न साधेकी	४३८	८२–८३

[छ]

१८३	छूटि झरैं धुरवा गति ज्यौं, गंगधार हजारनकी सरधा है	४२०	७६

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

क्रम संख्या	पंक्ति	छं. सं.	पृ. सं.
१८४	छूटे केसपास हारभार लंक लूटें जात जूटें जात भौहें वर छबिता अमंदकी	१०१	२१
१८५	छूटे त्यौं बार जटाजूटी-जाल, बिभूतिसो चंदनके बरकीसो	२८०	५३

[ज]

क्रम संख्या	पंक्ति	छं. सं.	पृ. सं.
१८६	जंत्र अनुराग सोच तंत्र न संकोच मंत्र, मृद मुसकांवनिकें सोभा सरसें रहे	२५८	४८–४६
१८७	जनी भुवन असें मिली, नंदनदनसौं आय	१२२	२५
१८८	जमंक सुसब्द वहै अर्थ और	५३४	६६
१८६	जलबिहारमैं मिलनकी, रहि उपमा यौं जूटि	११४	२४
१६०	जह गुन गन गन देह-दुति, बरनहुं सहित असेष	२६०	४६
१६१	जहं प्रवासके बिरहतें, उपजत है भय-भ्रम	२८८	५५
१६२	जहां बिपरीति अतितति गाव	४६५	८८
१६३	जहां सिंगार बिभत्स भय, बीरहि कहें बषांनि	४०४	७७
१६४	जाकै देषत सुनत हीय, होत अचंभौ आंनि	३८८	७४
१६५	जाकौ कहि नवलवधू, बढ़ें अंग दिन-ज्योति	४३	१०
१६६	जात चलि मिलि संग अली सु मिली मग गोकुल मांझ सवारी	४३२	८१
१६७	जा दिन तें बिछुरे नंदनंदन, ता दिन तें कछु नीति न नेंगो	२८५	५४
१६८	जा दिन तें भये राव रै मांन, सम्हारै न बातनकी गहराई	२३३	४३
१६६	जा दिन तें लगे नैंन तिहारे, सो ता दिन तें वे बिके तन त्यौं है	३७५	७१
२००	जा मैं स्थायीभाव रति, सो बरन्यों शृंगार	६	२
२०१	जाय मिली उत आप नहीं, अभिलाषनि साथ महा अनुरागी	२८३	५४
२०२	जाहां आपु अपनायकें, तुरत छिड़ावै मांन	२३७	४४
२०३	जाहां उपमेयतें उप्पम हींन	४५०	८५
२०४	जाहि न बोलन देति है, लाज गहत है आइ	३२८	६२
२०५	जिनकें जिनते प्रगट ह्वै, मैंन बढ़ावत प्रीति	३०६	५८
२०६	जे सिव साधि समाधिन-साधन, वेद-पुराण कहें अनुरागी	१४६	२६
२०७	जेंवन पास परोसकें राधे, गई जबै सौहें करोर छली है	१२७	२६
२०८	जो नवजोवन बरनिये, मुगधाकौं यह रंग	४५	१०
२०६	जोवै अवधि-संकेतकौं, मिलन बननकौं जोइ	६०	१६
२१०	जो समस्त-रस कोविदा, ताकौ यहै उदोत	७६	१५
२११	जो सुषदायक निज हितू, कोउक औगुन देषि	२००	३८
२१२	ज्यौं किरणपति किरनिकी, आस धरत अरिबिंद	१५६	३०

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

क्रम संख्या	पंक्ति	छं. सं.	पृ. सं.
	[झ]		
२१४	झिलि-झिलि बूंदन सुजात अरिबिंदनकैं, कुंदन-कमोदनकैं मोद अनुकूल है	६४	१४
	[ट]		
२१५	टीका जराऊ सुधारससैं, मुष भारैं तमोरनि वोप सुधारैं	१६३	३१
	[ढ]		
२१६	ढाहि देत हठ दुहुनकौ, रस करि देहि मिलाइ	१९१	३६
	[त]		
२१७	तजि मरिजादा जगतकी बचन कहति तिय आंन	२२७	४३
२१८	तजैं मांन प्रीतम प्रिया, बाढै उर अनुराग	२२९	४३
२१९	तहां पद आवृति दीपक होइ	४६८	८८
२२०	ता पर देव अदेव-कुमारि, उतारिकैं लाजके साज धरैंगी	१६१	३१
२२१	तारे सुभट्टन मोतिन-माल, बिचित्रत चीर धुजा फहराई	३८०	७२
२२२	तिय लबधा सो जानिए, बरनत सुकबि-बषांन	७६	१७
२२३	तिया सम सुन्दर को जग जानि	४४६	८४
२२४	तू बडें मानभरी अभिमांन, कितैं कहिबैं सुनिबैं अवधांरी	२०४	३९
२२५	तेरे बिन देषें तिन्हें चैन कैसे होइ जिन, लोचन-चकोरन पियूष-रस चाष्यौ है	३२३	६१
२२६	तेरे मत्ता प्रथम ही, पुनि अग्यारह जोइ	४२९	८१
२२७	तैसी अंधेरीसी रैनि रही, चमकैं तहं चंचला चाइ लगैंकौं	२१३	४०
२२८	तैसेंही कुंज रहैं अलि गुंजत, तैसें चंपक चाल गही है	२१४	४१
	[थ]		
२२९	थाल नभ आइकैं अक्षित नक्षित्र मेलिह, सोहै सुधा नेहसौं सनेह छबि धारी हैं	५५	१२
२३०	थिर न रहत कहुं गैर मन, अति अताप तन-ताप	२६९	५१
२३१	त्रिगुरु मगन महि देवता श्रवत सिरी, त्रिलघु नगन नाक बुद्धि बकसैं नूमल	४२८	८१
	[द]		
२३२	दस दस संतरै पर बिरति, सप्त तीस सब मात	४३९	८३

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

क्रम संख्या	पंक्ति	छं. सं.	पृ. सं.
२३३	दीजे दही कहौ काहेकौ दीजे जू ? दान हमारौ, न मोल नक्यौ है	४११	७८
२३४	दुरैं भ्रम सुद्ध अपुन्हति जांनि	४५७	८६
२३५	देषनकौं मन त्यौं तरसै, तरसै श्रुति बोलनकौ जु महारी	१८६	३६
२३६	देषनि बोलनि चलनि हित, चुंबन अौ परिरंभ	३०६	५६
२३७	देषनि बोलनि चलनि हित, प्रगटत कांम कलांनि	३४३	६५
२३८	देषि चिन्ह कछु सौतिकौ, सुनि वाकौ हित साज	२२५	४२
२३९	देषि रहै हसिबौई करै, मिलिबेकौं अरै मन मोद बढावै	३३२	६२–६३
२४०	देषै बिनां उनकै कबहू, न रहे न जुदे छिनहूं रतियां है	२८६	५४
२४१	देषैं न भेषैं बिसेषैं कहूं, अवरेषैं लषै टगी एकमैं राषैं	३२७	६२
२४२	देबीकैं देहुरैं पूजत आजु, लषे बृजचंद सुधा सरसाती	३८९	७४
२४३	देवनकी नारि अौ अदेवनि कुमारी तन, वारिबेकौं होत निरधार छबि जैठी है	३५४	६७
२४४	देहकी सकल सुधि ग्वालनकी सुधि भूलै, देषैं तन छबि आंषैं आवत हैं आंसुरी	२७७	६३
२४५	देह चपलासी सिंधुवारी अबलासी सोहै, हांसी चंद्रिकासौं नांही चंद्रिका लजायनौं	४०	६

[ध]

क्रम संख्या	पंक्ति	छं. सं.	पृ. सं.
२४६	धाय नटी नांयनि जनी, अौर परोसनि नारि	१३०	२६
२४७	ध्याय सहेली सुबन जल, सूनै घर भय मांनि	१०६	२३
२४८	धीरज बि अधीरकै, कछू कहति जो बैन	८४	१८
२४९	धूप तपै तपताप पंचागि; दवागिनी सो भगवां रंग सोहै	४१८	७९

[न]

क्रम संख्या	पंक्ति	छं. सं.	पृ. सं.
२५०	नऊं सांत रस तास मधि, थाई है निरबेद	३१८	५९
२५१	नंदके नंदनसौं वहै बात, चहै सुतौ बावरी क्यौं बनी आवै	४०९	७७
२५२	नंदनंदनकै एक नारिनैं होरीमैं, काजर-रेष लिलार कसी है	३७१	७०
२५३	नटै कहिकैं पुनि आंछिप जांनि	४८३	९१
२५४	नवरस पिंगल छन्द कछु, अलंकार बहु रंग	५३५	९९
२५५	नवरस वरनैं बहुरि कछु, पिंगल छंद बताय	४४३	८४
२५६	नवल अनंगा होति तिय, मुगधा अति सरसात	४७	१०
२५७	नवल वधू नवजोबनां, नबलअनंगा जांनि	४२	१०
२५८	नांही कलंक कियें मुष करौसो, पापनकी अवली उमही है	२७४	५२

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

क्रम संख्या	पंक्ति	छं सं.	पृ. सं.
२५९	नांही बगुपांति यह कौडावलि देखियत, गरजत नांही बाजै सांकरनि झेले हैं	३८३	७३
२६०	न्हांन सबै जमुना जलकौं, ब्रजके नर नारी हिये उमगे हैं	३७८	७२
२६१	निकसत हसत निसंक जह, होत सिथल सब अंग	३६७	७०
२६२	निर्वेद, गलांनि, संका, आलस, दय, निमोह, श्रम, मद, कोह, मति, सुमृति, बषानिये	३१५	५९–६०
२६३	निरुक्ति सुजोगतैं अर्थ लगाय	५२७	९८
२६४	नीलबरन विभत्सरस, अति निंदामय देह	३८५	७३
२६५	नेवर जराऊ मनि जेहरी बिसरि दोऊ, पाइ अरबिंदन पै बंदिनकौ धरिबौ	३४१	६४
२६६	नेह-रूप अभिमांन सौं, तहां अनादर होइ	३३४	६३
२६७	नेह समुद्रकी थाह अथागन, लेबौ चहै सुतौ क्यौं निबहै है	४०७	७७
२६८	नेंक न लाज समाजकी, महा मानियत कांनि	३१९	६०
२६९	ननंनि अंजनकै धरिबै, धरिबै भृकुटीनकी जूटै निकाई	३२०	६०
२७०	नैंननि- बैंननि सैन बिधि, उपजत हियें हुलास	३५२	६७
२७१	नौंतेकै मन्दिर मिलो, नंदनंदनसौं जूटि	१२६	२६

[प]

२७२	पतरुष दीजैं गह्यो गुन टारि	५१५	९६
२७३	पतिकौं साअपराध लषि, कहै जु कछुक जताय	६३	१४
२७४	पति बिदेस जाकी बसै, निसदिन नींद बिहाय	९४	२०
२७५	पत्री दोइ प्रकारकी, बरनत है कबिराज	२९४	५६
२७६	पदारथ आवृति दीपक आहि	४६९	८८
२७७	परत पुंज अति बिरहके, तम-निकुंज घहराति	१४०	२८
२७८	परवृत्ति थोरौ दयें बहु पाय	५०१	९४
२७९	परम भांवतौ मित्र तह, सुपनैं दरसै आय	३५	८
२८०	परि अताप किरनैं प्रकट, दाधे तरु सरुजात	४१७	७९
२८१	पहली सौहित सहज उर, अति विचित्र सम प्रीति	१३	३
२८२	पहिलैं तजि मांन मनाय रही, परि पाय कितीक कियें उपषांनें	३४७	६६
२८३	प्रगलभ-बचनां जांनिये, जाकी अैसी रीति	५६	१२
२८४	प्रजाय अनेक सु एकहि ठौर	५००	९३
२८५	प्रजायउकत्ति कहैं बिधि दोइ	४८०	९०
२८६	प्रजाय सु दूजी कहैं मिस बैंन	४८१	९०

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

क्रम संख्या	पंक्ति	छं. सं.	पृ. सं.
२८७	प्रतनीक नीरस बिरस, और सुनहु दुसंधानैं	४०३	७७
२८८	प्रतीप सु उप्पम द्वै उपमेय	४४६	८५
२८९	प्रथम वृत्ति कौसिकी कहौं, बहुरि भारती देषि	३९४	७५
२९०	प्रफुलित लोचन होत कछु, दसन बसन मुलकाय	३६१	६९
२९१	प्रहर्षण चाहै तें आधिक आहि	५१०	९५
२९२	प्रातहुतैं मुष मांन दये, नहि रैंनि जगी अंषिया अनुरागी	२३८	४४
२९३	प्रानपियारेके मांन समेंसो, अली परी पायन यौं परसै है	२४१	४५
२९४	पांच भांतिके भाव हैं, सुनि बिभाव अनुभाव	३०५	५८
२९५	पांनकौ षांन विधांनकौ मंजन, भोगी भूले सुगंध लगायबौ	३४	८
२९६	पाय परैं मनुहारि करीहु, करि बात घनी बहु भांयिन भाष्यौ	९९	२१
२९७	पारैं परोसकैं आगि लगै, करैं लोगु बुझावनकौं उधटैंसी	११९	२५
९८	पावसकी मधि रैंनि समैं, पग-पायल पन्नगकी उरझागी	३८६	७४
२९९	प्यारी पिय बृजचंद, सकल आनंदकंद अलि	३०७	५८–५९
३००	पिय अपराधी जानिकैं, रिस करि रूषी होइ	८२	१८
३०१	पियकी सषि तियसौं कहत, तियकी पियसौं आय	२०६	३९
३०२	पियकैं मांन मनावतैं, करैं अधिक ही मांन	९८	२१
३०३	पिय जाके गुनसौं बध्यौ, निसदिन रहै अधान	८८	१९
३०४	पियकौं देत उराहनै, कछू बिग्यतैं आय	६७	१५
३०५	पिय प्यारी दरसै जहां, चितकी लागै लाग	२४९	४७
३०६	पिय प्यारि लषि परसपर, अति अंडात जम्हात	२०९	४०
३०७	पिय-प्यारी लीला करत, अपनैं मनकैं भाव	३२२	६१
३०८	पिव प्यारी प्यारी पिया, देषैं अपनैं नैंन	२९	६
३०९	पियसौं अति सतराहकैं, बांनी कहत न धीर	६५	१४
३१०	प्रीतिके उपायनसौं, भांति भांति भायनसौं, सहज सुभायनके भायनकौं लै रहे	७	२
३११	पीरीसी नीरी दरस, वह बलि सहज-सुभाय	१७४	३३
३१२	प्रीति लगैं मिलिबो नहीं, प्रगटै ताकी पीर	२७५	५२
३१३	पुष्ट और ही कीजिए, होइ और की चाह	४१२	७८
३१४	पूजनकौं ब्रजदेबीकौं रैंनमैं, ध्याए सबै न रह्यो घरमैं है	१२५	२६
३१५	प्रोढा-धीरा-नायका, धीरज लयें अछेह	८०	१८

[फ

३१६	फलै बिपरीति बिचित्रहि आय	४९३	९२
३१७	फिरैं बहुबर्न दुहूंबर आय	५३०	९८
३१८	फूली लता नवपल्लवकी, सो जटा षुलि केसरि ज्यौं छबि छायौ	४१६	७९

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

क्रम संख्या	पंक्ति	छं. सं.	पृ. सं.
३१९	फूले सर कवल तडाग उडि मिले भौंर, ह्वै चहुं ओर चौर भौंर झुकि रहिये	२९९	५७

[व]

३२०	वंक-मयंक नषछदसौ षुलि, तारन-हारनकी छबि छांई	१८३	३५
३२१	बकी-वकीसी रहत निसि, थकी-थकीसी गेह	१६२	३१
३२२	बडी इक ठौर सु आधिक और	४९४	९२
३२३	बन-उपवन उद्दीप जे, चित-मति यौं दरसाय	२७२	५१
३२४	बनैं लघु पैं नहि ऊचके साज	४७१	८९
३२५	बहुत छंद कृत नागके, पिंगल मत बिसतारि	४२७	८१
३२६	बहुरि बिप्रलबधा अवर, अभिसारिका अनूप	८७	१९
३२७	बहू बर बर्न सु बृत्तिनुप्रास	५३१	९९
३२८	बात चलावत हौ तुम ज्यौं ज्यौं, वं बातनि ही मधि मांन मलं हैं	४०५	७७
३२९	बदन-चंद षुलि चंद्रिका, दृग-सरोज सम आज	४२१	७९
३३०	बाढ़ी निसा बहरैं छहरैं, ससि छूटि कलारस अमृत भीनौं	४२४	८०
३३१	बात गात मति जासमैं, अति विचित्र गति होय	२२	५
३३२	बनिकतैं बनिकैं सजनी, चलिए वनसौं मिलिए बलि जांही	१८६	३५
३३३	बारनकै भार लगि लागे लंक पार मिलि, चंदमुष-आंननपैं अलकैं सुहात हैं	३४४	६५
३३४	बाहरितैं घरमैं फिरि बाहरि, आतुरता अति ही उरझा (जा) गी	३२४	६१
३३५	ब्याधि-भुवन अैसैं मिली, नंदनंदनसौं जूटि	१२०	२५
३३६	बिछरत प्रीतम-प्रिया जहं, बिप्रलंभ-सिंगार	३०१	५८
३३७	बिबधि-कलांन केलि कीनी रसभीनी अति रंग-रस-सनी सब रजनी बितैं रही	६२	१३–१४
३३८	बिभांवन काज रुकै न सबंध	४८५	९१
३३९	बिभावन कारण तैं नहि काज	४८६	९१
३४०	बिभावन कारिज कारन छांडि	४८४	९१
३४१	बिनां भांवती बात लषि, दुलषै तिनकौं आय	२०३	३८
३४२	बिरह-बिकल अकुलाइकैं, लिषि पठवत कछु बात	२९५	५६
३४३	बिसेष-उकत्ति अलंकृत गाय	४८७	९१
३४४	बिसेष सुसुक्षिमतैं बहु सिद्धि	४९६	९३
३४५	बीर बीच उतसाह है, भयहि भयानक बास	३११	५९

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

क्रम संख्या	पंक्ति	छ. सं.	पृ. सं.
३४६	बीर रौद्र अद्भुत समह, होत जु ए रस आंनि	४०१	७६
३४७	बैठी हुती गुरु लोगन मैं, भये सांझ लिये उपमान तटी हैं	३३८	६४
३४८	बैठे तहां गुरु-लोग समाजमैं, सोहैं बनाव बनाय रषेसे	३३६	६४
३४६	बैठे हुते गुरु-लोगनमैं, नंदनंदन अंग घनैं छबि छाये	३५०	६६
३५०	बोधक बहुरि बिलास भनि, बिछत्यादिक हाव	३१८	६०
३५१	बोलिबौं बोलनिकौ अवलोकिबौ, तीषे मनौजके मंत्रसे राषैं	७३	१६
३५२	बोलैं कछु उठि बोलै कछू, दिल षोलै नहीं गिनैं धाम न छांहीं	२७१	५१
३५३	बोलै न डोलै न षेलै हसै, बनि बैठि लिये अंग-अंग उजेरें	३६२	७५
३५४	ब्रत्यौकति गूढ सलेष प्रकास	५२२	६७
३५५	बृथा उपमां उपमेय सु सार	४५१	८५
३५६	बृंदावनचंदकी सबिसौं मनमोहित कैं केते अभिलाषके हुलास ह्वै लसै रही	३६	६

[भ]

३५७	भ्रमैं तहं ग्यांनहु सो भ्रम होइ	४५६	८६
३५८	भले फलतैं ह्वै बुरौ बिषमाय	४६१	६२
३५६	भलेतैं भलौ सु बिनौकति गाव	४७६	८६
३६०	भसम धूम अंवर घटा, छटा धनष राकेस	४१६	७६
३६१	भादवकी भय भारी निसा, न गिनी जलधार बिहार सनौषी	३८७	७४
३६२	भावनके संगसौं जहां, उपजत सांत्विक भाव	३३७	६३
३६३	भूरे त्यों केस कुबासकी भूरिसौं, लोम भरे तन सूल सरे हैं	२७	६
३६४	भूषन-जोति मनौं षुलिकैं, किरनैं कढ़िकै अंगसौं सरसे हैं	१४५	२६
३६५	भोरपति संगते ससंक अंक जोर आली, बैठी सषियन साथ छबि साथ टूटी हैं	३६२	६६
३६६	भौंरन-भौंरन साथ लये, लयें कोकिल साथ लसैं चतुराईं	१४३	२८

[म]

३६७	मंडि सुधानिकी धार चकोरनि, भौंरनि नेहलता बरसावै	२६२	४६–५०
३६८	मंद भयौ पियकौ मुषचंदसौ, चंद्रिका हौंन चली सरनैं है	२२६	४२
३६६	मंद हास्य जानहुं प्रथम, अरु दूजौ कल-हांस्य	३६०	६८
३७०	मंदिर आपनैं आलिन साथ सौ, बैठी हुती अति रातिकी जागी	३५१	६६
३७१	मत्त मकरधुजमैं किये, नरनारी सब जीति	४२५	८०

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

क्रम संख्या	पंक्ति	छं. सं.	पृ. सं.
३७२	मदन-मोदकर-बदन सदन बेताल-जाल व्रत	२	१
३७३	मध्या आरूढ़-जोबनां, अैसें बरनि विसेष	५४	१२
३७४	मध्या आरूढ़-जोबनां, प्रगलभबचना नारि	५३	१२
३७५	महा मोहतें कांमकी, अति आतुरता पाइ	२४०	४५
३७६	मांथै मोरपछिकौ मुकटसो मयंक छवि, दत्रि गए तिमर बियोग दुष-वंद से	३४५	६५
३७७	मांन तजै जातें सुतजि, औरै परसंग आंनि	२४३	४५
३७८	मांन पूर्ब-अनुराग पुनि, करुनां बहुरि परवास	३०२	५८
३७९	मिथ्या धिव सेवत चंचल रीति	५०६	६५
३८०	मांनसकौं पहिचांनत नांहि, सबै रसरीतिकी रौस थकी है	२०५	३६
३८१	मिलन-थांन एही कहूँ, मिलें इहांही ढंग	१०७	२३
३८२	मिलन रावरै काज हरि, बाढ़त नेह अछेह	१६६	३२
३८३	मिलन-लगन लागी लगै, मनमैं रही उमाहि	१८२	३४
३८४	मिलि दंपतिकी प्रीति जो, प्रकटत अषिया आय	३०४	५८
३८५	मिलि मुहुही दंपति रहैं, दिन प्रति औरै रीति	४०६	७७
३८६	मिली जाय भयकै समैं, यौं ब्रजचंद सुहाय	११८	२४
३८७	मिली ध्यायके भौंनमैं, नंदनंदनसौं धाय	१०८	२३
३८८	मिली भुवन सूनै मही, उपमां रही सुहाय	११६	२४
३८९	मिली रहै गतिमति जहां, जातिहूं पहलै जाइ	२५४	४८
३९०	मिलै बिन देषै बलि प्रीतिरीति अैसी बिधि, चंद्रिका चमेली चारु चौकनि निसार है	१८७	३५–३६
३९१	मीठी बांनी मुषि लयें, हियें कपट पहचाँनि	१५	४
३९२	मुगधा मध्या जानियें, तीजी प्रोढा नारि	४१	६
३९३	मुष-मयंक-परकासकी, मिलि है जौति मयंक	१६८	३२
३९४	मेरो कह्यौ सुन्यौ सो हितकौ, मिलि लालसौं मांनि कह्यौ सगलौ है	१९८	३७
३९५	मैं जु कह्यो नंदनंदनसौं, मिलिवेके सुभावकी रीति भनी लौं	२०२	३८
३९६	मोतिन-माल नक्षित्र मिलि, अंग-अंग छबि-छंद	१६४	३२
३९७	मोतिन-माल नषित्रन फैलिकै, चंद्रिका-हासि ज्यौं छबि छाये	१३३	२७
३९८	मोतिन-हार नछित्रन फैलि, वियोगनि त्यौं तमकौं करसे हैं	३८१	७२
३९९	मोद भयौ सजनीगनमैं, चहुं कौद भरयौ रस-सायर तैसें	१९९	३८
४००	मोर ज्यौं हेरत मेघनिकौं, हिय हंस ज्यौं सागरकौं मन टेरें	१९२	३६
४०१	मोरनके छंद छूटि जटी, षुलि जावक भालमें लोचन लाये	८१	१८
४०२	मोहन आजु कछू बलि राधेसौं, मानकी रीति हियें उघटी हैं	२२०	४१

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

क्रम संख्या	पंक्ति	छं. सं.	पृ सं.
४०३	मोहनकौं दुष दीनौं सदाही, इहीं दुषदायक दूनी दुषाई	२९२	५५
	[य]		
४०४	यकु तौ पद्मनि कहत हैं, दुतिय चित्रनी होइ	१९	५
४०५	'यनि भायनि' मिलि होत है, रस-सिंगार अनियास	३१६	६०
४०६	या डरसौं तुमसौं छलसौं, करि बातें अनेक बनाय अथागें	१७५	३३
४०७	या प्रवासमें होत हैं, भय-भ्रम निद्रा आंनि	२८७	५५
४०८	यौंही बरसांवन सु आयै बर-सांवनकौ, नेह सर सांवन बिरह तन तैसौ है	३००	५७
	[र]		
४०९	रति थाई सिंगारमें, रहत हासिमें हासि	३१०	५९
४१०	रत्नावलि नांमके नाम अनंत	५१४	९६
४११	रस बिभाव अनुभाव अरु, सब संचारी भाव	५	२
४१२	रस सिंगार बरन्यौं सबै, अब बरनत रस ठौर	३५८	६८
४१३	रस सो ब्रह्म स्वरूप है, कहत सबै कबिराव	३०३	५८
४१४	रातिके जागतही बृजचंद, निहारत आरसी ज्यौं सरसी है	२३६	४४
४१५	रातिजगें ब्रजमें ब्रजदेवीकें, आय सबै छितिकी धन जूंटी	१२९	२६
४१६	रामजनी सन्यासनी अवर सुनारी सुनांम	१३१	२७
४१७	राधिके रोसमें आजु लषी, करें मोतिनकी मिलि माल बिछूटीं	२२२	४२
४१८	राधेकें पाय परें हरि त्यौं, मुष ऊपर केस परें बसरी हैं	२४२	४५
४१९	राधेसौं आजु कछु नंदनंदन, भारी हिये मन मांन भरचौ है	२२८	४३
४२०	रावरी बातें सुभायकें भायसौं, चाहिकें भाय कहूं जी चढ़ेगी	१६७	३२
४२१	रावरी रौंस परी यह कौंन, कहौ सुषमें कह रोस रढ़ावै	२०१	३८
४२२	रितु बसंत ग्रीषम अवर, पावस सरद सुजांनि	४१४	७८
४२३	रैंनिकी जागी सो प्रात जगें, षुले हारसौं अंगपै ओप बिजैठो	७९	१७
४२४	रैंनिकी लागी कपोलनि पीक, हिये अनुराग उतै उघरचौ है	३९६	७५–७६
४२५	रैंनि दिनां अभिलाषभरी, नहि रोकी रुकी पलकी पंषियांसौं	४०२	७६
४२६	रैंनि समें सलिता मधिमें, नंदनंदन राधे लसें यौं तिरे हैं	११५	२४
४२७	रूप-सुधा-रस सरससौं, बरन हंस मिलि संग	४	२
	[ल]		
४२८	लज्जा-प्राय-रता तिया, कहिए इहि विधि आंनि	४९	११
४२९	लषें ही करै सजनी बस बाल	५२४	९८
४३०	लसत साथ निसचारमें, नंदनंदनसौं आय	१२४	२५
४३१	लसें दृगसे कंज कंजसे नैंन	४४८	८४–८५

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

क्रम संख्या	पंक्ति	छं. सं.	पृ. सं.
४३२	लसै विपन-घन-सघनमें, मिली चंद-व्रज चाय	११२	२४
४३३	लघु-मध्यम गुरु मानिये, प्रिय प्रति तिय अधिकाय	२१६	४१
४३४	लाई हौं हित रावरें, तन-उपमांसौं जूटि	१३४	२७
४३५	लाष-लाष भांति अभिलाषनि गुरावै सोहैं हासी चंद्रहासैं गाढ़ बाढ़ अभिलाष्यौ है	३५३	६७
४३६	लागि रही ताली चढ़ी भृकुटी बिसाल अलकनि, जटाजाल छूटी छबिता अछेह है	२७६	५३
४३७	लागी भलें बूजचंदके नैंननि, या छबि ता लगि नैंननि भीनी	४८	११
४३८	लागें इतै न झुकै उतहीं, चित लागें नहीं जैसे वेषे हमैसे	६७	२१
४३९	लागें न क्यौंहूं न बातनमें, मंन आंगन पौरिन मंदिर मांहीं	२६८	५१
४४०	लाल तिहारें दरस उन, लगी दृगनि जक जाफ	१७८	३४
४४१	लाल तिहारे मिलनकी, वह बलि करत उमाह	१४६	२६
४४२	लाल तिहारे मिलनकौं, वह बलि चित बरजोर	१५०	२६
४४३	लाल यती बिनती सुनिये, चलिये वेही भौंनकौं प्रीतिकी रीतें	२३६	४४–४५
४४४	ल्यावत आजु तिहारे मिलापकौं, गांवही तें ओर राह गही है	१७१	३३
४४५	लिषन सकत तातें उतही पठाई आयौ ह्वैहै रितुराज नेहआंचतें न आंचियौ	२६६	५६
४४६	लुकोकृत्तिलकृति लोंक बिबादि	५२५	६८
४४७	लोक-लाज निदरी सबें, प्रगट तरफरी प्रीति	१७६	३३
४४८	लोचन बचननितें कछू, उदै होत मन मोह	३५६	६८
४४९	लोचन वै बरही जनके, अति रीझि रहें छकिसे छबि सौंहैं	८५	१८

[व

४५०	वह बलि कीयौं मिलनकौं, चितवृति चष झुकि झौर	१५८	३१
४५१	वहि आलीकौं मिलनकी, चाह रहत चित पास	१५४	३०
४५२	वा गुनकी अगरी-अगरी, सगरी लयें रीति सुग्रंथनि गांही	१६०	३६
४५३	वा तियकें बिछुरें बिछुरी, सु कियें उपचारनहूं फिरि आगी	२६३	५६
४५४	वामें कलंक इहें निकलंक, हें निसिद्यौस निसा इह जो है	३७७	७२
४५५	विषाद सु ओरतें ओर उपाय	५११	६५

[श्रु]

४५६	श्रुंडादंड उदंड अति, चंदकला षुलि साथ	१	१

[ष]

४५७	षोड़स पंद्रह पर बिरति, चरन अंक यकतीस	४३७	८२

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

क्रम संख्या	पंक्ति	छं. सं.	पृ. सं.

[स]

४५८	सकोमला बर्न प्रकास प्रसाद	५३३	९९
४५९	सछ्या बिनय मनावनौं, करै सिंगार मिलाइ	१८३	३५
४६०	सजि सिंगार जो मिलनकौं, जावै पाय चलाय	१०२	२२
४६१	सजें सिंगार दुहूंनके, सोरह बिबधि बनाइ	१९४	३७
४६२	सब जगमें सब जननकौं, सुषदायक सुभनंत	४२३	८०
४६३	सबतें चित्त उदास ह्वै, एक मांझ ह्वै लीन	३९१	७५
४६४	सगन आठ कीजे जहां, जौइस बरन बनात	४३३	८२
४६५	सतरहसें चौरासिया, नवमी तिथि ससिबार	५३६	१००
४६६	समांन न और समांन न जोइ	४५३	८५
४६७	समाधिक कारन दूसरै काजु	५०४	९४
४६८	समा पुनि काजमें कारन पाय	४९२	९२
४६९	समासउकत्ति तहां गुन श्लेष	४७७	९०
४७०	समुच्चय एकमै होंहि अनेक	५०३	९४
४७१	सरदके चन्द्रमासौ राजत बदन-चंद छूटे केसपास भारे लंक बिसतारे हैं	२५	६
४७२	सयोकति जोगकौ कीजे अजोग	४६३	८७
४७३	सहौकति सो इक साथहि जांन	४७५	८९
४७४	(सह्यौ) कति अतिसै उप्पम होइ	४६१	८७
४७५	सांम दांन भेद रु प्रनत, और उपेछा होइ	२३०	४३
४७६	सांझहीसौं ब्रजबालनसौं, कथा-जालनमें रजनी दै अहूटी	१०९	२३
४७७	साची कहौ जाकी मांनत सौंहसो, कौंनकै नेह रहे सरसे हौ	८३	१८
४७८	सागर मांझ तरंग ज्यौं, सबै रसनिमै होत	३१४	५९
४७९	साजें सिंगार सषीनकी संगति, देषी हुती वृषभांनदुलारी	३३६	६३
४८०	सात भगन गुरु होइ जह, रचौ मात बत्तीस	४३१	८१
४८१	साथ सषीनमें षेलिबे कौंन, मिलें मन भूलि रचै नहि कोई	३२६	६१–६२
४८२	सार सबै जगके सुषदायक, लायक है जदुराय अकेले	३५७	६८
४८३	सालत रसाल मालतीकी माल लालन कटीली बनलतांनकै लालच लटे रहौ	५७	१२–१३
४८४	सासके लंगर टूटतसी, बृजनारि त्यौं छूटि मिल्यौ अभिलाषें	१६५	३२
४८५	स्यामबरन दुति देहकी, अति-भयमय दरसात	३८२	७३
४८६	स्यांम लसें घन-अंबरसे, अलकें धुरवांनिहूंसी अवधारे	१३७	२७
४८७	स्यांम-सरीर लसै पट-पीत, मनौं घन-दामनि रूप भयौ है	१९६	३७
४८८	सीष देत कछु समुझिकै, दंपति हिय सुष पाय	१८५	३५

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

क्रम संख्या	पंक्ति	छं. सं.	पृ. सं.
४८९	सीस नछित्रन मांग बनाय, दिये ससि टीकासो भाल जताईं	२८९	५५
४९०	सु औरतें कारज और व्याघात	४९७	९३
४९१	सुष उपाइ छूटत सबै, उर आकुलता मांनि	२८१	५४
४९२	सुष दुष होत समांन सह, भूलि जात सुधि अंग	२७८	५३
४९३	सुन्दर सकल कलानिपुन, अति प्रवीन सुख साज	९	३
४९४	सुधासौं छकीसी बकी नेहसौं जकीसी रहै, सोभासौं झषीसी उझकीसी नई नीकी हैं	२७३	५१–५२
४९५	सुनत अंग प्रति अंगकी, दरसै गति मति आइ	३२	७
४९६	सुनिद्रसनां इक या बिधि पाइ	४७३	८९
४९७	सुनियत धुंनि गंभीर कछु, प्रगटत दसन बिलास	३६४	६९
४९८	सुनौं चपलाति सु चंचल भांति	४६४	८७
४९९	सुनौं जु सुमर्ण अलंकृत भाय	४५५	८६
५००	सुप्रज सुता गुण और ही रुष्ष	४५८	८६
५०१	सुप्रोढ़ उकत्ति जु आधिक लेह	५०८	९५
५०२	सुब्याज निदालछिनां महि जोइ	४८२	९०
५०३	सुभाउ-उकत्ति सुं जानि सुभाव	५२५	९८
५०४	सुमाधुर ह्वै उपनागरि सोइ	५३२	९९
५०५	सुमीलिति ह्वै समसं सम जाय	५१७	९६
५०६	सुहागनि और दुहागनि गाव	४७२	८९
५०७	सु है बिधि अर्थहि साधिए फेरि	५२८	९८
५०८	सेहरकैं जुत जे हरकैं, मिलि जे बलि ये हरिकैं जिय जी है	४१३	७८
५०९	सैनहिसौं समुझैं जहां, प्रकट करें नहि प्रीति	३४९	६६
५१०	सोग मांझ बरनें जहां, भोग बिबधि बिधि बांनि	४०८	७७
५११	सो बिचित्र कहि बिभ्रमां, जाकी अैसी रीति	७२	१६
५१२	सोभा-सिंधु पारुनमें माधुरी अपारनमें, चंदके प्रहासन उजासन धिरत है	२५५	४८
५१३	सोहत सजल घन-फौज चहुं-वोर फैलि, मधुप-मतंग सम उर आवरेषिये	२४५	४६
५१४	सोहैं परजंक पर प्रीतमकें संग अैसे, राजै अंग-अंग प्रति आंनद हिल्योसौ है	७८	१७
५१५	सौंधे करि मंजन सुधारि केसपास धूप, अगर धुपाय गोरें आंग छबि छैरह्यो	१०३	२२
५१६	सौंधै करि मजन सुधारे केसपास भारे, धारे अंग-अंगन जलूसनके चांवडे	९३	२०

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

क्रम संख्या	पंक्ति	छं. सं.	पृ. सं.
५१७	सौंहें किये न हसें सरसें, तरसें जु तऊ अभिलाषनि ओरी	३२६	६२
५१८	स्रम अभिलाष सगर्ब मिलि, क्रोध हरषकौं जांनि	३३१	६२
५१६	स्वाधिनपतिका उतका, बासकसज्जा जांनि	८६	१६
५२०	स्वेद रोम सुरभंग कहि, कंप बिबर्नहि जांनि	३१३	५६

[ह]

५२१	हत्यौ कपि ईस का राघन रंक	५०५	६४
५२२	हेरि हसौ बसौ नेहसौं लाल जो, ल्याई हौं या कबितानसी गाई	११०	२३
५२३	हसैं सषीजन सकल जहं, रचि कोतिक करि रीति	३७०	७०
५२४	हारि जात बरनत सुजस, डारि जात जलजात	४३०	८१
५२५	हासके बिलासनतें चंद्रिका-उजासनतें, प्रभाके प्रकासनतें जेब जुनियतु है	६६	१४–१५
५२६	हास्य बीर करुनांरसहि, रचि बर-अक्षर प्रीति	३६७	७६
५२७	हित करिके नितप्रति रहै, निज नारिकैं सूल	११	३
५२८	हितू अहितैं पद एक प्रमांन	४६६	८८
५२६	हितू निज होइ कहै सिष बात	४७०	८८
५३०	हेला लीला मद बिहति, किलिंकिंचित बिब्बोक	३१७	६०
५३१	है मुष पंकज तेरो बषांनि	४७६	६०
५३२	हौं पचि हारी मनांवनकौं, न मनैं तऊ ज्यौं हठसौं सबही है	३४८	६६
५३३	हौं पठई कबकी मत लेंन, सौ तेरें कहा कितहू मन भायौ	२३२	४२
५३४	हौं पठई तुव लेंनकौं अब कित चहत बसीठ	१८०	३४

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

परिशिष्ट — २

सहायक ग्रन्थों की सूची

१. ईश्वरविलास—श्रीकृष्ण भट्ट, राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर।
२. कविप्रिया—केशव, नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ।
३. डिंगल कोश—श्री नारायणसिंह भाटी, राजस्थानी शोध-संस्थान, जोधपुर।
४. बूंदी राज्य का इतिहास—श्री जगदीशसिंह गेहलोत, हिन्दी साहित्य मंदिर, जोधपुर।
५. भारतीय काव्य-शास्त्र की भूमिका—डॉ० नगेन्द्र, ओरियेंटल बुक डिपो, दिल्ली।
६. रसिक प्रिया—केशव, वेंकटेश्वर प्रेस, बम्बई।
७. राजपूताने का इतिहास—डॉ० गौरीशंकर हीराचंद ओझा, वैदिक यन्त्रालय, अजमेर।
८. राजस्थान के हिन्दी साहित्यकार—हिन्दी साहित्य परिषद, जयपुर।
९. राजस्थान का पिंगल साहित्य—डॉ० मोतीलाल मेनारिया, हितैषी पुस्तक भण्डार, उदयपुर।
१०. राजस्थान में हिन्दी के हस्तलिखित ग्रन्थों की खोज—भाग १-४, राजस्थान विद्यापीठ शोध-संस्थान, उदयपुर।
११. राजस्थानी भाषा और साहित्य—डॉ० मोतीलाल मेनारिया, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, इलाहाबाद।
१२. राजस्थानी भाषा और साहित्य—डॉ० हीरालाल माहेश्वरी, आधुनिक पुस्तक भवन, ३०-३१, कलाकार स्ट्रीट, कलकत्ता ७।
१३. वंशभास्कर—सूर्यमल मिश्रण, प्रताप प्रेस, जोधपुर।
१४. वीर विनोद—कविराजा श्यामलदास, सरस्वती भवन, उदयपुर।
१५. हिन्दी साहित्य कोश—ज्ञान-मण्डल, बनारस।
१६. हिन्दी हस्तलिखित ग्रन्थों की खोज—नागरी प्रचारिणी सभा, काशी।
१७. हिंदी साहित्य का इतिहास—रामचन्द्र शुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी।
१८. हिन्दी साहित्य की भूमिका—हिन्दी ग्रंथ रत्नाकर कार्यालय, बम्बई।
१९. Annals and Antiquities of Rajasthan, James Tod., Routledge & Kegan Paul Ltd., London.

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

राजस्थान पुरातन ग्रन्थ-माला

प्रधान सम्पादक–पद्मश्री मुनि जिनविजय, पुरातत्त्वाचार्य

****

प्रकाशित ग्रन्थ

१. संस्कृत

१. **प्रमाणमंजरी,** तार्किकचूड़ामणि सर्वदेवाचार्यकृत, सम्पादक – मीमांसान्यायकेसरी पं० पट्टाभिरामशास्त्री, विद्यासागर । मूल्य–६.००

२. **यन्त्रराजरचना,** महाराजा सवाईजयसिंह-कारित । सम्पादक–स्व० पं० केदारनाथ ज्योतिर्विद्, जयपुर । मूल्य–१.७५

३. **महर्षिकुलवैभवम्,** स्व० पं० मधुसूदन ओझाप्रणीत भाग १, सम्पादक–म०म० पं० गिरिधरशर्मा चतुर्वेदी । मूल्य–१०.७५

४. **महर्षिकुलवैभवम्,** स्व० पं० मधुसूदन ओझा प्रणित भाग २, मूलमात्रम् सम्पादक–पं० श्री प्रद्युम्न ओझा । मूल्य–४.००

५. **तर्कसंग्रह,** अन्नंभट्टकृत, सम्पादक–डॉ. जितेन्द्र जेटली, एम.ए., पी-एच. डी., मूल्य–३.००

६. **कारकसंबंधोद्योत,** पं० रभसनन्दीकृत, सम्पादक–डॉ० हरिप्रसाद शास्त्री, एम. ए., पी-एच. डी. । मूल्य–१.७५

७. **वृत्तिदीपिका,** मौनिकृष्णभट्टकृत, सम्पादक–स्व.पं. पुरुषोत्तमशर्मा चतुर्वेदी, साहित्याचार्य । मूल्य–२.००

८. **शब्दरत्नप्रदीप,** अज्ञातकर्तृक, सम्पादक–डॉ. हरिप्रसाद शास्त्री, एम. ए., पी-एच. डी. । मूल्य–२.००

९. **कृष्णगीति,** कवि सोमनाथविरचित, सम्पादिका–डॉ. प्रियबाला शाह, एम. ए., पी-एच. डी., डी. लिट् । मूल्य–१.७५

१०. **नृत्तसंग्रह,** अज्ञातकर्तृक, सम्पादिका–डॉ. प्रियबाला शाह, एम. ए., पी-एच. डी., डी. लिट् । मूल्य–१.७५.

११. **शृङ्गारहारावली,** श्रीहर्षकविरचित, सम्पादिका–डॉ. प्रियबाला शाह, एम. ए., पी-एच.डी., डी.लिट् । मूल्य–२.७५

१२. **राजविनोद महाकाव्य,** महाकवि उदयराजप्रणीत, सम्पादक–पं० श्रीगोपालनारायण बहुरा, एम. ए., उपसञ्चालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर । मूल्य–२.२५

१३. **चक्रपाणिविजय महाकाव्य,** भट्टलक्ष्मीधरविरचित, सम्पादक–केशवराम काशीराम शास्त्री मूल्य–३.५०

१४. **नृत्यरत्नकोश (प्रथम भाग),** महाराणा कुम्भकर्णकृत, सम्पादक–प्रो. रसिकलाल छोटालाल पारिख तथा डॉ० प्रियबाला शाह, एम. ए., पी-एच. डी., डी. लिट् । मूल्य–३.७५

१५. **उक्तिरत्नाकर,** साधुसुन्दरगणिविरचित, सम्पादक–पुरातत्त्वाचार्य श्रीजिनविजयमुनि, सम्मान्य संचालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर । मूल्य–४.७५

१६. **दुर्गापुष्पाञ्जलि,** म०म० पं० दुर्गाप्रसादद्विवेदिकृत, सम्पादक–पं० श्रीगङ्गाधर द्विवेदी, साहित्याचार्य । मूल्य–४.२५

१७ **कर्णकुतूहल,** महाकवि भोलानाथविरचित, सम्पादक–पं० श्रीगोपालनारायण बहुरा, एम. ए., उप-संचालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर । इन्हीं कविवर की अपर कृति श्रीकृष्णलीलामृतसहित । मूल्य–१.५०

१८. **ईश्वरविलासमहाकाव्यम्,** कविकलानिधि श्रीकृष्णभट्टविरचित, सम्पादक–भट्ट श्रीमथुरानाथ शास्त्री, साहित्याचार्य, जयपुर । मूल्य–११.५

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

१९. रसदीपिका, कविविद्यारामप्रणीत, सम्पादक–पं० श्रीगोपालनारायण बहुरा, एम.ए. उपसंचालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर। मूल्य–२.००
२०. पद्यमुक्तावली, कविकलानिधि श्रीकृष्णभट्टविरचित, सम्पादक–भट्ट श्री मथुरानाथ शास्त्री, साहित्याचार्य। मूल्य–४.००
२१. काव्यप्रकाशसंकेत, भाग १ भट्टसोमेश्वरकृत, सम्पादक–श्रीरसिकलाल छो० पारीख, मूल्य–१२.००
२२. ,, भाग २ ,, ,, मूल्य–८.२५
२३. वस्तुरत्नकोष, अज्ञातकर्तृक, सम्पादक–डॉ० प्रियबाला शाह। मूल्य–४.००
२४. दशकण्ठवधम्, पं० दुर्गाप्रसादद्विवेदिकृत, सम्पादक–पं० श्रीगङ्गाधर द्विवेदी। मूल्य–४.००
२५. श्री भुवनेश्वरीमहास्तोत्रम्, सभाष्य, पृथ्वीधराचार्यविरचित, कवि पद्मनाभकृत, भाष्य-सहित पूजापञ्चाङ्गादिसंवलित। सम्पादक–पं श्रीगोपालनारायण बहुरा। मूल्य–३.७५
२६. रत्नपरीक्षादि सप्त ग्रन्थ संग्रह, ठक्कुर फेरू विरचित, संशोधक–पद्म श्री मुनि जिन-विजयजी। मूल्य–९.२५

राजस्थानी और हिन्दी

२७. कान्हडदेप्रबन्ध, महाकवि पद्मनाभविरचित, सम्पादक–प्रो० के.बी. व्यास, एम. ए.,। मूल्य–१२.२५
२८. क्यांमखां-रासा, कविवर जान-रचित, सम्पादक–डॉ. दशरथ शर्मा और श्रीअगरचन्द नाहटा। मूल्य–४.७५
२९. लावा-रासा, चारण कविया गोपालदानविरचित, सम्पादक–श्रीमहतावचन्दखारैड़। मूल्य–३.७५
३०. वांकीदासरी ख्यात, कविवर वांकीदासरचित, सम्पादक–श्रीनरोत्तमदास स्वामी, एम. ए.। मूल्य–५.५०
३१. राजस्थानी साहित्यसंग्रह, भाग १, सम्पादक–श्रीनरोत्तम स्वामी, एम.ए.। मूल्य–२.२५
३२. राजस्थानी साहित्यसंग्रह, भाग २, सम्पादक–श्रीपुरुषोत्तमलाल मेनारिया, एम. ए., साहित्यरत्न। मूल्य–२.५०
३३. कवीन्द्र कल्पलता, कवीन्द्राचार्य सरस्वतीविरचित, सम्पादिका–श्रीमती रानी लक्ष्मी-कुमारी चूंडावत। मूल्य–२.००
३४. जुगलविलासा, महाराज पृथ्वीसिंहकृत, सम्पादिका–श्रीमती रानी लक्ष्मीकुमारी चूंडावत। मूल्य–१.७५
३५. भगतमाळ, ब्रह्मदासजी चारणकृत, सम्पादक–श्री उदैराजजी उज्ज्वल। मूल्य–१.७५
३६. राजस्थान पुरातत्त्व मन्दिरके हस्तलिखित ग्रंथोंकी सूची, भाग १। मूल्य–७.५०
३७. राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठानके हस्तलिखित ग्रन्थोंकी सूची, भाग २। मूल्य–१२.००
३८. मुंहता नैणसीरी ख्यात, भाग १, मुंहता नैणसीकृत, सम्पादक–श्रीबद्रीप्रसाद साकरिया। मूल्य–८.५०
३९. रघुवरजसप्रकास, किसनाजीआढाकृत, सम्पादक–श्री सीताराम लाळस। मूल्य–८.२५
४० राजस्थानी हस्तलिखित ग्रन्थ सूची, भाग २ सम्पादक–मुनि श्रीजिनविजय। मूल्य–४.५०
४१. राजस्थानी हस्तलिखित ग्रन्थों की सूची, भाग २—सम्पादक–श्री पुरुषोत्तमलाल मेना-रिया, एम.ए., साहित्यरत्न मूल्य–२.७५
४२. वीरवांण, ढाढ़ी बादरकृत, सम्पादिका–श्रीमती रानी लक्ष्मीकुमारी चूंडावत। मूल्य–४.५०
४३. स्व० पुरोहित हरिनारायणजी विद्याभूषण ग्रन्थ संग्रह सूची, सम्पादक–श्रीगोपालनारायण बहुरा, एम. ए. और श्रीलक्ष्मीनारायण गोस्वामी दीक्षित। मूल्य–६.२५
४४. सूरजप्रकास, भाग १–कविया करणीदानजी कृत, सम्पादक–श्री सीताराम लाळस। मूल्य–८.००
४५. नेहतरंग, रावराजा बुधसिंह कृत—सम्पादक–श्री रामप्रसाद दाधीच एम.ए. मूल्य–४.००

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

प्रेसों में छप रहे ग्रंथ

संस्कृत

१. शकुनप्रदीप, लावण्यशर्मरचित, सम्पादक–मुनि श्रीजिनविजय ।
२. त्रिपुराभारतीलघुस्तव, धर्माचार्यप्रणीत, सम्पादक–मुनि श्रीजिनविजय।
३. करुणामृतप्रपा, भट्ट सोमेश्वरविनिर्मित, सम्पा०–मुनि श्रीजिनविजय ।
४. बालशिक्षाव्याकरण, ठक्कुर संग्रामसिंहरचित, सम्पा०–मुनि श्रीजिनविजय ।
५. पदार्थरत्नमंजूषा, पं० कृष्णमिश्रविरचित, सम्पा०–मुनि श्रीजिनविजय ।
६. वसन्तविलास फागु, अज्ञातकर्तृक सम्पा०–श्री एम. सी. मोदी ।
७. नन्दोपाख्यान, अज्ञातकर्तृक, सम्पा०–श्री बी.जे. सांडेसरा ।
८. चान्द्रव्याकरण, आचार्य चन्द्रगोमिविरचित, सम्पा०–श्री बी. डी. दोशी ।
९. वृत्तजातिसमुच्चय, कविविरहाङ्करचित, सम्पा०–श्री एच. डी. वेलणकर ।
१०. कविदर्पण, अज्ञातकर्तृक ,, ,, ,,
११. स्वयंभूछन्द, कविस्वयंभूरचित ,, ,, ,,
१२. प्राकृतानन्द, रघुनाथकविरचित, सम्पा०–मुनि श्री जिनविजय ।
१३. कविकौस्तुभ, पं० रघुनाथरचित, ,, श्री एम. एन. गोरी ।
१४. एकाक्षर नाममाला—सम्पादक–मुनि श्री रमणीकविजयजी ।
१५. नृत्यरत्नकोश, भाग २, महाराणा कुंभकर्णप्रणीत, सम्पा०–डॉ. प्रियबाला शाह
१६. इन्द्रप्रस्थप्रबन्ध, सम्पा०–डॉ. श्रीदशरथ शर्मा ।
१७. हमीरमहाकाव्यम्, नयचन्द्रसूरिकृत, सम्पा०–मुनि श्रीजिनविजयजी ।
१८. स्थूलिभद्रकाकादि, सम्पा०–डॉ० आत्माराम जाजोदिया ।
१९. वासवदत्ता, सुबन्धुकृत, सम्पा०–डॉ० जयदेव मोहनलाल शुक्ल ।
२०. घटखर्परादि पंचलघुकाव्यानि ,, पं० अमृतलाल मोहनलाल ।
२१. भुवनदीपक, यावनाचार्यकृत, सम्पा०–पं० श्रीपुरुषोत्तमभट्ट ।
२२. वृत्तमुक्तावली, श्रीकृष्ण भट्ट गुम्फित, सम्पा० पं० श्री मथुरानाथ भट्ट

राजस्थानी और हिन्दी

२३. मुंहता नैणसीरी ख्यात, भाग २, मुंहता नैणसीकृत, सम्पा०–श्रीबद्रीप्रसाद साकरिया ।
२४. गोरा बादल पदमिणी चऊपई कवि हेमरतनकृत ,, श्रीउदयसिंह भटनागर ।
२५. राजस्थानमें संस्कृत साहित्यकी खोज, एस. आर. भाण्डारकर, हिन्दीअनुवादक–श्रीब्रह्मदत्त त्रिवेदी ।
२६. राठौडांरी वंशावली, सम्पा०–मुनि श्रीजिनविजय ।
२७. सचित्र राजस्थानी भाषासाहित्यग्रन्थसूची, सम्पादक–मुनिश्रीजिनविजय ।
२८. मीरां-बृहत्-पदावली, स्व० पुरोहित हरिनारायणजी विद्याभूषण द्वारा संकलित, सम्पा०–मुनि श्रीजिनविजय ।
२९. राजस्थानी साहित्यसंग्रह, भाग ३, संपादक–श्रीलक्ष्मीनारायण गोस्वामी ।
३०. सूरजप्रकास, भाग २, कविया करणीदानकृत, सम्पा०–श्रीसीताराम लाळस ।
३१. सूरजप्रकाश, भाग ३, कविया करणीदानकृत सम्पा०–श्रीसीताराम लाळस ।
३२. मत्स्य प्रदेश की हिन्दी-साहित्य को देन—डॉ० मोतीलाल गुप्त ।
३३. रुक्मिणी-हरण, सांयांजी झूला कृत, सम्पा० श्री पुरुषोत्तमलाल मेनारिया ।

विशेष–पुस्तक-विक्रेताओं को २५% कमीशन दिया जाता है ।

P. P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रकाशित ग्रन्थ

संस्कृतभाषाग्रन्थ–१. प्रमाणमंजरी–तार्किकचूड़ामणि सर्वदेवाचार्य, मूल्य ६.००। २. यन्त्रराज रचना–महाराजा सवाई जयसिंह, मूल्य १.७५। ३. महर्षिकुलवैभवम्–स्व० श्री मधुसूदन ओझा, मूल्य १०.७५। ४. तर्क संग्रह–पं० क्षमाकल्याण, मूल्य ३.०००। ५. कारकसम्बन्धोद्योत–पं० रभसनन्दि, मूल्य १.७५। ६. वृत्तिदीपिका–पं० मौनिकृष्ण मूल्य २.००। ७. शब्दरत्नप्रदीप, मूल्य २.००। ८. कृष्णगीति–कवि सोमनाथ, मूल्य १ ७५ ९. शृङ्गारहारावली–हर्षकवि, मूल्य २.७५। १०. चक्रपाणिविजयमहाकाव्य–पं० लक्ष्मीधरभट्ट, मूल्य ३.५०। ११. राजविनोद–कवि उदयराज, मूल्य २.२५। १२. नृत्तसंग्रह, मूल्य १.७५। १३. नृत्यरत्नकोश, प्रथम भाग–महाराणा कुम्भकर्ण, मूल्य ३.७५। १४. उक्तिरत्नाकर–पं० साधुसुन्दरगणि, मूल्य ४.७५। १५ दुर्गापुष्पाञ्जलि–पं० दुर्गाप्रसाद द्विवेदी, मूल्य ४.२५। १६. कर्णकुतूहल तथा कृष्णलीलामृत–भोलानाथ, मूल्य १.५०। १७. ईश्वरविलास महाकाव्य–श्रीकृष्ण भट्ट, मूल्य ११.५०। १८. पद्यमुक्तावली–कविकलानिधि श्रीकृष्णभट्ट, मूल्य ४ ००। १९. रसदीपिका–विद्याराम भट्ट, मूल्य २.००। २०. काव्यप्रकाशसङ्केत-भट्ट सोमेश्वर, भाग १, मूल्य १२.००। २१. भाग २, मूल्य ८.२५। २२. वस्तुरत्नकोश, अज्ञातकर्तृक, मूल्य ४.००। २३ दशकण्ठवधम्–पं. दुर्गाप्रसाद द्विवेदी। मूल्य ४.००। २४. श्री भुवनेश्वरीमहास्तोत्रम् सभाष्य, पृथ्वीधराचार्य विरचित, कवि पद्मनाभकृत भाष्य सहित, मूल्य ३.७५। २५. रत्नपरीक्षादि सप्त ग्रन्थ-संग्रह, ठक्कुर फेरू, मूल्य ९.२५

राजस्थानी और हिन्दी भाषा ग्रन्थ–१. कान्हडदे प्रबन्ध–कवि पद्मनाभ, मूल्य १२.२५। २. क्यामखांरासा–कवि जान, मूल्य ४.७५। ३. लावारासा–गोपालदान, मूल्य ३.७५। ४. वांकीदासरी ख्यात–महाकवि वांकीदास, मूल्य ५.५०। ५. राजस्थानी साहित्य संग्रह, भाग १, मूल्य २.२५। ६. राजस्थानी साहित्य संग्रह भाग २, मूल्य २ ७५। ७. जुगलविलास–कवि पीथल, मूल्य १.७५। ८. कवीन्द्र कल्पलता–कवीन्द्राचार्य, मूल्य २.००। ९. भगतमाळ–चारण ब्रह्मदासजी, मूल्य १.७५। १०. राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिरके हस्तलिखित ग्रन्थोंकी सूची, भाग १, मूल्य ७.५०। ११. राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान के हस्तलिखित ग्रन्थों की सूची, भाग २, मूल्य १२.००। १२. मुंहता नैणसीरी ख्यात, भाग १, मूल्य ८.५० न.प.। १३. रघुवरजसप्रकास, किसनाजी आढ़ा, मूल्य ८.२५ न पै.। १४. राजस्थानी हस्तलिखित ग्रन्थ सूची, भाग १, मूल्य ४.५०। १५. राजस्थानी हस्तलिखित ग्रन्थ सूची भाग २, मूल्य २.७५। १६. वीरवांण, ढाढी बादर कृत, मूल्य ४.५०। १७. विद्याभूषण ग्रन्थ संग्रह सूची मूल्य ६.२५। १८. सूरजप्रकास भाग १, कविया करणीदानजी, मूल्य ८.००। १९. नेहतरंग, रावराजा बुधसिंह, मूल्य ४.००।

प्रेसोंमें छप रहे ग्रन्थ

संस्कृत-भाषा-ग्रन्थ–१. त्रिपुराभारतीलघुस्तव–लघुपंडित। २. शकुनप्रदीप–लावण्यशर्मा। ३. करुणामृतप्रपा–ठक्कुर सोमेश्वर। ४. बालशिक्षा व्याकरण–ठक्कुर संग्रामसिंह ५. पदार्थरत्नमञ्जूषा–पं० कृष्णमिश्र। ६. वसन्त-विलास फागु। ७. नृत्यरत्नकोश भाग २। ८. नन्दोपाख्यान। ९. चान्द्रव्याकरण। १०. स्वयंभूछंद–स्वयंभू कवि। ११. प्राकृतानंद–कवि रघुनाथ। १२. मुग्धावबोध आदि औक्तिक-संग्रह। १३. कविकौस्तुभ–पं० रघुनाथ मनोहर। १४. वृत्तजातिसमुच्चय–कवि विरहाङ्क। १५. इन्द्रप्रस्थप्रबन्ध। १६. हम्मीरमहाकाव्यम्–नयचन्द्रसूरि। १७. एकाक्षर नाम माला। १८. स्थूलिभद्रकाकादि। १९. वासवदत्ता-सुबन्धु। २०. घटखर्परादि। २१. भुवनदीपक-यावनाचार्य। २२. वृत्तामुक्तावली श्रीकृष्णभट्ट।

राजस्थानी और हिन्दीभाषा ग्रन्थ–१. मुंहता नैणसीरी ख्यात, भाग २–मुंहता नैणसी। २. गोरावादल पदमिणी चऊपई–कवि हेमरतन। ३. चंद्रवंशावली–कवि मोतीराम। ४ सुजान संवत–कवि उदयराम। ५. राजस्थानी दूहा संग्रह। ६. राजस्थान में संस्कृत साहित्य की खोज-भण्डारकर। ७ राठोड़ांरी वंशावली। ८. सचित्र राजस्थानी भाषा-साहित्य ग्रंथ सूची। ९. मीरां बृहद पदावली १०. राजस्थानी साहित्य-संग्रह, भाग ३। ११. सूरजप्रकास भाग २, कविया करणीदान। १२. मत्स्य प्रदेश की हिन्दी साहित्य को देन, डॉ. मोतीलाल गुप्त। १३. रुखमणी हरण–सांयांजो झूला।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jin Gun Aaradhak Trust